सरस्वती

मणिका संस्कृत व्याकरण

(कक्षा-7)

लेखिका

सुनीता सचदेव

एम०ए० (संस्कृत), बी०एड्०

सेवानिवृत्त संस्कृत विभागाध्यक्षा

भटनागर इंटरनेशनल स्कूल

वसंत कुंज

न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्रा०लि०

नई दिल्ली-110002 (इंडिया)

NEW SARASWATI HOUSE

Second Floor, MGM Tower, 19 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi-110002 (India)
Phone : +91-11-43556600
Fax : +91-11-43556688
E-mail : delhi@saraswatihouse.com
Website : www.saraswatihouse.com
CIN : U22110DL2013PTC262320
Import-Export Licence No. 0513086293

Branches:

• Ahmedabad (079) 22160722 • Bengaluru (080) 26619880, 26676396
• Bhopal +91-7554003654 • Chennai (044) 28416531 • Dehradun 09837452852
• Guwahati (0361) 2457198 • Hyderabad (040) 42615566 • Jaipur (0141) 4006022
• Jalandhar (0181) 4642600, 4643600 • Kochi (0484) 4033369 • Kolkata (033) 40042314
• Lucknow (0522) 4062517 • Mumbai (022) 28737050, 28737090
• Nagpur +91-7066149006 • Patna (0612) 2275403 • Ranchi (0651) 2244654

Revised edition 2018
Reprinted 2019

ISBN: 978-93-5272-264-8

Published by: New Saraswati House (India) Pvt. Ltd.
19 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi-110002 (India)

The moral rights of the author has been asserted.

©New Saraswati House (India) Pvt. Ltd.

Publisher's Warranty: The Publisher warrants the customer for a period of 1 year from the date of purchase of the Book against any Printing/Binding defect or theft/loss of the book.
Terms and Conditions apply: For further details, please visit our website www.saraswatihouse.com or call us at our Customer Care (toll free) No.: +91-1800-2701-460
Jurisdiction: All disputes with respect to this publication shall be subject to the jurisdiction of the Courts, Tribunals and Forums of New Delhi, India Only.

All rights reserved under the Copyright Act. No part of this publication may be reproduced, transcribed, transmitted, stored in a retrieval system or translated into any language or computer, in any form or by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopy or otherwise without the prior permission of the copyright owner. Any person who does any unauthorised act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

Printed at: Nirja Publishers & Printers Private Limited, Rudrapur

Product Code: NSS2MSV070SKTAB17CBN

This book is meant for educational and learning purposes. The author(s) of the book has/have taken all reasonable care to ensure that the contents of the book do not violate any copyright or other intellectual property rights of any person in any manner whatsoever. In the event the author(s) has/have been unable to track any source and if any copyright has been inadvertently infringed, please notify the publisher in writing for any corrective action.

प्राक्कथन

प्यारे बच्चो! संस्कृत को समझने, बोलने तथा लिखने के लिए हमें व्याकरण के कुछ नियमों को समझना होगा। प्रस्तुत पुस्तक संप्रेषणात्मक पाठ्यक्रम पर आधारित है। आशा है इस पुस्तक के द्वारा संस्कृत भाषा को समझकर आप सब भी इस भाषा को बोल-चाल का माध्यम बना सकेंगे। इस पुस्तक में सरल भाषा में संस्कृत के नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार व्याकरण के नियमों को समझाया गया है। आशा है छात्र इस प्रयास से लाभान्वित होंगे। सभी विद्वदगण अपने अनुपम सुझाव देकर पुस्तक को और उपयोगी बनाने में हमारी सहायता करें।

मैं विशेष रूप से न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्रा०लि० की आभारी हूँ जो छात्रों की पाठ्य-सामग्री को अधिकाधिक रोचक तथा उपयोगी बनाने के लिए निरंतर प्रयास करते रहते हैं। मैं कृतज्ञ हूँ अपने पिता श्री मेहरचन्द जावल जी की जिनकी प्रेरणा ने मुझे संस्कृत विषय के साथ जोड़कर मेरे जीवन को संस्कृतमय बनाया ताकि मैं अपने देश के इस सुंदर व गरिमा से युक्त भाषा-ज्ञान को पा सकूँ तथा इसे आगे फैला भी सकूँ।

–सुनीता सचदेव

संस्कृत भाषा का परिचय

प्रिय बच्चो! संस्कृत शब्द का अर्थ है–संस्कार अर्थात् पवित्र की गई भाषा। नाम के ही अनुसार संसार में केवल संस्कृत भाषा ही दोषहीन व्याकरण वाली पवित्र भाषा है।

संस्कृत भाषा उस भारोपीय परिवार की भाषा है जिससे सभी भाषाओं का जन्म हुआ। भारत की अनेक भाषाओं का जन्म संस्कृत भाषा से ही हुआ।

प्राचीन काल में सभ्य समाज संस्कृत भाषा बोलता था तथा ग्रामीण समाज प्राकृत भाषा बोलता था जो कि संस्कृत का ही परिवर्तित रूप है। चारों वेद, उपनिषद्, पुराण इत्यादि इसी भाषा में लिखे गए। रामायण तथा महाभारत भी इसी भाषा में लिखे गए।

संस्कृत के अनेक कवियों में से कुछ प्रसिद्ध नाम हैं–कालिदास, भारवि, बाणभट्ट, माघ इत्यादि। आज भी अनेक विद्वान इस भाषा को अपनी रचनाओं से समृद्ध कर रहे हैं। सभी संस्कृत प्रेमियों का मन दक्षिण भारत में कर्नाटक के 'माटुर' और 'होसहल्ली' तथा मध्यप्रदेश के 'झिरी' गाँव जाने को तो करता ही होगा जहाँ के सभी लोग केवल संस्कृत भाषा ही बोलते हैं। संसार में संस्कृत के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसी भाषा नहीं है जो प्राचीनतम होते हुए भी वर्तमान युग में बोली जाती हो। आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार संसार की सभी भाषाओं में से 'संस्कृत भाषा' ही कम्प्यूटर के प्रयोग के लिए सर्वाधिक उपयुक्त भाषा है। कुछ विद्वानों के अनुसार संस्कृतभाषी छात्र संसार की किसी भी भाषा को अन्य लोगों से अधिक जल्दी व आसानी से सीख सकते हैं। संभवतः संस्कृत भाषा के इसी गुण को जानकर विदेशों में भी दो विद्यालयों में संस्कृत भाषा को अनिवार्य विषय बना दिया गया है। 'जर्मनी' में भी संस्कृत भाषा को सीखने वाले लोग दिन-प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं। हमें गर्व है कि 'संस्कृतभाषा' हमारे भारत देश की भाषा है।

पाठ्यक्रमः

1. **उच्चारणस्थानानि।**
2. **सन्धिः**–स्वर सन्धिः (दीर्घसन्धिः, गुणसन्धिः, वृद्धिसन्धिः, यण्सन्धिः, पूर्वरूपसन्धिः, प्रकृतिभाव सन्धिः)।
3. **शब्दरूप-प्रकरणम्**–(क) अकारान्त-पुंल्लिङ्गशब्दाः (देव, अज, राम); (ख) आकारान्त-स्त्रीलिङ्ग शब्दाः (लता, रमा, निशा); (ग) अकारान्त-नपुंसकलिङ्गशब्दाः (फल, पुस्तक, मित्र); (घ) सर्वनामशब्दाः (तत्, एतत्, किम्, यत् (त्रिषु लिंगेषु अस्मद्, युष्मद्); (ङ) इकारान्त पुंल्लिङ्गशब्दाः (कवि, पति); (च) ईकारान्त पुंल्लिङ्ग (सुधी); (छ) उकारान्त पुंल्लिङ्ग (गुरु); (ज) ऋकारान्त पुंल्लिङ्गशब्दाः (भ्रातृ, पितृ); (झ) इकारान्त स्त्रीलिङ्ग (मति), (ञ) ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग (नदी); (ट) उकारान्त स्त्रीलिङ्ग (धेनु); (ठ) ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग (वधू) ; (ड) ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग (मातृ); (ढ) इकारान्त नपुंसकलिङ्ग (वारि, अक्षि); (ण) उकारान्त नपुंसकलिङ्ग (मधु); (त) ऋकारान्त नपुंसकलिङ्ग (कर्तृ) इत्यादयः।
4. **धातुरूप-प्रकरणम्**–√पठ्, √गम्, √भू, √नम्, √चल्, √खाद्, √पा, √पत्, √स्मृ, √नृत्, √अस् इत्यादयः।
5. **वर्ण-विन्यासः संयोजनम् च।**
6. **पर्यायाः विपर्ययाः च।**
7. **समयलेखनम्** (घटिकां दृष्ट्वा)
8. **संख्याः**–एकतः शतपर्यन्तम्।
9. **कारकाः उपपदविभक्तयश्च** –विना, नाना, उभयतः, अभितः, परितः, सर्वतः, समया, निकषा, प्रति, सह, साकम्, सार्धम्, हीनः, अलम्, नमः, स्वाहा √रुच् सम्बद्धि-नियमाः सप्तमी विभक्ति पर्यन्तम्।
10. **प्रत्ययाः**–क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, तव्यत्, अनीयर्।
11. **अशुद्धि-संशोधनम्।**
12. **अपठितगद्यांशाः**–40-50 पदपरिमिताः एवं 80-100 पदपरिमिताः।
13. **पत्र-लेखनम्**–(1) शुल्कक्षमाहेतु प्रधानाध्यापकं प्रति; (2) आकस्मिकी अनुपस्थितिः हेतु अवकाशाय प्रधानाध्यापकं प्रति; (3) पुस्तकानि प्रेषणाय प्रकाशकं प्रति; (4) सद्वृत्ति-प्रमाणपत्राय आचार्यं प्रति; (5) अग्रजस्य विवाहार्थं अवकाश हेतु प्रधानाचार्यं प्रति; (6) विद्यालयस्य वार्षिकोत्सवं वर्णयन् पितरं प्रति; (7) दूरभाषयंत्रस्य निष्क्रियतां दूरीकर्तुम् दूरभाषकेन्द्रस्य निदेशकं प्रति; (8) जंतुशालाभ्रमणवर्णयन् स्वभगिनीं प्रति
14. **वार्त्तालापाः।**
15. **चित्रवर्णनम्**–मंजूषायाः सहायतया।

विषय-सूची

खण्ड 'क' (अनुप्रयुक्तं व्याकरणम्)

1. उच्चारणस्थानानि 9
2. वर्णविन्यासाः संयोगाः च 14
3. सन्धिः 18
4. शब्दरूप-प्रकरणम् 27
5. धातुरूप-प्रकरणम् 47
6. पर्यायाः एवम् विपर्ययाः 69
7. समयलेखनम् 75
8. संख्याः 80
9. कारकाः उपपदविभक्तयः च 87
10. प्रत्ययाः 96
11. अशुद्धिसंशोधनम् 104

खण्ड 'ख' (रचनात्मकं कार्यम्)

12. पत्रलेखनम् 109
13. वार्त्तालापः 115
14. चित्रवर्णनम् 118

खण्ड 'ग' (अपठित-अवबोधनम्)

15. गद्यांशाः 127
(40-50 पदपरिमिताः एवं 80-100 पदपरिमिताः)

- अभ्यास-प्रश्नपत्रम्-1 146
- अभ्यास-प्रश्नपत्रम्-2 150

शुरू से ही संस्कृत परीक्षा की तैयारी कैसे करें?

1. **उच्चारण**
   - संस्कृत भाषा में उच्चारण का महत्व बहुत अधिक है। हम जैसा पढ़ते हैं वैसा ही लिखते हैं। शुद्ध पढ़ें तथा शुद्ध लिखें।
   - ह्रस्व स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का (एक बार ताली बजाने जितना) समय लगता है तथा दीर्घ स्वरों के लिए दो मात्रा का (दो बार ताली बजाने जितना) समय लगता है।
   - प्लुत स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से तीन गुणा या उससे भी अधिक समय लगता है।
   - **अ** से युक्त व्यंजनों को ध्यान से पढ़ें तथा बोलें, क्योंकि **अ** की कोई मात्रा नहीं होती।
   - संयुक्त स्वरों को ध्यान से बोलें। संयुक्त वर्णों का उच्चारण करते समय शुद्ध व्यंजन से पहले वाले अक्षर पर बल देना चाहिए।
   - ऋ तथा र वर्णों का उच्चारण ध्यान से करें।

2. **लेखन**
   - प्रत्येक वर्ण को सुंदर व स्पष्ट लिखने का अभ्यास करें।
   - संयुक्त वर्णों को विशेष ध्यान से लिखें।
   - अनुस्वार का उच्चारण जहाँ हो उसी वर्ण के ऊपर उसे लिखना चाहिए; यथा–**संस्कृतम्।**
   - स्वर से युक्त 'र' इत्यादि वर्ण शुद्ध व्यंजनों के नीचे लिखे जाएँगे; उदाहरणार्थ **शुद्धम्** पद में द् + ध वर्ण हैं। देखने में 'द्' स्वरयुक्त लगता है व 'ध' स्वरहीन, क्योंकि हमें लगता है कि 'पूर्ण' का स्थान ऊपर होता है। संस्कृत भाषा हमें विनम्रता सिखाती है। **पूर्णाक्षर** (स्वरयुक्त अक्षर) को विनम्रता से नीचे झुककर और **शुद्ध** (स्वर से रहित) व्यंजन को ऊपर रखकर सहारा देने का विधान करती है।
   - पूरे अंक पाने हों तो अभ्यास प्रतिदिन करना चाहिए।

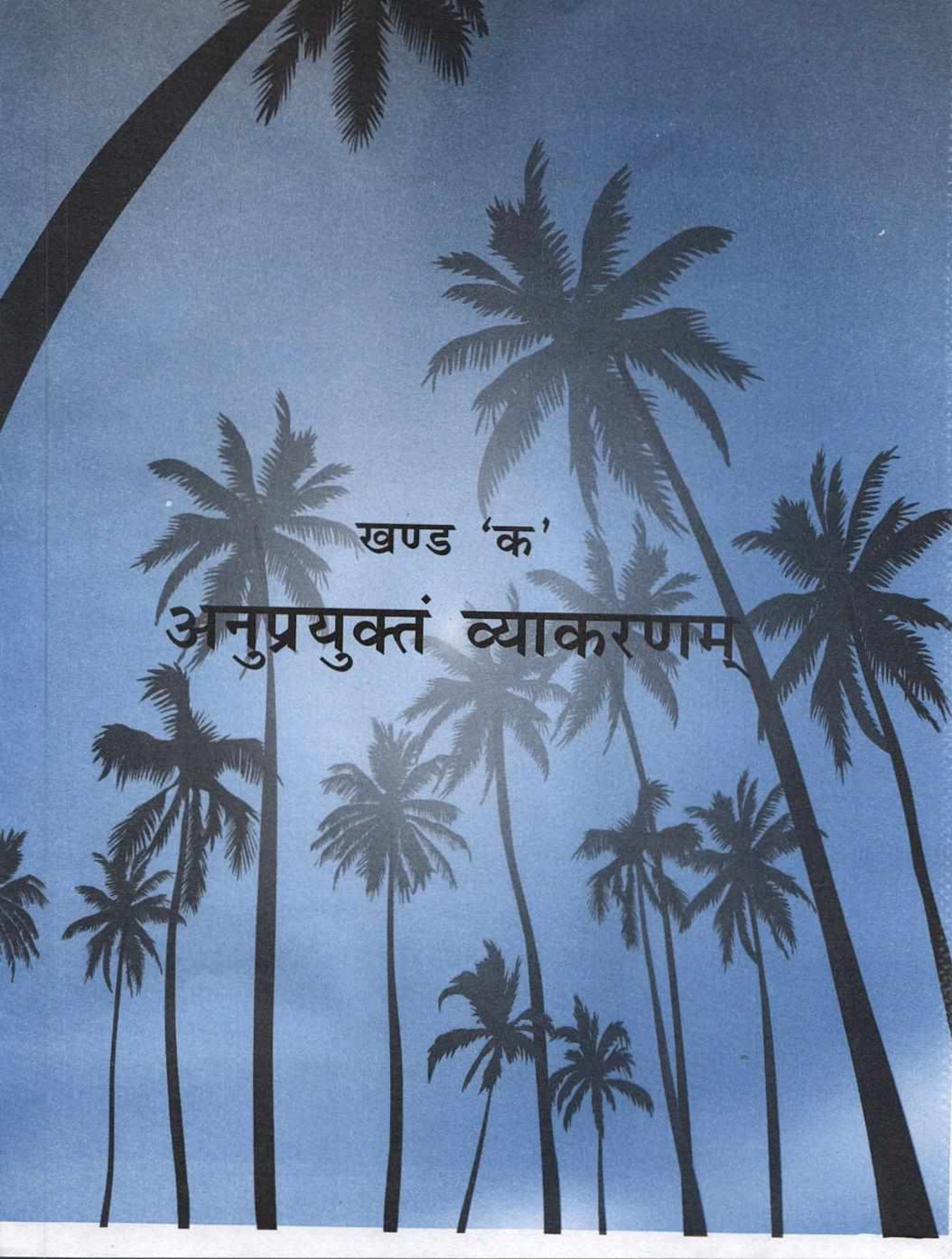

खण्ड 'क'

अनुप्रयुक्तं व्याकरणम्

1 उच्चारणस्थानानि

वर्णों का उच्चारण करते समय मुख के जिन भागों का प्रयोग होता है उन्हें उच्चारण स्थान कहते हैं। जिह्वा मुख के जिस अंग का स्पर्श करती है या जिस स्थान पर प्रयत्न करती है अथवा वायु जिन स्थानों से टकराकर बाहर निकलती है वे अंग उस वर्ण-विशेष का उच्चारण स्थान कहलाते हैं।

विभिन्न वर्णों के उच्चारण स्थान निम्नलिखित तालिका में दिए गए हैं :

उत्पत्तिस्थानम्	स्वराः 13	वर्गीय व्यञ्जनानि (स्पर्शाः) 25	अन्तःस्थाः 4	ऊष्माणः 4	अयोगवाहाः 3	संज्ञा
1. कण्ठः	अ, आ	कु = क्, ख्, ग्, घ्, ङ्	–	ह्	ः	कण्ठ्यः
2. तालुः	इ, ई	चु = च्, छ्, ज्, झ्, ञ्	य्	श्	–	तालव्यः
3. मूर्धा	ऋ, ॠ	टु = ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्	र्	ष्	–	मूर्धन्यः
4. दन्ताः	ऌ	तु = त्, थ्, द्, ध्, न्	ल्	स्	–	दन्त्यः
5. ओष्ठौ	उ, ऊ	पु = प्, फ्, ब्, भ्, म्	–	–	≍	ओष्ठ्यः
6. नासिका	–	ङ्, ञ्, ण्, न्, म्	–	–	ं	नासिक्यः
7. कण्ठतालुः	ए, ऐ	–	–	–	–	कण्ठतालव्यः
8. कण्ठोष्ठौ	ओ, औ	–	–	–	–	कण्ठोष्ठ्यः
9. दन्तोष्ठौ	–	–	व्	–	–	दन्तोष्ठ्यः

ध्यातव्यम्

- नासिक्य वर्णों के दो-दो उच्चारण स्थान होते हैं।
- प्रत्येक वर्ग का उच्चारण स्थान एक ही होता है।
- संयुक्त वर्णों में जिन दो वर्णों का संयोग हो उन्हीं दोनों के उच्चारण स्थान उस संयुक्त वर्ण के उच्चारण स्थान भी हो जाते हैं।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. जिह्वा मुख के अंदर जिन विशेष अंगों का स्पर्श करती है वही उस वर्ण-विशेष का उच्चारण स्थान होता है।
2. 'ए' तथा 'ऐ' वर्णों का उच्चारण स्थान कंठ व तालु होता है।
3. 'ओ' तथा औ वर्णों का उच्चारण स्थान कण्ठोष्ठ होता है।
4. 'व्' वर्ण का उच्चारण दाँतों तथा होठों की सहायता से किया जाता है।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. अधोलिखितप्रश्नानामुत्तरम् उचित पदम् चित्वा लिखत।
(उचित पद चुनकर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए।)

1. च वर्गस्य नासिक्यं वर्णम् अस्ति– .....
   (*i*) ण् (*ii*) ञ् (*iii*) (ङ)
2. व् इति वर्णस्य उच्चारणस्थानं किम्? .....
   (*i*) मूर्धा (*ii*) दन्तोष्ठौ (*iii*) कण्ठतालुः
3. इ, छ्, ए, श् एतेषु वर्णेषु कः वर्णः तालव्यः न अस्ति? .....
   (*i*) छ् (*ii*) ए (*iii*) (श्)
4. दन्त्यः वर्णः कः? .....
   (*i*) ध् (*ii*) ब् (*iii*) ण्
5. गजः इति पदे कस्य वर्ण उच्चारणस्थानं कण्ठः न अस्ति? .....
   (*i*) ग् (*ii*) ज् (*iii*) अः
6. कस्य वर्णस्य उच्चारणस्थानं कण्ठोष्ठौ अस्ति? .....
   (*i*) ऐ (*ii*) ओ (*iii*) व्
7. कः वर्णः तालव्यः अस्ति? .....
   (*i*) च् (*ii*) प् (*iii*) ख्
8. शिवः इति पदे 'श' वर्णस्य उच्चारणस्थानम् किम्? .....
   (*i*) मूर्धा (*ii*) तालुः (*iii*) दन्ताः
9. कृपया अत्र 'ऋ' वर्णस्य उच्चारणस्थानम् किम्? .....
   (*i*) मूर्धा (*ii*) तालुः (*iii*) नासिका

10. दन्त्यः वर्णः कः? .....

(*i*) भ (*ii*) ध् (*iii*) ष्

11. नासिक्यः ओष्ठ्यः च कः वर्णः? .....

(*i*) न् (*ii*) ञ् (*iii*) म्

12. कस्य वर्णस्य उच्चारणस्थानं मूर्धा भवति? .....

(*i*) व् (*ii*) ढ् (*iii*) न्

13. कस्य वर्णस्य उच्चारणस्थानं कण्ठतालुः अस्ति? .....

(*i*) व् (*ii*) इ (*iii*) ए

14. कः वर्णः तालव्यः अस्ति? .....

(*i*) स् (*ii*) स् (*iii*) झ्

15. ब् वर्णस्य उच्चारणस्थानम् किम् अस्ति? .....

(*i*) ओष्ठौ (*ii*) दन्तोष्ठौ (*iii*) दन्ताः

16. कः वर्णः दन्त्यः? .....

(*i*) ल् (*ii*) ट् (*iii*) म्

17. नासिक्यः वर्णः कः? .....

(*i*) उ (*ii*) प् (*iii*) न

18. शरद् इति पदे कस्य वर्णस्योच्चारणस्थानं मूर्धा अस्ति? .....

(*i*) श् (*ii*) र् (*iii*) द्

19. कः वर्णः कण्ठ्यः अस्ति? .....

(*i*) च् (*ii*) म् (*iii*) ह्

20. पत्रम् पदे 'म्' वर्णस्योच्चारणस्थानं किम् अस्ति? .....

(*i*) ओष्ठौ (*ii*) नासिका (*iii*) औष्ठौ नासिका च

21. कच्छपौ पदे 'प्', वर्णस्य उच्चारणस्थानम् किम् अस्ति? .....

(*i*) मूर्धा (*ii*) नासिका (*iii*) ओष्ठौ

22. ऋषिः पदस्य कः वर्णः मूर्धन्यः न अस्ति? .....

(*i*) इ (*ii*) ऋ (*iii*) ष्

23. रासभस्य पदे 'भ्' वर्णस्योच्चारणस्थानं किम् अस्ति? .....

(*i*) तालुः (*ii*) ओष्ठौ (*iii*) मूर्धा

24. एतेषु वर्णेषु मूर्धन्यः कः वर्णः ? .....

(*i*) च् (*ii*) क (*iii*) ढ्

25. एतेषु कः वर्णः दन्त्यः अस्ति? .....

(*i*) श् (*ii*) ष् (*iii*) स्

II. निम्नाङ्कितवाक्येषु उचितस्याग्रे (✓) अनुचितस्याग्रे च (×) इति चिह्नं लिखत।

(निम्नांकित वाक्यों में सही वाक्यों के आगे (✓) तथा अशुद्ध के आगे (×) निशान लगाइए।)

1. 'बालकस्य' पदस्य 'ब' वर्णस्य उच्चारणस्थानं तालुः अस्ति। ☐
2. 'अजः' पदे 'अ' वर्णः कण्ठ्यः अस्ति। ☐
3. न् + अ + म् + अः अत्र द्वौ वर्णौ कण्ठयौ न स्तः। ☐
4. द् + ए + व + ई अत्र 'ई' वर्णस्योच्चारणस्थानं मूर्धा अस्ति। ☐
5. 'ऌ' वर्णस्य उच्चारणस्थानं दन्ताः अस्ति। ☐
6. 'म्' वर्णः नासिक्यः अस्ति। ☐

III. समुचितं मेलनं कुरुत।

(उचित मिलान कीजिए।)

1. **वर्णाः**	**स्थानानि**	
1. ढ्	(क) दन्तोष्ठौ	.....
2. ई	(ख) मूर्धा	.....
3. व्	(ग) तालुः	.....
4. ञ्	(घ) दन्ताः	.....
5. ऐ	(ङ) नासिका	.....
6. ऌ	(च) कण्ठतालुः	.....

IV. मञ्जूषातः उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(मंजूषा से उचित पद चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

ण्, व्, कण्ठः, द्, नासिका एवं कण्ठः, नासिका एवं तालुः

1. ..... वर्णस्योच्चारणस्थानं दन्तोष्ठः अस्ति।
2. ..... वर्णस्योच्चारणस्थानं दन्त्यः अस्ति।

3. ..... वर्णः नासिक्यः मूर्धन्यः च अस्ति।

4. 'ख' वर्णस्योच्चारणस्थानम् ..... अस्ति।

5. 'ज्ञ' वर्णस्योच्चारणस्थानम् ..... अस्ति।

6. 'ङ्' वर्णस्योच्चारणस्थानम् ..... अस्ति।

V. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि अधोदत्तेषु वर्णेषु उचितं वर्णं चित्वा लिखत।

(दिए गए वर्णों से उचित वर्ण चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।)

1. थ्, ट्, छ्, ग् वर्णेषु कः वर्णः दन्त्यः? .....

(*i*) ग् (*ii*) छ् (*iii*) थ् (*iv*) ट्

2. 'म्' वर्णः ओष्ठ्यः अथवा कण्ठ्यः? .....

(*i*) ओष्ठ्य (*ii*) कण्ठ्यः (*iii*) किमपि न (*iv*) कण्ठ्यः एवम् ओष्ठ्यः

3. ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, ङ् वर्णेषु कः वर्णः नासिक्यः न अस्ति? .....

(*i*) म् (*ii*) ण् (*iii*) न (*iv*) ङ्

4. च्, ख्, ढ्, त् वर्णेषु कः वर्णः तालव्यः अस्ति? .....

(*i*) ख् (*ii*) च् (*iii*) ढ् (*iv*) त्

5. 'काव्यम्', इति पदे कस्य वर्णस्य उच्चारण स्थानं कण्ठः अस्ति? .....

(*i*) क् (*ii*) व् (*iii*) य् (*iv*) म्

6. य्, ल्, भ्, व् वर्णेषु कस्य उच्चारण स्थानं दन्तोष्ठम् अस्ति? .....

(*i*) व् (*ii*) य् (*iii*) भ् (*iv*) ल्

7. य्, र्, न्, व् वर्णेषु कः वर्णः नासिक्यः अस्ति? .....

(*i*) व् (*ii*) य् (*iii*) र् (*iv*) न्

8. 'द्' वर्णस्य उच्चारणस्थानं किम् अस्ति? .....

(*i*) दन्ताः (*ii*) तालुः (*iii*) औष्ठौ (*iv*) दन्तोष्ठम्

9. कयोः स्वरवर्णयोः उच्चारणस्थानं मूर्धा अस्ति? .....

(*i*) अ, आ (*ii*) इ, ई (*iii*) उ, ऊ (*iv*) ऋ, ॠ

10. ओ, औ स्वरवर्णयोः उच्चारणस्थानं किम् अस्ति? .....

(*i*) कण्ठोष्ठौ (*ii*) दन्तोष्ठौ (*iii*) दन्ततालुः (*iv*) ओष्ठौ

2 वर्णविन्यासाः संयोगाः च

वर्ण-विन्यास व वर्ण-संयोग–छात्रो! आप तो जानते ही हैं कि वर्णों के मिलने से ही कोई शब्द या पद बनता है। वर्ण पद की सबसे छोटी इकाई है जिसके और खंड नहीं किए जा सकते हैं। किसी भी पद के प्रत्येक वर्ण को पृथक्-पृथक् करना ही वर्ण-विभाजन अथवा वर्ण-विन्यास कहलाता है। वर्णों को जोड़कर सार्थक पद बनाना ही वर्णों का संयोग कहलाता है। संयोग करते समय शुद्ध व्यंजनों से आगे यदि ह्रस्व 'अ' आता है तो वर्ण का हल् चिह्न (्) हट जाता है। ह्रस्व 'अ' व्यंजन को पूरा या स्वरयुक्त तो करता है, किंतु इसकी कोई मात्रा व्यंजन में नहीं लगती। ठीक इसी तरह जब व्यंजन से स्वर अलग होता है तो वह व्यंजन हलन्त हो जाता है। 'अ' के अतिरिक्त अन्य सभी स्वरों के जुड़ने पर उनकी मात्राएँ उनके साथ लगाई जाती हैं।

उदाहरण–

वर्णविन्यासाः

1. छात्रा = छ् + आ + त् + र् + आ।
2. पुस्तकम् = प् + उ + स् + त् + अ + क् + अ + म्।

वर्णसंयोगाः

1. क् + अ + ल् + अ + म् + अः = कलमः।
2. द् + ई + प् + अ + क् + अः = दीपकः।

ध्यातव्यम्

- स्वरों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से किया जा सकता है।
- व्यंजनों को बोलने के लिए स्वरों की आवश्यकता होती है।
- ऌ वर्ण एक स्वर है तथा इसका दीर्घ नहीं होता।
- शुद्ध व्यंजनों के उच्चारण के लिए उससे पूर्व ध्वनि पर अधिक बल दिया जाता है।
- संयुक्त वर्ण का उच्चारण करते समय भी उससे पहले वाले अक्षर पर बल देना चाहिए। अन्तिमाक्षर का उच्चारण पूरे ध्यान से करें।
- शुद्ध व्यंजनों को लिखते समय उन्हें आधा या उनके नीचे हल् (्) लगाकर लिखना चाहिए; यथा–क अथवा क्।
- स्वर मिल जाने पर वर्ण हल् (्) को छोड़ देते हैं; उदाहरण–क् + अ = क। इसी तरह स्वर से अलग होने पर हल् (्) पुनः जुड़ जाते हैं।
- एक ही ध्वनि से अनेक शब्द शुरू हो सकते हैं। प्रत्येक ध्वनि के उच्चारण के लिए हमारे मुख के विशेष अंग विशेष प्रयास करते हैं।
- संयोग होने पर शुद्ध व्यंजनों को ऊपर तथा सस्वर व्यंजन को नीचे स्थान दिया जाता है।
- 'ध' तथा 'घ', ऌ तथा ल इत्यादि एक जैसे लगने वाले वर्णों को ध्यान से बोलें व लिखें।
- ह्रस्व 'अ' से युक्त वर्णों के लिखते एवं बोलते समय विशेष ध्यान रखें, क्योंकि 'अ' की कोई मात्रा वर्णों के साथ नहीं लगती।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. विसर्ग अयोगवाह है। अतएव वर्ण-विश्लेषण (विन्यास) अथवा वर्ण-संयोजन करते हुए भी इसे अंतिम स्वर के साथ ही लिखा जाएगा। उदाहरण के लिए–काक: = क्+आ+क्+अ: लिखना ही शुद्ध है। इस तरह से विसर्ग को लिखना अशुद्ध हो जाएगा–क् + आ + क् + अ + :
2. विभिन्न ध्वनियाँ ही वर्ण कहलाती हैं। ध्वनियों के सार्थक संयोग को शब्द कहते हैं।
3. शुद्ध व्यंजन, स्वरों की सहायता के बिना नहीं बोले जाते। दो स्वरों के मिलने से संयुक्त स्वर बनते हैं।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. वर्ण-संयोजनं कुरुत।
(वर्ण-संयोजन कीजिए।)

1. क् + अ + व् + इ: = ...
2. क् + ऋ + ष् + ण् + अ: = ...
3. भ् + अ + व् + अ + न् + त् + अ + म् = ...
4. म् + अ + ह + ए + श् + अ: = ...
5. क् + आ + र् + य् + आ + ण + इ = ...
6. क् + अ + र् + त् + अ + न् + अ + म् = ...
7. क् + अ + म् + अ + ल् + अ + म् = ...
8. ज् + अ + ग् + अ + द् + ग् + उ + र् + उ + म् = ...
9. व् + आ + स् + उ + द् + ए + व् + अ + म् = ...
10. न् + औ + क् + आ + य् + आ: = ...
11. व् + आ + ल् + म् + ई + क् + इ: = ...
12. प् + उ + त् + र् + ए + ष् + उ = ...
13. प् + अ + त् + र् + आ + ण् + इ = ...
14. आ + ग् + अ + च् + छ् + अ + त् = ...

15. द् + ई + प् + आ + व् + अ + ल् + य् + आ + म् = ...

16. स् + अ + म् + अ + य् + अः = ...

17. क् + आ + ल् + अः = ...

18. व् + अ + द् + अ = ...

19. क् + अ + र् + त् + अ + व् + य् + अ + म् = ...

20. च् + इ + द् + र् + ऊ + प् + अ + म् = ...

21. अ + ध् + इ + क् + आ + र + ई = ...

22. म् + आ + त् + आ + म् + अ + ह: = ...

23. भ् + आ + र् + अ + त् + अ + म् = ...

24. ज् + अ + य् + अ + त् + ए = ...

25. ग् + र् + ई + ष् + म् + ए = ...

II. वर्ण-विच्छेदं कुरुत।

(वर्ण-विच्छेद कीजिए।)

1. पुस्तकम् = ...

2. सर्वेषाम् = ...

3. कल्याणम् = ...

4. निरामया: = ...

5. पार्वती = ...

6. जन्मभूमिश्च = ...

7. प्रतिध्वनि: = ...

8. अपि = ...

9. गरीयसि = ...

10. वन्दे = ...

11. मातरम् = ...

12. गिरय: = ...

13. दूरतः = ...

14. रम्याः = ...

15. रामः = ...

16. अमारयत् = ...

17. कश्चित् = ...

18. सत्यम् = ...

19. धर्मम् = ...

20. लोचनम् = ...

21. सज्जनः = ...

22. विश्वासम् = ...

23. कुरु = ...

24. तन्मयः = ...

25. कुर्वन्ति = ...

26. पितृव्या = ...

27. तारिका = ...

28. पर्णम् = ...

29. अवकाशाः = ...

30. मम = ...

3 सन्धिः

दो या दो से अधिक वर्णों के पास-पास आने पर उनमें जो विकार (परिवर्तन) होता है उसे संधि कहते हैं; जैसे– सुर + इन्द्रः = सुरेन्द्रः, विद्या + अर्थी = विद्यार्थी। वाक्यों को संक्षिप्त करने के लिए वक्ता इच्छानुसार संधि का प्रयोग वाक्यों में कर सकते हैं।

स्वर संधिः–यदि दो स्वरों के पास आने पर कोई विकार या परिवर्तन हो तो वह स्वर संधि कहलाती है।

व्यंजन संधिः–यदि व्यंजन के साथ स्वर या व्यंजन के मिलने पर उसमें परिवर्तन हो तो उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

विसर्ग संधिः–यदि विसर्ग के किसी स्वर या व्यंजन के साथ मिलने से उसमें परिवर्तन हो तो उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

सप्तमी कक्षा में केवल स्वर संधि का ज्ञान कराया जाएगा।

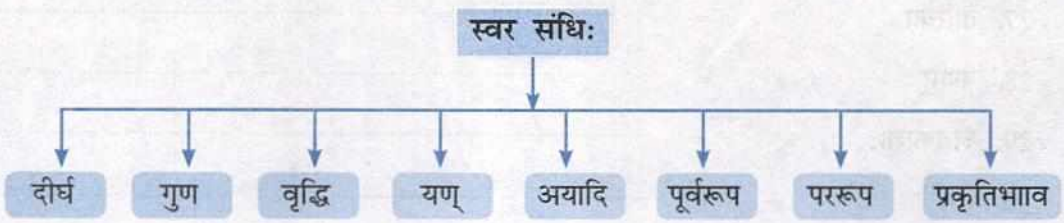

स्वर सन्धिः

1. **दीर्घ सन्धिः**–यदि पूर्व पद का अंतिम स्वर अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ हो तथा उत्तर पद का पहला अक्षर भी उसी जाति का हो तो दोनों के स्थान पर एक दीर्घ हो जाता है। इसे हम निम्न प्रकार समझ सकते हैं–

- अ + अ → आ
  सूर्य + अस्तः = सूर्यास्तः
- आ + आ → आ
  महा + आशयः = महाशयः
- अ + आ → आ
  शिव + आलयः = शिवालयः
- आ + अ → आ
  विद्या + अर्थी = विद्यार्थी

ठीक इसी तरह–

• इ + इ → ई
हरि + इच्छा = हरीच्छा

ई + ई → ई
रजनी + ईश: = रजनीश:

इ + ई → ई
प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा

ई + इ → ई
देवी + इन्द्र: = देवीन्द्र:

• उ + उ → ऊ
गुरु + उपदेश: = गुरूपदेश:

ऊ + ऊ → ऊ
वधू + ऊचु: = वधूचु:

उ + ऊ → ऊ
सिन्धु + ऊर्मि: = सिन्धूर्मि:

ऊ + उ → ऊ
वधू + उत्सव: = वधूत्सव:

ऋ के बाद सजातीय ऋ आने पर विकल्प (इच्छा) से ॠ होता है तथा ऋ के बाद ऌ आने पर भी ऋ होता है (विकल्प से)।

• ऋ + ऋ → ॠ
पितृ + ऋणम् = पितॄणम्

ऋ + ऌ → ॠ
होतृ + ऌकार: = होतॄकार:

ऋ + ऋ → ऋ
मातृ + ऋणम् = मातृणम्

ऋ + ऌ → ऌ
होतृ + ऌकार: = होत्ऌकार:

अपवाद–कुछ स्थानों पर संधि का नियम लागू होने पर भी संधि नहीं होने का विधान होता है। वे उस संधि के अपवाद होते हैं; यथा–सार + अङ्ग: = सारङ्ग: इत्यादि।

2. **गुण सन्धि:**–यदि पहले पद के अंत में अ, आ हो तथा उत्तर पद के पहले अक्षर इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ऌ हों तो उनका क्रम से ए, ओ, अर् तथा अल् हो जाता है।

• अ + इ → ए
नर + इन्द्र: = नरेन्द्र:

अ + ई → ए
गण + श: = गणेश:

आ + इ → ए
रमा + इच्छा = रमेच्छा

आ + ई → ए
महा + ईश: = महेश:

• अ + उ → ओ
चन्द्र + उदय: = चन्द्रोदय:

आ + उ → ओ
महा + उदय: = महोदय:

अ + ऊ → ओ
जल + ऊर्मि: = जलोर्मि:

आ + ऊ → ओ
गंगा + ऊर्मि: = गंगोर्मि:

- अ + ऋ → अर्
  राज + ऋषि: = राजर्षि:
- आ + ऋ → अर्
  महा + ऋषि: = महर्षि:
- अ + ऌ → अल्
  तव + ऌकार: = तवल्कार:
- आ + ऌ → अल्
  माला + ऌकार: = मालल्कार:

3. वृद्धि सन्धि: – यदि पूर्व पद के अंत में अ या आ तथा उत्तर पद के पूर्व वर्ण ए या ऐ हों तो दोनों के स्थान पर ऐ हो जाता है।

- अ + ए → ऐ
  तव + एव = तवैव
- आ + ए → ऐ
  सदा + एव = सदैव
- अ + ऐ → ऐ
  मत + ऐक्यम् = मतैक्यम्
- आ + ऐ → ऐ
  रमा + ऐश्वर्यम् = रमैश्वर्यम्

4. यण् सन्धि: – यदि पूर्व पद का अंतिम वर्ण इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ तथा ऌ हो तथा उत्तर पद का प्रथमाक्षर कोई भी भिन्न या विजातीय स्वर हो तो इ, इ को य्; उ, ऊ को व्; ऋ, ॠ को र् तथा ऌ को ल् हो जाता है।

- इ + भिन्न स्वर → य्
  यदि + अपि = यद्यपि
- ई + भिन्न स्वर → य्
  सरस्वती + आगच्छति = सरस्वत्यागच्छति
- उ + भिन्न स्वर → व्
  लघु + इदम् = लघ्विदम्
- ऊ + भिन्न स्वर → व्
  वधू + आगच्छत् = वध्वागच्छत्
- ऋ + भिन्न स्वर → र्
  पितृ + उपदेश: = पित्रुपदेश:
- ऌ + भिन्न स्वर → ल्
  ऌ + आकार: = लाकार:

5. **अयादि सन्धिः**—ए, ऐ, ओ, औ यदि पहले हों तथा बाद में कोई भी स्वर हो तो ए को अय्, ऐ को आय्, ओ को अव्, औ को आव् हो जाता है।

- ए + कोई भी स्वर

अय्

शे + अनम्

= शयनम्

ऐ + कोई भी स्वर

आय्

ग + अनम्

= गायनम्

- ओ + कोई भी स्वर

अव्

पो + अनम्

= पवनम्

औ + कोई भी स्वर

आव्

भ + उकः

= भावुकः

6. **पूर्वरूपसन्धिः**—पद का अंतिम अक्षर ए या ओ हो और उसके बाद आने वाला अक्षर अ (केवल ह्रस्व) हो तो **अयादि सन्धि** न होकर पूर्वरूप सन्धि का नियम लागू होता है तथा अ पूर्व पद ए या ओ में बिना परिवर्तन मिल जाएगा तथा पहचान के लिए अ के स्थान पर ऽ (अवग्रह चिह्न) लगा दिया जाता है।

- बालो + अस्ति

= बाल्, ओ + अ, स्ति

= बाल्, ओ + –, स्ति

= बाल् ओ + ऽ स्ति

= बालोऽस्ति

वृक्षे + अपि

= वृक्ष्, ए + अ, पि

= वृक्ष्, ए + –, पि

= वृक्ष् ए + –, पि

= वृक्षेऽपि

7. **पररूपसन्धिः**—पहले पद के अंत में यदि **अकारान्त उपसर्ग** हो तथा बाद में ए, ओ से शुरू होने वाली धातु हो तो दोनों के स्थान पर क्रम से ए, ओ ही हो जाता है।

- प्र + एषयति

= प्र् अ + ए, ष, यति

ए

= प्रेषयति

अव + ओषति

= अव्, अ + ओ, षति

ओ

= अवोषति

8. **प्रकृति भाव/प्रगृह्य संज्ञा**–संधि के नियम लागू होने पर भी जब संधि न करके उसे प्राकृतिक रूप में ही रखने का नियम हो तो उसे **प्रकृति भाव** कहते हैं।

एक स्वर वाले अव्ययों की प्रगृह्य संज्ञा होती है।

- इ + इन्द्रः — उ + उमेशः
- = इ इन्द्रः — = उ उमेशः

द्विवचन के अंत में ई, ऊ तथा ए हों तो उनकी सभी स्थानों पर (शब्दों तथा धातुओं के आने पर भी) **प्रगृह्य संज्ञा** होती है।

- कवी + एतौ — गिरी + इमौ
- = कवी एतौ — = गिरी इमौ
- विष्णू + एतौ — सेवेते + इमौ
- = विष्णू एतौ — = सेवेते इमौ
- लते + एते — भाषेते + एतौ
- = लते एते — = भाषेते एतौ

संबोधन के ओ की तथा दूर से पुकारने पर जब अंतिम स्वर प्लुत हो जाता है उसकी भी प्रगृह्य संज्ञा होती है।

विकल्प का अर्थ है–इच्छा से। इसमें दोनों रूप मान्य होते हैं।

- शम्भो + आयाहि (ओ की विकल्प से)
- = शम्भो३ आयाहि/शम्भो आयाहि
- हरे३ + आगच्छ
- = हरे३ आगच्छ

अदस् (यह) शब्द के रूपों के 'अमी' तथा 'अमू' पदों की प्रगृह्य संज्ञा होने से प्रकृति भाव रह जाता है।

- अमू + आगच्छतः — अमी + ईशाः
- = अमू आगच्छतः — = अमी ईशाः

संयोगः–दो या दो से अधिक वर्णों के पास-पास आने पर बिना परिवर्तन के जो मेल होता है उसे संयोग कहते हैं–निम्न + लिखित = निम्नलिखिंत।

ध्यातव्यम्

- संधि करना या न करना लेखक या वक्ता की विवक्षा (इच्छा) पर निर्भर करता है।
- जिन वर्णों में परिवर्तन या संधि होनी है, उन्हीं में संधि करें, शेष वर्णों में कोई परिवर्तन नहीं होता।
- ध्यान रखें कि परिवर्तन दो व्यंजनों के स्थान पर हो रहा है या एक व्यंजन के स्थान पर।
- अपवाद नियमों को भी विशेष रूप से ध्यान में रखें।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. वर्णों में परिवर्तन को संधि कहते हैं।
2. संधि के तीन भेद होते हैं–स्वर संधि, व्यंजन संधि तथा विसर्ग संधि।
3. दीर्घ संधि में दो सजातीय स्वरों का एक दीर्घ होता है।
4. पदान्त अ, आ के बाद ए, ऐ हो तो दोनों के स्थान पर ऐ हो जाता है।
5. पदान्त अ, आ के बाद इ, ई का ए हो जाता है।
6. पदान्त अ, आ के बाद उ, ऊ का ओ हो जाता है।
7. पदान्त इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ के स्थान पर कोई भी भिन्न या विजातीय स्वर आने पर इ / ई का 'य्', उ / ऊ को 'व्', ऋ / ॠ को 'र' तथा ऌ को 'ल्' हो जाता है।
8. पदान्त ए, ऐ के बाद कोई भी स्वर हो तो ए का 'अय्' और ऐ का 'आय्' हो जाता है।
9. पदान्त ओ, औ के बाद कोई भी स्वर हो तो ओ का 'अव्', और औ का 'आव्' हो जाता है।
10. पदान्त ए, ओ के बाद 'अ' हो तो वह पदान्त ए, ओ में ही मिल जाता है तथा 'अ' के स्थान पर पहचान के लिए अवग्रह चिह्न (ऽ) लगाया जाता है।
11. संधि का नियम जहाँ लागू होना चाहिए वहाँ पर यदि संधि न हो रही हो तो उसे प्रगृह्य या प्रकृतिभाव की संज्ञा दी जाती है।
12. दो वर्णों के पास-पास आने पर बिना परिवर्तन के जुड़ना संयोग कहलाता है।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. वाक्येषु रञ्जितपदेषु सन्धिविच्छेदं कृत्वा सन्धेः नाम अपि लिखत।

(निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन पदों का संधि-विच्छेद कीजिए तथा संधि का नाम भी लिखिए।)

1. सा प्रौढा कुतः अगच्छत्? ..... + ...
2. नवौषधिः कुत्र अरक्षत्? ..... + ...
3. तं विशालं भवनं पश्य। ..... + ...
4. उत्तिष्ठ: पुत्र! सूर्योदयः अभवत्। ..... + ...
5. अहम् न जाने, पुस्तकं तवेति। ..... + ...
6. छात्रः हितोपदेशं शृणोति। ..... + ...
7. अहम् वधूत्सवे नृत्यामि। ..... + ...

8. देवर्षिः नारदः आगतः। ..... + ...

9. अद्यैव मरणमस्तु युगान्तरे वा। ..... + ...

10. सर्वप्रथमं गणेशं पूजयामि। ..... + ...

II. निम्नलिखितवाक्येषु रञ्जितपदेषु सन्धिं कुरुत।

(निम्नलिखितवाक्यों में रंगीन पदों में संधि कीजिए)

1. यदा सः खादिष्यति तदा + एव सा खादिष्यति। .....

2. अस्मिन् विषये अस्माकम् मत + ऐक्यम् एव। .....

3. तत्र + एव मम मित्रम् क्रीडति। .....

4. अद्यावकाशः न + एव अस्ति। .....

5. द्वौ + एव नरौ धन्यौ शूरः दाता च। .....

6. अद्य + अहम् मित्रेण सह शुक्रतालम् गतवान्। .....

7. अत्र + एव कश्चन् महातपस्वी वसति। .....

8. भक्ताः देव + आलये अर्चयन्ति। .....

9. क्व तत्र भवान् मम + आर्यो रामः? .....

10. तस्य गाथा अद्य + अपि स्मरणीया अस्ति। .....

III. निम्नलिखितेषु रञ्जितपदेषु सन्धिं सन्धिच्छेदं वा कुरुत।

(निम्नलिखित रंगीन पदों में संधि या संधिच्छेद कीजिए।)

1. पुत्री! किञ्चित् लो + अनम् आनय। .....

2. अधुना मा क्रीड। इति मात्राज्ञा अस्ति। ..... + ...

3. आगच्छतु भवान्! सु + आगतम् तव। .....

4. माता सर्वदा + एव पुत्रहितम् अभिलषति। .....

5. हिमालयः भारतस्य रक्षकः। ..... + ...

6. महा + उदय अत्र पश्य। .....

7. सा तु लतैव वृक्षोपरि। ..... + ...

8. स्नानाय चलत, नदी + अत्र वहति। .....

9. बाला + एका आगता। .....

10. विक्रम + उर्वशीयस्य रचयिता कः आसीत्? .....

IV. दत्तविकल्पेभ्यः उचितं पदं चित्वा रञ्जितपदेषु सन्धिः सन्धिच्छेदं वा कुरुत।

(दिए गए विकल्पों से रंगीन पदों का संधि अथवा संधि-विच्छेद चुनिए।)

1. 1. अस्माकं विद्यालये अद्य + अवकाशः अस्ति।

(*i*) अद्यवकाशः (*ii*) अद्यअवकाशः (*iii*) अद्यावकाशः

2. हरिः दैत्यारिः अस्ति।

(*i*) दै + त्यारिः (*ii*) दैत्य + अरिः (*iii*) दैत्य + आरिः

3. एकां सूक्तिम् लिखत।

(*i*) सू + उक्तिम् (*ii*) सु + उक्तिम् (*iii*) सुक् + तिम्

4. अयं छात्रः सर्वोत्तमः अस्ति।

(*i*) सर्वः + उत्तमः (*ii*) सर्वो + त्तमः (*iii*) सर्व + उत्तमः

5. नवोढा अत्र एव आगच्छति।

(*i*) नव + ऊढा (*ii*) नवो + ढा (*iii*) न + वोढा

6. मह्यं गंगोदकम् प्रयच्छ।

(*i*) गंगो + दकम् (*ii*) गंगा + ओदकम् (*iii*) गंगा + उदकम्

7. परमेशः तु सर्वम् पश्यति।

(*i*) प + रमेशः (*ii*) परम + इशः (*iii*) परम + ईशः

8. यद्यपि त्वं सत्यं न वदसि तथापि शृणोमि।

(*i*) यदी + अपि (*ii*) यद्य + अपि (*iii*) यदि + अपि

9. देव्युवाच–"वरं वृणीष्व।"

(*i*) देवि + युवाच (*ii*) देवी + उवाच (*iii*) देव् + युवाच्

10. तम् गायकः अत्र एव गायति।

(*i*) गा + यकः (*ii*) गाय + कः (*iii*) गै + अकः

V. अधोलिखितवाक्येषु रञ्जितपदेषु संशोधनं कृत्वा पुनः लिखत।

(अधोलिखित वाक्यों में रंगीन पदों का संशोधन करके पुनः लिखिए।)

1. तत्र मम गृह + ओद्यानम् वर्तते। ..... + ...
2. जला + अभावात् कथम् भवान् जीविष्यति। ..... + ...
3. सः मूषकस्यूपरि जलं परिसिञ्चति। .....
4. तस्य अंगुली वृश्चनेन छिन्ना + भवत्। ..... + ...
5. नृपस्य पीडा शान्त + अभवत्। ..... + ...
6. क्षुद्रो + यम् कीटः अस्ति। ..... + ...
7. मन्येहम् त्वं वीरः असि। .....
8. धर्मः हियेकः तेषु विशेषः। .....
9. सत्यमेव मृग + एन्द्रता। ..... + ...
10. नित्यम् वृद्धो + उपसेविनः चत्वारि वर्धन्ते। ..... + ...

VI. मञ्जूषातः उचितं सन्धियुक्तं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(मंजूषा से उचित संधियुक्त पद चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

अतीव, स्वच्छम्, वर्षर्तुः, देव्यस्ति, नाविकस्य,
पावकः, ममोपहासम्, प्रतीक्षाम्, पवनः, मात्रर्थम्

1. त्वम् किंमर्थम् ..... करोषि?
2. कस्य ..... करोषि?
3. इदं रामायणम् तु ..... नयामि।
4. प्रातःकाले सुगन्धितः ..... वहति।
5. इयम् ..... तरणिः।
6. गृहे ..... न वा?
7. मह्यम् ..... न रोचते।
8. मह्यम् वसन्तर्तुः ..... रोचते।
9. ..... दर्पणम् आनय।
10. ..... ज्वलति।

4 शब्दरूप-प्रकरणम्

संस्कृत भाषा में निम्नलिखित तीन लिंग होते हैं :

1. पुंल्लिङ्ग 2. स्त्रीलिङ्ग 3. नपुंसकलिङ्ग

प्रत्येक लिंग के अलग-अलग शब्द रूप चलते हैं। शब्द जिस अक्षर से समाप्त होता है, उस अक्षर के पीछे 'कार' लिख देते हैं, इस प्रकार 'अ' को हम 'अकार', 'इ' को 'इकार', 'ई' को 'ईकार' तथा 'त्' को तकार भी कह सकते हैं।

संस्कृत में 'अ' से अंत होने वाले शब्द अकारान्त, 'आ' से अंत होने वाले शब्द आकारान्त तथा 'इ' से अंत होने वाले शब्द इकारान्त कहलाते हैं।

एक ध्वनि (अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त, तकारान्त इत्यादि) एवं एक लिंग के सभी शब्दों के रूप (कभी-कभी थोड़े-से अंतर के साथ) प्राय: एक जैसे ही चलते हैं।

अकारान्त पुंल्लिंग शब्द

अज (बकरा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अज:	अजौ	अजा:
द्वितीया	अजम्	अजौ	अजान्
तृतीया	अजेन	अजाभ्याम्	अजै:
चतुर्थी	अजाय	अजाभ्याम्	अजेभ्य:
पंचमी	अजात्	अजाभ्याम्	अजेभ्य:
षष्ठी	अजस्य	अजयो:	अजानाम्
सप्तमी	अजे	अजयो:	अजेषु
संबोधन	हे अज !	हे अजौ !	हे अजा: !

देव (देवता)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	देवः	देवौ	देवाः
द्वितीया	देवम्	देवौ	देवान्
तृतीया	देवेन	देवाभ्याम्	देवैः
चतुर्थी	देवाय	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
पंचमी	देवात्	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
षष्ठी	देवस्य	देवयोः	देवानाम्
सप्तमी	देवे	देवयोः	देवेषु
संबोधन	हे देव!	हे देवौ!	हे देवाः!

राम

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पंचमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
संबोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामाः!

विशेष–रामेण तथा रामाणाम् में न के स्थान पर ण है, क्योंकि नियम है कि र्, ऋ तथा ष् के बाद यदि **न** आ जाए तो **न** का **ण** हो जाता है, किंतु **न्** के हलन्त होने पर **न्** का **ण** नहीं होता; यथा–रामान्। वानर, सिंह, नर, गज, मानव, बाल, बालक, छात्र, कर, अनल, आचार्य, सूद, चौर, काल आदि अकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप भी इसी तरह चलेंगे।

इकारान्त पुंल्लिंग शब्द

कवि (लेखक/कविता करने वाला)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कविः	कवी	कवयः
द्वितीया	कविम्	कवी	कवीन्
तृतीया	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
चतुर्थी	कवये	कविभ्याम्	कविभ्यः
पंचमी	कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः
षष्ठी	कवेः	कव्योः	कवीनाम्
सप्तमी	कवौ	कव्योः	कविषु
संबोधन	हे कवे!	हे कवी!	हे कवयः!

कवि के समान चलने वाले अन्य शब्द हैं–भूपति, महीपति, नृपति = राजा, मुनि, ऋषि = तपस्वी, रश्मि = किरण, हरि = विष्णु, वानर, रवि = सूर्य, अग्नि = आग, वह्नि = आग, कपि = वानर, मरीचि = किरण, असि = तलवार, गिरि = पर्वत, सारथि = रथचालक, निधि = खजाना, व्याधि = रोग, यति = योगी, अरि = शत्रु, उदधि = समुद्र, अधिपति = स्वामी, पाणि = हाथ।

पति (स्वामी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पंचमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
संबोधन	हे पते !	हे पती !	हे पतयः !

पति के ही समान 'सखि' शब्द के रूप भी चलेंगे।

ईकारान्त पुंल्लिंग शब्द

सुधी (श्रेष्ठ बुद्धि वाला)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
द्वितीया	सुधियम्	सुधियौ	सुधियः
तृतीया	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
चतुर्थी	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
पंचमी	सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
षष्ठी	सुधियः	सुधियोः	सुधीनाम्
सप्तमी	सुधियि	सुधियोः	सुधीषु
सम्बोधन	हे सुधीः !	हे सुधियौ !	हे सुधियः !

उकारान्त पुंल्लिंग शब्द

गुरु (आचार्य/महान भारी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वितीया	गुरुम्	गुरू	गुरून्
तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
चतुर्थी	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
पंचमी	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
षष्ठी	गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
सप्तमी	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
संबोधन	हे गुरो!	हे गुरू!	हे गुरवः!

गुरु के ही समान शेष उकारान्त पुंल्लिंग शब्द के रूप चलेंगे; यथा–वायु = हवा, साधु = सज्जन, बन्धु = संबंधी, बिन्दु = बूँद, प्रभु = ईश्वर, रिपु = शत्रु, भानु = सूर्य, सूनु = पुत्र, बाहु = भुजा, शिशु = छोटा बालक, पलाण्डु = प्याज, विधु = चाँद, तरु = वृक्ष, ऋतु = मौसम, विष्णु = ईश्वर/पालक, राहु = ग्रह, मनु = ब्रह्मा के पुत्र/आदि पुरुष, कुरु = एक राजा, लघु = हल्का या छोटा, पृथु = स्थूल, मोटा, पटु = चतुर, शम्भु = शिव पशु = जानवर, रेणु = धूल, इन्दु = चाँद, मृदु = कोमल, इषु = बाण, परशु = कुल्हाड़ी, मृत्यु = मौत।

विशेष–किसी पद में र्, ष् तथा ऋ के बाद न् आए तो न् को ण् हो जाता है। इसलिए यहाँ गुरुणा तथा गुरुणाम् में 'ण्' है। पदान्त 'न्' का ण् नहीं होता है; जैसे– गुरून्।

ऋकारान्त पुंल्लिंग शब्द

पितृ (पिता)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पंचमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः!	हे पितरौ!	हे पितरः!

भ्रातृ (भाई)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भ्राता	भ्रातरौ	भ्रातरः
द्वितीया	भ्रातरम्	भ्रातरौ	भ्रातॄन्
तृतीया	भ्रात्रा	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभिः
चतुर्थी	भ्रात्रे	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभ्यः
पंचमी	भ्रातुः	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभ्यः
षष्ठी	भ्रातुः	भ्रात्रोः	भ्रातॄणाम्
सप्तमी	भ्रातरि	भ्रात्रोः	भ्रातृषु
सम्बोधन	हे भ्रातः!	हे भ्रातरौ!	हे भ्रातरः!

इसी प्रकार इन शब्दों के रूप भी चलेंगे– सवितृ = सूर्य, वक्तृ = वक्ता, क्रेतृ = खरीददार, कर्तृ = करने वाला, होतृ = हवन, श्रोतृ = श्रोता, गोप्तृ = संरक्षक, धातृ = ब्रह्मा, नेतृ = नेता, देवृ = देवर, भर्तृ=स्वामी, हन्तृ=मारने वाला, गन्तृ=जानेवाला।

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

लता (टहनी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पंचमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
संबोधन	हे लते!	हे लते!	हे लताः!

रमा (लक्ष्मी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	रमे	रमाः
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पंचमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
षष्ठी	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयोः	रमासु
संबोधन	हे रमे!	हे रमे!	हे रमाः!

निशा (रात)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	निशा	निशे	निशाः
द्वितीया	निशाम्	निशे	निशाः
तृतीया	निशया	निशाभ्याम्	निशाभिः
चतुर्थी	निशायै	निशाभ्याम्	निशाभ्यः
पंचमी	निशायाः	निशाभ्याम्	निशाभ्यः
षष्ठी	निशायाः	निशयोः	निशानाम्
सप्तमी	निशायाम्	निशयोः	निशासु
संबोधन	हे निशे!	हे निशे!	हे निशाः!

माला, छात्रा, पाठशाला, कला, मुष्टिका (= मुट्ठी), निद्रा, लोमशा (= लोमड़ी), पिपीलिका (=चींटी), दोला (= झूला), व्यथा, छुरिका, दिनदर्शिका (= कैलेण्डर), अग्निपेटिका (= माचिस), सुता, वर्षा, जरा, ग्रीवा, सभा, कमला आदि आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप भी इसी तरह चलेंगे।

इकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

मति (बुद्धि)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै/मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पंचमी	मत्याः/मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः/मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्/मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते!	हे मती!	हे मतयः!

मति के समान चलने वाले कुछ अन्य शब्द हैं–रात्रि = रात, श्रुति = वैदिक ज्ञान, शान्ति = शान्ति, कृति = रचना, बुद्धि = बुद्धि, रुचि= रुचि या इच्छा, प्रकृति = स्वभाव, कटि = कमर, आकृति = आकार, मुक्ति=मोक्ष, वृत्ति=जीविका, भूमि=पृथ्वी, तृप्ति=संतोष, नीति=नीति, जाति=जाति इत्यादि।

ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

नदी (सरिता)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पंचमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

इसी तरह इन शब्दों के भी रूप चलेंगे–जननी = माता, लक्ष्मी = विष्णुपत्नी, रजनी = रात, महिषी = भैंस (मादा), विदुषी = विदुषी, भगिनी = बहन, पत्नी = औरत, राज्ञी = रानी, पृथ्वी = भूमि, पौत्री = पोती, पुत्री = लड़की, स्त्री=नारी, देवी=देवी, पार्वती=शिव पत्नी, गौरी–पार्वती, सखी=सहेली, सहचरी=सखी, दासी=नौ. करानी, सुहासिनी=हँसने वाली, काशी=बनारस, पुरी=नगर इत्यादि।

उकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

धेनु = गाय

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै/धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पंचमी	धेन्वाः/धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः/धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्/धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो!	हे धेनू!	हे धेनवः!

इसी प्रकार अन्य उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप भी चलेंगे–तनु = शरीर, चञ्चु = चोंच, रज्जु = रस्सी, रेणु = धूल या पाउडर, शतद्रु = सतलुज नदी आदि।

ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

वधू = बहू

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पंचमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	हे वधु!	हे वध्वौ!	हे वध्वः!

इसी प्रकार अन्य ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप चलेंगे–चमू = सेना, कर्कन्धू = बेर, श्वश्रू = सास इत्यादि।

ऋकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

मातृ (माँ)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातृः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पंचमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातृणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः!	हे मातरौ!	हे मातरः!

मातृ के समान चलने वाले कुछ अन्य शब्द हैं–दुहितृ=पुत्री, नप्तृ=नाती आदि।

अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द

फल (फल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पंचमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
संबोधन	हे फल !	हे फले !	हे फलानि !

पुस्तक (किताब)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पुस्तकम्	पुस्तके	पुस्तकानि
द्वितीया	पुस्तकम्	पुस्तके	पुस्तकानि
तृतीया	पुस्तकेन	पुस्तकाभ्याम्	पुस्तकैः
चतुर्थी	पुस्तकाय	पुस्तकाभ्याम्	पुस्तकेभ्यः
पंचमी	पुस्तकात्	पुस्तकाभ्याम्	पुस्तकेभ्यः
षष्ठी	पुस्तकस्य	पुस्तकयोः	पुस्तकानाम्
सप्तमी	पुस्तके	पुस्तकयोः	पुस्तकेषु
संबोधन	हे पुस्तक !	हे पुस्तके !	हे पुस्तकानि !

मित्र (दोस्त)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मित्रम्	मित्रे	मित्राणि
द्वितीया	मित्रम्	मित्रे	मित्राणि
तृतीया	मित्रेण	मित्राभ्याम्	मित्रैः
चतुर्थी	मित्राय	मित्राभ्याम्	मित्रेभ्यः
पंचमी	मित्रात्	मित्राभ्याम्	मित्रेभ्यः
षष्ठी	मित्रस्य	मित्रयोः	मित्राणाम्
सप्तमी	मित्रे	मित्रयोः	मित्रेषु
संबोधन	हे मित्र !	हे मित्रे !	हे मित्राणि !

सभी अकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों छत्र, पत्र, चित्र, वस्त्र, धन, दुःख, चक्र, मुख, गृह, पुष्प, कार्य, पण्य (पैसा), वाक्य, भोजन, पात्र, वचन, आभूषण, नगर इत्यादि के रूप भी इसी तरह चलेंगे।

इकारान्त नपुंसकलिंग शब्द

वारि (जल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पंचमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि!/हे वारे!	हे वारिणी!	हे वारीणि!

अक्षि (आँख)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
द्वितीया	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
तृतीया	अक्ष्णा	अक्षिभ्याम्	अक्षीभिः
चतुर्थी	अक्ष्णे	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्यः
पंचमी	अक्ष्णः	अक्षिभ्याम्	अक्षिभ्यः
षष्ठी	अक्ष्णः	अक्ष्णोः	अक्ष्णाम्
सप्तमी	अक्ष्णि/अक्षिणि	अक्ष्णोः	अक्षिषु
सम्बोधन	हे अक्षे!/हे अक्षि!	हे अक्षिणी!	हे अक्षीणि!

अक्षि की ही तरह सुरभि, दधि तथा अस्थि आदि के रूप चलेंगे।

उकारान्त नपुंसकलिंग शब्द

मधु (शहद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पंचमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधो!/हे मधु!	हे मधुनी!	हे मधूनि!

मधु के ही समान अन्य उकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप चलेंगे; यथा–दारु = लकड़ी, श्मश्रु = दाढ़ी, अश्रु = आँसू, वस्तु = चीज़, जानु = घुटना, वसु = धन इत्यादि।

ऋकारान्त नपुंसकलिंग शब्द

कर्तृ (करने वाला)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तृणि
द्वितीया	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तृणि
तृतीया	कर्त्रा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः
चतुर्थी	कर्त्रे	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
पंचमी	कर्तुः	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
षष्ठी	कर्तुः	कर्त्रोः	कर्तृणाम्
सप्तमी	कर्तरि	कर्त्रोः	कर्तृषु
सम्बोधन	हे कर्तृ!	हे कर्तृणी!	हे कर्तृणि!

इसी तरह अन्य ऋकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप चलेंगे; यथा–ज्ञातृ = जानने वाला, दातृ=देनेवाला, धातृ = धारण करने वाला, पालने वाला इत्यादि।

सर्वनाम शब्द

तत् = वह (पुंल्लिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

तत् = वह (स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पंचमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

तत् = वह (नपुंसकलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

(शेष रूप पुंल्लिंग के समान होते हैं।)

एतत् = यह (पुंल्लिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्	एतौ	एतान्
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पंचमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

एतत् = यह (स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्	एते	एताः
तृतीया	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पंचमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

एतत् = यह (नपुंसकलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एतत्	एते	एतानि
द्वितीया	एतत्	एते	एतानि

(शेष रूप पुंल्लिंग के समान होंगे।)

किम् = कौन (पुंल्लिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

किम् = क्या (स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पंचमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

सर्वनाम शब्दों के संबोधन नहीं हो सकते। संबोधन केवल संज्ञा तथा विशेषण आदि शब्दों के साथ आएँगे।

किम् = क्या (नपुंसकलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

(तृतीया विभक्ति के बाद शेष पुंल्लिंग के समान हैं।)

अस्मद् = मैं, हम (दोनों लिंगों में समान)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम् (मा)	आवाम् (नौ)	अस्मान् (नः)
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम् (मे)	आवाभ्याम् (नौ)	अस्मभ्यम् (नः)
पंचमी	मत्	आवाभ्याम् (नौ)	अस्मत्
षष्ठी	मम (मे)	आवयोः (नौ)	अस्माकम् (नः)
सप्तमी	मयि	आवयोः (नौ)	अस्मासु

युष्मद् = तू, तुम (दोनों लिंगों में समान)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम् (त्वा)	युवाम्	युष्मान् (वः)
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः (नः)
चतुर्थी	तुभ्यम् (ते)	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम् (वः)
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव (ते)	युवयोः	युष्माकम् (वः)
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

यत् = जो (पुंल्लिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पंचमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

यत् = जो (स्त्रीलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पंचमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

यत् = जो (नपुंसकलिंग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि

(शेष रूप पुंल्लिंग के समान होंगे)

ध्यातव्यम्

- शब्द रूपों में संधि के कारण कुछ परिवर्तन हो जाते हैं।
- सर्वनाम शब्दों के संबोधन रूप नहीं होते।
- एकवचन के शब्द रूप के साथ एकवचन, द्विवचन के शब्द रूप के साथ द्विवचन तथा बहुवचन के शब्द रूप के साथ बहुवचन की क्रिया का प्रयोग होता है।
- रूपों को पहले विभक्ति के अनुसार, फिर वचनों के अनुसार भी याद कर लें।
- रूपों की वर्तनी का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- तृतीया, चतुर्थी तथा पंचमी विभक्ति के द्विवचन पद एक जैसे ही होते हैं। इसी तरह षष्ठी व सप्तमी विभक्ति के द्विवचन तथा अधिकतर प्रथमा व द्वितीया विभक्ति के द्विवचन रूप भी एक ही होते हैं।
- शुद्ध वर्तनी लिखने के लिए उच्चारण भी शुद्ध करना चाहिए।

स्मरणीया: बिन्दव:

1. संस्कृत भाषा में तीन लिंग होते हैं।
2. प्रत्येक लिंग के रूप अलग-अलग चलते हैं।
3. अंतिम अक्षर समान हो तो लिंगानुसार रूप प्राय: एक जैसे ही चलते हैं।
4. आ से अंत होने वाले शब्दों को आकारान्त कहते हैं तथा आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप प्राय: एक समान चलते हैं।
5. 'ऋ' 'र्' तथा 'ष्' के बाद स्वरयुक्त 'न्' आए तो वह ण् हो जाता है, परंतु पदान्त 'न्' का ण् नहीं होता।

प्रायोगिकाभ्यास:

I. मञ्जूषात: समुचितपदेन चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(मंजूषा से उचित पद चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

1. हरि (विष्णु, वानर)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरि:	.....	हरय:
द्वितीया	हरिम्	हरी	.....
तृतीया	हरिणा	.....	हरिभि:
चतुर्थी	.....	हरिभ्याम्	हरिभ्य:
पंचमी	.....	हरिभ्याम्	हरिभ्य:
षष्ठी	हरे:	.....	हरीणाम्
सप्तमी	.....	हर्यो:	.....
सम्बोधन	हे हरे !	.....	हे हरय:!

हर्यो:, हरीन्, हरौ, हरिषु, हे हरी, हरिभ्याम्, हरये, हरे:, हरी

2. सखा (मित्र)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	.....
द्वितीया	सखायम्	.....	.....
तृतीया	सख्या	.....	सखिभि:

चतुर्थी	.....	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पंचमी	.....	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	.....
सप्तमी	.....	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे!	हे सखायौ!	.....

सखायौ, सखीनाम्, सखीन्, सखायः, सख्युः, हे सखायः!, सख्ये, सख्यौ, सखिभ्याम्

3. महाराज (महाराजा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	महाराजः	महाराजौ	.....
द्वितीया	महाराजम्	.....	महाराजान्
तृतीया	.....	महाराजाभ्याम्	महाराजैः
चतुर्थी	.....	.....	महाराजेभ्यः
पंचमी	.....	महाराजाभ्याम्	.....
षष्ठी	महाराजस्य	.....	महाराजानाम्
सप्तमी	महाराजे	महाराजयोः	.....
सम्बोधन	हे महाराज!	हे महाराजौ!	.....

महाराजात्, महाराजेभ्यः, हे महाराजाः!, महाराजेषु, महाराजाभ्याम्, महाराजाय, महाराजेन, महाराजयोः, महाराजौ, महाराजाः

4. साधु (सज्जन)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	साधुः	.....	साधवः
द्वितीया	साधुम्	साधू	.....
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	.....
चतुर्थी	.....	.....	साधुभ्यः
पंचमी	.....	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
षष्ठी	साधोः	साध्वोः	.....
सप्तमी	.....	साध्वोः	साधुषु
सम्बोधन	हे साधो!	.....	हे साधवः!

साधौ, हे साधू!, साधू, साधून्, साधुभिः, साधुभ्याम्, साधूनाम्, साधवे, साधोः

5. कर्तृ (कर्ता)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कर्ता	.....	कर्तारः
द्वितीया	.....	कर्तारौ	कर्तॄन्
तृतीया	कर्त्रा	.....	कर्तृभिः
चतुर्थी	.....	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
पंचमी	कर्तुः	कर्तृभ्याम्	.....
षष्ठी	कर्तुः	.....	कर्तॄणाम्
सप्तमी	.....	कर्त्रोः	.....
सम्बोधन	.....	हे कर्तारौ !	.....

कर्तृभ्यः, कर्त्रोः, कर्तारौ, कर्तृभ्याम्, कर्तारम्, कर्त्रे, हे कर्तारः!, कर्तृषु, कर्तरि, हे कर्तः

6. दातृ (दाता)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	.....	दातारौ	दातारः
द्वितीया	दातारम्	.....	दातॄन्
तृतीया	दात्रा	दातृभ्याम्	.....
चतुर्थी	.....	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पंचमी	दातुः	दातृभ्याम्	.....
षष्ठी	.....	.....	दातॄणाम्
सप्तमी	.....	दात्रोः	दातृषु
सम्बोधन	हे दातः!	.....	हे दातारः!

दातृभ्यः, दातारौ, दाता, दात्रोः, दातुः, दातृभिः, हे दातारौ!, दात्रे, दातरि

7. रात्रि (रात)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	.....	रात्री	.....
द्वितीया	.....	रात्री	रात्रीः
तृतीया	.....	रात्रिभ्याम्	रात्रिभिः
चतुर्थी	...../रात्र्यै:	.....	रात्रिभ्यः
पंचमी	...../रात्र्याः	रात्रिभ्याम्	रात्रिभ्यः
षष्ठी	...../रात्र्याः	रात्र्योः	रात्रीणाम्
सप्तमी	...../रात्र्याम्	रात्र्योः	रात्रिषु
सम्बोधन	हे रात्रे!	हे रात्री!	हे रात्रयः!

रात्रेः, रात्रिः, रात्रेः, रात्रयः, रात्रिम्, रात्रौ, रात्र्या, रात्रिभ्याम्, रात्रये

8. स्त्री (औरत/पत्नी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	.....	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	.....	स्त्रियौ	स्त्रियः/स्त्रीः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	.....
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	.....
पंचमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	.....
षष्ठी	स्त्रियाः	.....	.....
सप्तमी	.....	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	.....	हे स्त्रियौ !	हे स्त्रियः !

स्त्रीभ्यः, स्त्री, स्त्रियोः, स्त्रीणाम्, स्त्रियम्, स्त्रीभिः, स्त्रियाम्, हे स्त्रि !, स्त्रीभ्यः

9. दधि (दही)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दधि	दधिनी	.....
द्वितीया	दधि	.....	.....
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने	.....	.....
पंचमी	दध्नः	दधिभ्याम्	.....
षष्ठी	दध्नः	दध्नोः	.....
सप्तमी	दध्नि/दधिनि	.....	दधिषु
सम्बोधन	हे दधे !/हे दधि !	हे दधिनी !	.....

दधिभ्यः, दधीनि, दध्नाम्, दधिनी, दधीनि, दधिभ्याम्:, दध्नोः, हे दधीनि !, दधिभ्यः

10. अश्रु (आँसू)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अश्रु	अश्रुणी	.....
द्वितीया	अश्रु	.....	अश्रूणि
तृतीया	.....	अश्रुभ्याम्	अश्रुभिः
चतुर्थी	.....	अश्रुभ्याम्	अश्रुभ्यः
पंचमी	.....	अश्रुभ्याम्	अश्रुभ्यः
षष्ठी	.....	अश्रुणोः	अश्रूणाम्
सप्तमी	.....	अश्रुणोः	.....
सम्बोधन	हे अश्रो!/हे अश्रु!	हे अश्रुणी!	.....

अश्रुणः, अश्रुणी, अश्रुणः, अश्रूणि, अश्रुणि, अश्रुषु, हे अश्रूणि! अश्रुणा, अश्रुणे

5 धातुरूप-प्रकरणम्

संस्कृत की सभी धातुओं को दस गणों में बाँटा गया है। एक गण के धातुओं के नौ रूप कुछ विशेषता को लिए हुए प्राय: समान ही होते हैं। किसी एक प्रमुख धातु से उस गण का नाम आरंभ कर दिया गया है; यथा–भू आदि धातुएँ जिस गण में हैं वह भ्वादिगण है तथा चुर् आदि धातुएँ जिस गण में हैं वह चुरादिगण है।

दस गण
1 भ्वादिगण = √भू इत्यादि
2 अदादिगण = √अद् आदि
3 जुहोत्यादिगण = √हु आदि
4 दिवादिगण = √दिव् आदि
5 स्वादिगण = √सु आदि
6 तुदादिगण = √तुद् आदि
7 रुधादिगण = √रुध् आदि
8 तनादिगण = √तन् आदि
9 क्रयादिगण = √क्री आदि
10 चुरादिगण = √चुर् आदि

आप जानते हैं कि क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। भाषा में इनका प्रयोग करने के लिए विभिन्न लकारों, पुरुष तथा वचन के अनुसार अलग-अलग विभक्तियाँ (प्रत्यय) लगाकर क्रिया पद बनाया जाता है। ये विभक्तियाँ दो प्रकार की हैं–आत्मनेपद तथा परस्मैपद। प्रत्येक धातु के रूप या तो परस्मैपद में या आत्मनेपद में चलते हैं। √दा इत्यादि कुछ धातुओं के रूप दोनों पदों में चलते हैं। ऐसी धातुओं को उभयपदी कहते हैं।

दस लकारों में प्रत्ययों की भिन्नता के कारण इन धातुओं का स्वरूप अलग-अलग हो जाता है। ये दस लकार सामने लिखे गए हैं :

हम केवल प्रथम पाँच लकारों में परस्मैपद की प्रमुख धातुओं के रूपों का अध्ययन करेंगे।

दस लकार
1 *लट् लकार
2 *लृट् लकार
3 *लङ् लकार
4 *लोट् लकार
5 *विधिलिङ् लकार
6 लिट् लकार
7 लुट् लकार
8 लेट् लकार
9 लुङ् लकार
10 लृङ् लकार

प्रथम पुरुष के कर्ता के साथ प्रथम पुरुष की क्रिया का प्रयोग होता है। यह न श्रोता होता है न वक्ता होता है। मध्यम पुरुष अर्थात् श्रोता के साथ मध्यम पुरुष की ही क्रिया लगेगी तथा उत्तम पुरुष के साथ केवल उत्तम पुरुष की ही क्रिया लगेगी। भवत् शब्द के साथ केवल प्रथम पुरुष का प्रयोग होता है। कर्ता तथा क्रिया का वचन एक ही होता है।

कर्तृवाच्य तालिका (लट् लकार)

	एकवचन भवान्, बालः, बाला, सः, तत्, एतत्, सा, देवः, छात्रा, मित्रम्	द्विवचन भवन्तौ, बालौ, बाले, तौ, ते, एते, ते, देवौ, छात्रे, मित्रे	बहुवचन भवन्तः, बालाः, बालाः, ते, तानि, एतानि, ताः, देवाः, छात्रा, मित्राणि
प्रथम पुरुष	— + पठति	+ पठतः	+ पठन्ति
मध्यम पुरुष	— त्वम् + पठसि	युवाम् + पठथः	यूयम् + पठथ
उत्तम पुरुष	— अहम् + पठामि	आवाम् + पठावः	वयम् + पठामः

सभी **लकारों** में यह नियम समान रूप से चलता है।

1. √ गम् /गच्छ् (जाना)

लट् लकार (वर्तमान काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	(**सः**) गच्छति	(**तौ**) गच्छतः	(**ते**) गच्छन्ति
	(वह जाता है।)	(वे दो जाते हैं।)	(वे सब जाते हैं।)
मध्यम पुरुष	(**त्वम्**) गच्छसि	(**युवाम्**) गच्छथः	(**यूयम्**) गच्छथ
	(तुम जाते/जाती हो।)	(तुम दो जाते/जाती हो।)	(तुम सब जाते/जाती हो।)
उत्तम पुरुष	(**अहम्**) गच्छामि	(**आवाम्**) गच्छावः	(**वयम्**) गच्छामः
	(मैं जाता/जाती हूँ।)	(हम दो जाते/जाती हैं।)	(हम सब जाते/जाती हैं।)

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	(**नदी**) गमिष्यति	(**नद्यौ**) गमिष्यतः	(**नद्यः**) गमिष्यन्ति
	(नदी जाएगी।)	(दो नदियाँ जाएँगी।)	(अनेक नदियाँ जाएँगी।)
मध्यम पुरुष	(**त्वम्**) गमिष्यसि	(**युवाम्**) गमिष्यथः	(**यूयम्**) गमिष्यथ
	(तुम जाओगे/जाओगी।)	(तुम दो जाओगे/जाओगी।)	(तुम सब जाओगे/जाओगी।)
उत्तम पुरुष	(**अहम्**) गमिष्यामि	(**आवाम्**) गमिष्यावः	(**वयम्**) गमिष्यामः
	(मैं जाऊँगी/जाऊँगा।)	(हम दो जाएँगी/जाएँगे।)	(हम सब जाएँगी/जाएँगे।)

लङ् लकार (भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	(**सः**) अगच्छत्	(**तौ**) अगच्छताम्	(**ते**) अगच्छन्
	(वह गया।)	(वे दो गए।)	(वे सब गए।)
मध्यम पुरुष	(**त्वम्**) अगच्छः	(**युवाम्**) अगच्छतम्	(**यूयम्**) अगच्छत
	(तुम गए/गई।)	(तुम दो गए/गई।)	(तुम सब गए/गई।)
उत्तम पुरुष	(**अहम्**) अगच्छम्	(**आवाम्**) अगच्छाव	(**वयम्**) अगच्छाम
	(मैं गई/गया।)	(हम दो गईं/गए।)	(हम सब गईं/गए।)

लोट् लकार (आज्ञा/प्रार्थना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	(**सः**) गच्छतु	(**तौ**) गच्छताम्	(**ते**) गच्छन्तु
	(वह जाए।)	(वे दो जाएँ।)	(वे सब जाएँ।)
	(वह जाए?)	(वे दो जाएँ?)	(वे सब जाएँ?)
मध्यम पुरुष	(**त्वम्**) गच्छ	(**युवाम्**) गच्छतम्	(**यूयम्**) गच्छत
	(तुम जाओ।)	(तुम दो जाओ।)	(तुम सब जाओ।)
उत्तम पुरुष	(**अहम्**) गच्छानि	(**आवाम्**) गच्छाव	(**वयम्**) गच्छाम
	(मैं जाऊँ?)	(हम दो जाएँ?)	(हम सब जाएँ?)

विधिलिङ् लकार (चाहिए/संभावना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	(**सः**) गच्छेत्	(**तौ**) गच्छेताम्	(**ते**) गच्छेयुः
	(उसको जाना चाहिए।)	(उन दो को जाना चाहिए।)	(उन सबको जाना चाहिए।)
मध्यम पुरुष	(**त्वम्**) गच्छेः	(**युवाम्**) गच्छेतम्	(**यूयम्**) गच्छेत
	(तुमको जाना चाहिए।)	(तुम दो को जाना चाहिए।)	(तुम सबको जाना चाहिए।)
उत्तम पुरुष	(**अहम्**) गच्छेयम्	(**आवाम्**) गच्छेव	(**वयम्**) गच्छेम
	(मुझको जाना चाहिए।)	(हम दो को जाना चाहिए।)	(हम सबको जाना चाहिए।)

- ठीक इसी प्रकार सब धातुओं के अर्थों को धातु व लकार के अनुसार समझना चाहिए।

2. √नम् (नमस्कार करना/झुकना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नमति	नमतः	नमन्ति
मध्यम पुरुष	नमसि	नमथः	नमथ
उत्तम पुरुष	नमामि	नमावः	नमामः

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नंस्यति	नंस्यतः	नंस्यन्ति
मध्यम पुरुष	नंस्यसि	नंस्यथः	नंस्यथ
उत्तम पुरुष	नंस्यामि	नंस्यावः	नंस्यामः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनमत्	अनमताम्	अनमन्
मध्यम पुरुष	अनमः	अनमतम्	अनमत
उत्तम पुरुष	अनमम्	अनमाव	अनमाम

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नमतु	नमताम्	नमन्तु
मध्यम पुरुष	नम	नमतम्	नमत
उत्तम पुरुष	नमानि	नमाव	नमाम

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नमेत्	नमेताम्	नमेयुः
मध्यम पुरुष	नमेः	नमेतम्	नमेत
उत्तम पुरुष	नमेयम्	नमेव	नमेम

3. √चल् (चलना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चलति	चलतः	चलन्ति
मध्यम पुरुष	चलसि	चलथः	चलथ
उत्तम पुरुष	चलामि	चलावः	चलामः

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चलिष्यति	चलिष्यतः	चलिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चलिष्यसि	चलिष्यथः	चलिष्यथ
उत्तम पुरुष	चलिष्यामि	चलिष्यावः	चलिष्यामः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचलत्	अचलताम्	अचलन्
मध्यम पुरुष	अचलः	अचलतम्	अचलत
उत्तम पुरुष	अचलम्	अचलाव	अचलाम

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चलतु	चलताम्	चलन्तु
मध्यम पुरुष	चल	चलतम्	चलत
उत्तम पुरुष	चलानि	चलाव	चलाम

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चलेत्	चलेताम्	चलेयुः
मध्यम पुरुष	चलेः	चलेतम्	चलेत
उत्तम पुरुष	चलेयम्	चलेव	चलेम

4. √ खाद् (खाना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खादति	खादतः	खादन्ति
मध्यम पुरुष	खादसि	खादथः	खादथ
उत्तम पुरुष	खादामि	खादावः	खादामः

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खादिष्यति	खादिष्यतः	खादिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	खादिष्यसि	खादिष्यथः	खादिष्यथ
उत्तम पुरुष	खादिष्यामि	खादिष्यावः	खादिष्यामः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अखादत्	अखादताम्	अखादन्
मध्यम पुरुष	अखादः	अखादतम्	अखादत
उत्तम पुरुष	अखादम्	अखादाव	अखादाम

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खादतु	खादताम्	खादन्तु
मध्यम पुरुष	खाद	खादतम्	खादत
उत्तम पुरुष	खादानि	खादाव	खादाम

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खादेत्	खादेताम्	खादेयुः
मध्यम पुरुष	खादेः	खादेतम्	खादेत
उत्तम पुरुष	खादेयम्	खादेव	खादेम

5. √ पा/पिब् (पीना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुष	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उत्तम पुरुष	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुष	पिब	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
मध्यम पुरुष	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उत्तम पुरुष	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

6. √ पत् (गिरना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पतति	पतत:	पतन्ति
मध्यम पुरुष	पतसि	पतथ:	पतथ
उत्तम पुरुष	पतामि	पताव:	पताम:

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पतिष्यति	पतिष्यत:	पतिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पतिष्यसि	पतिष्यथ:	पतिष्यथ
उत्तम पुरुष	पतिष्यामि	पतिष्याव:	पतिष्याम:

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपतत्	अपताम्	अपतन्
मध्यम पुरुष	अपत:	अपतम्	अपत
उत्तम पुरुष	अपतम्	अपाव	अपाम

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पतु	पताम्	पन्तु
मध्यम पुरुष	पत	पतम्	पत
उत्तम पुरुष	पतानि	पताव	पताम

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पतेत्	पेताम्	पतेयु:
मध्यम पुरुष	पते:	पेतम्	पेत
उत्तम पुरुष	पतेयम्	पेव	पेम

7. √ स्मृ (याद करना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्मरति	स्मरत:	स्मरन्ति
मध्यम पुरुष	स्मरसि	स्मरथ:	स्मरथ
उत्तम पुरुष	स्मरामि	स्मराव:	स्मराम:

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्मरिष्यति	स्मरिष्यतः	स्मरिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्मरिष्यसि	स्मरिष्यथः	स्मरिष्यथ
उत्तम पुरुष	स्मरिष्यामि	स्मरिष्यावः	स्मरिष्यामः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्मरत्	अस्मरताम्	अस्मरन्
मध्यम पुरुष	अस्मरः	अस्मरतम्	अस्मरत
उत्तम पुरुष	अस्मरम्	अस्मराव	अस्माम

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्मरतु	स्मरताम्	स्मरन्तु
मध्यम पुरुष	स्मर	स्मरतम्	स्मरत
उत्तम पुरुष	स्मरम्	स्मराव	स्माम

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्मरेत्	स्मरेताम्	स्मरेयुः
मध्यम पुरुष	स्मरेः	स्मरेतम्	स्मरेत
उत्तम पुरुष	स्मरेयम्	स्मरेयाव	स्मरेयाम

8. √भू (होना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
मध्यम पुरुष	भवेः	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

9. √ पठ् (पढ़ना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

10. √ नृत् (नृत्य करना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
मध्यम पुरुष	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
उत्तम पुरुष	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नर्तिष्यसि	नर्तिष्यथः	नर्तिष्यथ
उत्तम पुरुष	नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
मध्यम पुरुष	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
उत्तम पुरुष	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
मध्यम पुरुष	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
उत्तम पुरुष	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
मध्यम पुरुष	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
उत्तम पुरुष	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

11. √अस् (होना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यम पुरुष	असि	स्थः	स्थ
उत्तम पुरुष	अस्मि	स्वः	स्मः

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम पुरुष	आसीः	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
मध्यम पुरुष	एधि	स्तम्	स्त
उत्तम पुरुष	असानि	असाव	असाम

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्यात्	स्याताम्	स्युः
मध्यम पुरुष	स्याः	स्यातम्	स्यात
उत्तम पुरुष	स्याम्	स्याव	स्याम

12. √स्पृश् (स्पर्श करना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्पृशति	स्पृशतः	स्पृशन्ति
मध्यम पुरुष	स्पृशसि	स्पृशथः	स्पृशथ
उत्तम पुरुष	स्पृशामि	स्पृशावः	स्पृशामः

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्प्रक्ष्यति	स्प्रक्ष्यतः	स्प्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्प्रक्ष्यसि	स्प्रक्ष्यथः	स्प्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	स्प्रक्ष्यामि	स्प्रक्ष्यावः	स्प्रक्ष्यामः

अथवा लृट् लकार इस प्रकार भी मान्य है-

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्पर्क्ष्यति	स्पर्क्ष्यतः	स्पर्क्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्पर्क्ष्यसि	स्पर्क्ष्यथः	स्पर्क्ष्यथ
उत्तम पुरुष	स्पर्क्ष्यामि	स्पर्क्ष्यावः	स्पर्क्ष्यामः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्पृशत्	अस्पृशताम्	अस्पृशन्
मध्यम पुरुष	अस्पृशः	अस्पृशतम्	अस्पृशत
उत्तम पुरुष	अस्पृशम्	अस्पृशाव	अस्पृशाम

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्पृशतु	स्पृशताम्	स्पृशन्तु
मध्यम पुरुष	स्पृश	स्पृशतम्	स्पृशत
उत्तम पुरुष	स्पृशानि	स्पृशाव	स्पृशाम

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्पृशेत्	स्पृशेताम्	स्पृशेयुः
मध्यम पुरुष	स्पृशेः	स्पृशेतम्	स्पृशेत
उत्तम पुरुष	स्पृशेयम्	स्पृशेव	स्पृशेम

ध्यातव्यम्

- क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं।
- एक ही धातु के अनेक अर्थ हो सकते हैं।
- सभी धातु रूपों का प्रयोग तीनों लिंगों में समान रूप से किया जाता है।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. संस्कृत के सभी धातुओं को दस गणों में विभाजित किया गया है।
2. प्रत्येक गण के सभी रूपों में विशेष समानता होती है।
3. धातुओं के रूप दो पदों में चलते हैं–परस्मैपद और आत्मनेपद। कुछ धातुएँ उभयपदी भी होती हैं।
4. प्रथम पुरुष के कर्ता के साथ प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष के साथ मध्यम पुरुष तथा उत्तम पुरुष के साथ उत्तम पुरुष की क्रिया का ही प्रयोग किया जाता है।
5. एकवचन के कर्ता के साथ एकवचन, द्विवचन के कर्ता के साथ द्विवचन तथा बहुवचन के कर्ता के साथ बहुवचन के क्रियापद का ही प्रयोग किया जाता है।

प्रायोगिकाभ्यासः

मञ्जूषातः समुचितधातुरूपाणि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।
(मंजूषा से उचित धातु रूपों को चुनकर रिक्तस्थानों को पूरा कीजिए।)

1. √ वस् (रहना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	वसति	.....	वसन्ति
म॰ पु॰	.....	वसथः	वसथ
उ॰पु॰	.....	वसावः	वसामः

वससि, वसामि, वसतः

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	वत्स्यति	.....	वत्स्यन्ति
म॰ पु॰	.....	वत्स्यथः	वत्स्यथ
उ॰पु॰	वत्स्यामि	.....	वत्स्यामः

वत्स्यतः, वत्स्यावः, वत्स्यसि

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	.....	अवसताम्	अवसन्
म॰ पु॰	अवसः	अवसतम्	.....
उ॰पु॰	.....	अवसाव	अवसाम

अवसत, अवसत्, अवसम्

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	वसतु	वसताम्	वसन्तु
म॰ पु॰	.....	.....	वसत
उ॰पु॰	वसानि	वसाव	.....

वस, वसाम, वसतम्

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	वसेत्	.....	वसेयुः
म॰ पु॰	वसेः	वसेतम्	.....
उ॰पु॰	वसेयम्	.....	वसेम

वसेत, वसेताम्, वसेव

2. √ हस् (हँसना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	.....	हसतः	हसन्ति
म॰ पु॰	हससि	.....	हसथ
उ॰पु॰	हसामि	हसावः	.....

हसामः, हसति, हसथः

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	.....	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति
म॰ पु॰	हसिष्यसि	.....	हसिष्यथ
उ॰पु॰	हसिष्यामि	.....	हसिष्यामः

हसिष्यथः, हसिष्यावः, हसिष्यति

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	अहसत्	.....	अहसन्
म॰ पु॰	.....	अहसतम्	अहसत
उ॰पु॰	.....	अहसाव	अहसाम

अहसः, अहसम्, अहसताम्

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	.....	हसताम्	हसन्तु
म॰ पु॰	हस	.....	हसत
उ॰पु॰	.....	हसाव	हसाम

हसतम्, हसानि, हसतु

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	हसेत्	.....	हसेयुः
म॰ पु॰	हसेः	हसेतम्	.....
उ॰पु॰	.....	हसेव	हसेम

हसेनः, हसेयम्, हसेताम्

3. √ रक्ष् (रक्षा करना/रखना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	.....	.....	रक्षन्ति
म॰ पु॰	रक्षसि	रक्षथः	रक्षथ
उ॰पु॰	.....	रक्षावः	रक्षामः

रक्षामि, रक्षतः, रक्षति

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	रक्षिष्यति	.....	रक्षिष्यन्ति
म॰ पु॰	रक्षिष्यसि	रक्षिष्यथः	.....
उ॰पु॰	रक्षिष्यामि	रक्षिष्यावः	.....

रक्षिष्यामः, रक्षिष्यतः, रक्षिष्यथ

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	अरक्षत्	अरक्षताम्	अरक्षन्
म॰ पु॰	अरक्षः	.....	.....
उ॰पु॰	.....	अरक्षाव	अरक्षाम

अरक्षम्, अरक्षत, अरक्षतम्

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	रक्षतु	रक्षताम्	.....
म॰ पु॰	रक्ष	.....	रक्षत
उ॰पु॰	रक्षाणि	रक्षाव	.....

रक्षतम्, रक्षाम, रक्षन्तु

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	रक्षेत्	.....	रक्षेयुः
म॰ पु॰	रक्षेः	रक्षेतम्	.....
उ॰पु॰	रक्षेयम्	.....	रक्षेम

रक्षेत, रक्षेव, रक्षेताम्

4. √ पच् (पकाना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	पचति	पचतः	.....
म॰ पु॰	पचसि	.....	पचथ
उ॰पु॰	.....	पचावः	पचामः

पचथः, पचामि, पचन्ति

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	पक्ष्यति	.....	पक्ष्यन्ति
म॰ पु॰	.....	पक्ष्यथः	पक्ष्यथ
उ॰पु॰	पक्ष्यामि	.....	पक्ष्यामः

पक्ष्यावः, पक्ष्यतः, पक्ष्यसि

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	अपचत्	.....	अपचन्
म॰ पु॰	अपचः	अपचतम्	.....
उ॰पु॰	.....	अपचाव	अपचाम

अपचत, अपचम, अपचताम्

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	.....	पचताम्	पचन्तु
म॰ पु॰	.....	पचतम्	पचत
उ॰पु॰	.....	पचाव	पचाम

पचतु, पचानि, पच।

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	.....	पचेताम्	पचेयुः
म॰ पु॰	पचेः	.....	पचेत
उ॰पु॰	पचेयम्	पचेव	.....

पचेतम्, पचेम, पचेत्

5. √ स्था/तिष्ठ् (ठहरना/रुकना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
म॰ पु॰	.....	.....	तिष्ठथ
उ॰पु॰	तिष्ठामि	तिष्ठावः	.....

तिष्ठामः, तिष्ठसि, तिष्ठथः

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	स्थास्यति	स्थास्यतः	.....
म॰ पु॰	.....	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उ॰पु॰	स्थास्यामि	स्थास्यावः	.....

स्थास्यसि, स्थास्यामः, स्थास्यन्ति

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	.....
म॰ पु॰	.....	अतिष्ठतम्	.....
उ॰पु॰	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

अतिष्ठत, अतिष्ठः, अतिष्ठन्

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	तिष्ठतु	.....	तिष्ठन्तु
म॰ पु॰	तिष्ठ	तिष्ठतम्	.....
उ॰पु॰	तिष्ठानि	तिष्ठाव	.....

तिष्ठत, तिष्ठाम, तिष्ठताम्

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	.....	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
म॰ पु॰	तिष्ठेः	.....	तिष्ठेत
उ॰पु॰	तिष्ठेयम्	.....	तिष्ठेम

तिष्ठेत्, तिष्ठेव, तिष्ठेतम्

6. √ दृश् /पश्य् (देखना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
म॰ पु॰	.....	.....	पश्यथ
उ॰पु॰	पश्यामि	पश्यावः	.....

पश्यथः, पश्यामः, पश्यसि

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	द्रक्ष्यति	.....	.....
म॰ पु॰	.....	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
ऊ॰पु॰	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

द्रक्ष्यतः, द्रक्ष्यन्ति, द्रक्ष्यसि

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	अपश्यत्	.....	अपश्यन्
म॰ पु॰	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
ऊ॰पु॰	.....	अपश्याव	.....

अपश्यम्, अपश्याम, अपश्यताम्

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	पश्यतु	.....	पश्यन्तु
म॰ पु॰	.....	पश्यतम्	पश्यत
ऊ॰पु॰	पश्यानि	पश्याव	.....

पश्य, पश्यताम्, पश्याम

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	.....	पश्येताम्	पश्येयुः
म॰ पु॰	पश्येः	.....	.....
ऊ॰पु॰	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

पश्येत, पश्येतम्, पश्येत्

7. √ कथ् (कहना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	कथयति	कथयतः	.....
म॰ पु॰	.....	.....	कथयथ
ऊ॰पु॰	कथयामि	कथयावः	कथयामः

कथयसि, कथयन्ति, कथयथः

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	कथयिष्यति	कथयिष्यतः	.....
म॰ पु॰	कथयिष्यसि	.....	कथयिष्यथ
ऊ॰पु॰	कथयिष्यामि	कथयिष्यावः	.....

कथयिष्यथः, कथयिष्यामः, कथयिष्यन्ति

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	अकथयत्	अकथयताम्	.....
म॰ पु॰	.....	अकथयतम्	अकथयत
ऊ॰पु॰	अकथयम्	अकथयाव	.....

अकथयः, अकथयाम, अकथयन्

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	.....	.....	कथयन्तु
म॰ पु॰	कथय	कथयतम्	कथयत
ऊ॰पु॰	कथयानि	कथयाव	.....

कथयतु, कथयाम, कथयताम्

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	कथयेत्	.....	कथयेयुः
म॰ पु॰	.....	कथयेतम्	कथयेत
उ॰पु॰	कथयेयम्	कथयेव	.....

कथयेम, कथयेताम्, कथयेः

8. √ भक्ष् (खाना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	भक्षयति	भक्षयतः	भक्षयन्ति
म॰ पु॰	.....	.....	भक्षयथ
उ॰पु॰	भक्षयामि	भक्षयावः	.....

भक्षयामः, भक्षयथः, भक्षयसि

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	भक्षयिष्यति	.....	भक्षयिष्यन्ति
म॰ पु॰	.....	भक्षयिष्यथः	.....
उ॰पु॰	भक्षयिष्यामि	भक्षयिष्यावः	भक्षयिष्यामः

भक्षयिष्यथ, भक्षयिष्यसि, भक्षयिष्यतः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	.....	अभक्षयताम्	अभक्षयन्
म॰ पु॰	अभक्षयः	.....	.....
उ॰पु॰	अभक्षयम्	अभक्षयाव	अभक्षयाम

अभक्षयतम्, अभक्षयत्, अभक्षयत

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	भक्षयतु	भक्षयताम्	भक्षयन्तु
म॰ पु॰	.....	.....	भक्षयत
उ॰पु॰	भक्षयानि	भक्षयाव	.....

भक्षयतम्, भक्षयाम, भक्षय

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	भक्षयेत्	भक्षयेताम्	.....
म॰ पु॰	.....	भक्षयेतम्	भक्षयेत
उ॰पु॰	भक्षयेयम्	.....	भक्षयेम

भक्षयेः, भक्षयेव, भक्षयेयुः

9. √ घ्रा (सूँघना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	.....	जिघ्रतः	जिघ्रन्ति
म॰ पु॰	जिघ्रसि	.....	जिघ्रथ
उ॰पु॰	जिघ्रामि	जिघ्रावः	.....

जिघ्रथः, जिघ्रामः, जिघ्रति

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	.....	घ्रास्यतः	.....
म॰ पु॰	घ्रास्यसि	घ्रास्यथः	घ्रास्यथ
उ॰पु॰	घ्रास्यामि	.....	घ्रास्यामः

घ्रास्यति, घ्रास्यावः, घ्रास्यन्ति

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	अजिघ्रत्	अजिघ्रताम्	.....
म॰ पु॰	अजिघ्रः	.....	अजिघ्रत
उ॰पु॰	.....	अजिघ्राव	अजिघ्राम

अजिघ्रतम्, अजिघ्रम्, अजिघ्रन्

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	जिघ्रतु	जिघ्रताम्	.....
म॰ पु॰	.....	जिघ्रतम्	जिघ्रत
उ॰पु॰	जिघ्रानि	जिघ्राव	.....

जिघ्र, जिघ्राम, जिघ्रन्तु

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	जिघ्रेत्	.....	जिघ्रेयुः
म॰ पु॰	जिघ्रेः	जिघ्रेतम्	.....
उ॰पु॰	.....	जिघ्रेव	जिघ्रेम

जिघ्रेत, जिघ्रेयम्, जिघ्रेताम्

10. √ क्रुध् (गुस्सा करना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	क्रुध्यति	क्रुध्यतः	.....
म॰ पु॰	.....	क्रुध्यथः	क्रुध्यथ
उ॰पु॰	क्रुध्यामि	क्रुध्यावः	.....

क्रुध्यसि, क्रुध्यामः, क्रुध्यन्ति

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	क्रोत्स्यति	क्रोत्स्यतः	.....
म॰ पु॰	.....	.....	क्रोत्स्यथ
उ॰पु॰	क्रोत्स्यामि	क्रोत्स्यावः	क्रोत्स्यामः

क्रोत्स्यथः, क्रोत्स्यन्ति, क्रोत्स्यसि

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	.....	.....	अक्रुध्यन्
म॰ पु॰	अक्रुध्यः	अक्रुध्यतम्	अक्रुध्यत
उ॰पु॰	अक्रुध्यम्	अक्रुध्याव	.....

अक्रुध्यत्, अक्रुध्याम, अक्रुध्यताम्

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	.....	क्रुध्यताम्	.....
म॰ पु॰	क्रुध्य	.....	क्रुध्यत
उ॰पु॰	क्रुध्यानि	क्रुध्याव	क्रुध्याम

क्रुध्यतम्, क्रुध्यतु, क्रुध्यन्तु

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	क्रुध्येत्	क्रुध्येताम्	.....
म॰ पु॰	.....	क्रुध्येतम्	क्रुध्येत
उ॰पु॰	क्रुध्येयम्	क्रुध्येव	.....

क्रुध्येः, क्रुध्येम, क्रुध्येयुः

11. √ हन् (मारना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
म॰ पु॰	हन्सि	.....	.....
ऊ॰पु॰	हन्मि	.....	हन्मः

हथ, हथः, हन्वः

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	.....	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
म॰ पु॰	हनिष्यसि	हनिष्यथः	.....
ऊ॰पु॰	.....	हनिष्यावः	हनिष्यामः

हनिष्यथ, हनिष्यामि, हनिष्यति

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	अहन्	अहताम्	.....
म॰ पु॰	अहनः	.....	अहत
ऊ॰पु॰	अहनम्	.....	अहन्म

अहतम्, अहन्व, अघ्नन्

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	हन्तु	हताम्	.....
म॰ पु॰	जहि	हतम्	.....
ऊ॰पु॰	हनानि	हनाव	.....

हत, हनाम, घ्नन्तु

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	हन्यात्	.....	हन्युः
म॰ पु॰	.....	हन्यातम्	हन्यात
ऊ॰पु॰	हन्याम्	हन्याव	.....

हन्याताम्, हन्याः, हन्याम

12. √ श्रु (सुनना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	शृणोति	.....	शृण्वन्ति
म॰ पु॰	शृणोषि	शृणुथः	.....
ऊ॰पु॰	.....	शृणुवः/शृण्वः	शृणुमः/शृण्मः

शृणुथ, शृणोमि, शृणुतः

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	.....	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
म॰ पु॰	श्रोष्यसि	.....	श्रोष्यथ
ऊ॰पु॰	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	.....

श्रोष्यामः, श्रोष्यति, श्रोष्यथः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	.....	अशृणुताम्	अशृण्वन्
म॰ पु॰	अशृणोः	.....	अशृणुत
ऊ॰पु॰	.....	अशृणुव/अशृण्व	अशृणुम/अशृण्म

अशृणुतम्, अशृण्वम्, अशृणोत्

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	शृणोतु	शृणुताम्	.....
म॰ पु॰	शृणु	.....	शृणुत
ऊ॰पु॰	.....	शृण्वाव	शृण्वाम

शृण्वानि, शृण्वन्तु, शृणुतम्

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	शृणुयात्	शृणुयाताम्	.....
म॰ पु॰	.....	.....	शृणुयात
ऊ॰पु॰	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम

शृणुयातम्, शृणुयाः, शृणुयुः

13. √ तुद् (सताना/दुःख देना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	तुदति	.....	तुदन्ति
म॰ पु॰	तुदसि	तुदथः	.....
ऊ॰पु॰	तुदामि	तुदावः	.....

तुदामः, तुदथ, तुदतः

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	तोत्स्यति	.....	.....
म॰ पु॰	तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ
ऊ॰पु॰	तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	.....

तोत्स्यन्ति, तोत्स्यामः, तोत्स्यतः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	.....	अतुदताम्	अतुदन्
म॰ पु॰	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत
ऊ॰पु॰	.....	अतुदाव	.....

अतुदम्, अतुदाम, अतुदत्

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	.....	तुदताम्	.....
म॰ पु॰	तुद	तुदतम्	तुदत
ऊ॰पु॰	तुदानि	तुदाव	.....

तुदाम, तुदन्तु, तुदतु

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	तुदेत्	.....	तुदेयुः
म॰ पु॰	तुदेः	तुदेतम्	.....
ऊ॰पु॰	तुदेयम्	.....	तुदेम

तुदेत, तुदेताम्, तुदेव

14. √ चुर् (चुराना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	चोरयति	.....	चोरयन्ति
म॰ पु॰	चोरयसि	.....	चोरयथ
ऊ॰पु॰	चोरयामि	.....	चोरयामः

चोरयतः, चोरयावः, चोरयथः

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	चोरयिष्यति	.....	चोरयिष्यन्ति
म॰ पु॰	.....	चोरयिष्यथः	.....
उ॰पु॰	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

चोरयिष्यसि, चोरयिष्यतः, चोरयिष्यथ

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	अचोरयत्	अयोरयताम्	.....
म॰ पु॰	अचोरयः	.....	.....
उ॰पु॰	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

ओचरयत, अचोरयतम्, अचोरयन्

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	चोरयतु	.....	चोरयन्तु
म॰ पु॰	.....	चोरयतम्	चोरयत
उ॰पु॰	चोरयाणि	चोरयाव	.....

चोरयाम, चोरयताम्, चोरय

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	चोरयेत्	.....	चोरयेयुः
म॰ पु॰	चोरयेः	चोरयेतम्	.....
उ॰पु॰	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

चोरयेताम्, चोरयेम, चोरयेत

15. √ वद् (बोलना)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	वदति	.....	वदन्ति
म॰ पु॰	वदसि	वदथः	वदथ
उ॰पु॰	.....	वदावः	.....

वदामः, वदतः, वदामि

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति
म॰ पु॰	.....	वदिष्यथः	वदिष्यथ
उ॰पु॰	वदिष्यामि	.....	.....

वदिष्यसि, वदिष्यावः, वदिष्यामः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	अवदत्	अवदताम्	.....
म॰ पु॰	अवदः	अवदतम्	.....
उ॰पु॰	अवदम्	अवदाव	.....

अवदत, अवदाम, अवदन्

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	वदतु	.....	वदन्तु
म॰ पु॰	वद	वदतम्	.....
उ॰पु॰	वदानि	वदाव	.....

वदाम, वदताम्, वदत

विधिलिङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र॰ पु॰	वदेत्	वदेताम्	.....
म॰ पु॰	वदेः	वदेतम्	.....
उ॰पु॰	वदेयम्	वदेव	.....

वदेम, वदेत, वदेयुः

6 पर्यायाः एवम् विपर्ययाः

1 पर्यायाः

समान अर्थ को बताने वाले सभी शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। पूरे संसार में **संस्कृत** ही एकमात्र ऐसी भाषा है जिसके विशाल शब्द भंडार में एक ही शब्द के सौ से भी अधिक पर्यायवाची शब्द मिल सकते हैं। एक पद के प्रायः सभी पर्यायवाची पदों के लिंग समान होते हैं तथा उनके साथ उपपद विभक्ति के नियमों का प्रयोग भी समान रूप से किया जाना चाहिए। कभी-कभी लिंग अलग भी हो सकते हैं; यथा-'उद्यानम्' तथा 'उपवनम्' नपुंसकलिंग पद हैं तथा उन्हीं का पर्याय पद 'वाटिका' स्त्रीलिंग पद है। कुछ शब्दों के पर्यायवाची शब्द निम्नलिखित हैं :

1. आशु = शीघ्रम्, अचिरम्
2. ईश्वरः = स्वामी
3. वरः = श्रेष्ठः
4. लब्ध्वा = प्राप्त्वा, प्राप्य
5. कर्त्तव्यम् = करणीयम्
6. छात्रः = शिक्षार्थी, विद्यार्थी
7. समयः = कालः
8. अस्ति = वर्तते
9. सज्जः = तत्परः
10. रत्नाकरः = जलधिः, सागरः
11. सोमः = चन्द्रः, इन्दुः
12. तारिका = तिथिः
13. साधुः = सज्जनः
14. लोचनम् = अक्षिः
15. पर्णम् = पत्रम्
16. पाषाणम् = अश्मः
17. अन्तरम् = कालांशः
18. सौचिकः = सीवकः
19. व्याधः = आखेटकः
20. महानसम् = रसवती
21. शूकरः = वराहः
22. शिखण्डी = मयूरः
23. वल्लरी = लता
24. नितराम् = निरन्तरम्, सततम्
25. पूज्यः = वन्द्यः
26. मुकुटम् = किरीटम्
27. वृक्षः = महीरुहः
28. खलः = दुष्टः
29. उन्नतिः = प्रगतिः
30. पूतम् = पवित्रम्
31. सकलः = सर्वः
32. एवम् = इत्थम्
33. वत्सः = पुत्रः
34. वीथिः = रथ्या
35. चेष्टा = प्रयत्नः, प्रयासः
36. पटुः = चतुरः, दक्षः, प्रवीणः, कुशलः
37. तिमिरः = अंधकारः
38. नापितः = भाण्डिकः
39. भालम् = ललाटम्, मस्तकम्
40. पुत्रवधूः = स्नुषा
41. प्रपातः = निर्झरः, वारिप्रवाहः
42. विमलम् = स्वच्छम्, निर्मलम्
43. कार्षः = कृषकः
44. कुटुम्बम् = कुटुम्बकम्, परिवारः
45. वक्रः = कुटिलः
46. केशप्रसाधनी = केशमार्जकम्
47. भिक्षुः = भिक्षाकः, भिक्षुकः
48. ख्यातिः = कीर्तिः, प्रसिद्धिः
49. वह्निः = अग्निः, अनलः
50. सुरभिः = सुगन्धः, सुवासः
51. जलम् = उदकम्, सलिलम्

2 विपर्ययाः

विपरीत अर्थ बताने वाले शब्द विपर्यय कहलाते हैं। कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :

1. पक्षः	=	विपक्षः	8. राज्ञी	=	चेटी	15. इच्छा	=	अनिच्छा
2. गत्वा	=	आगत्य	9. अभिनवः	=	पुरातनः	16. सुलभः	=	दुर्लभः
3. क्रयम्	=	विक्रयम्	10. मंगलम्	=	अमंगलम्	17. प्रभूतम्	=	अल्पम्
4. सत्यम्	=	असत्यम्	11. प्रसन्नः	=	अप्रसन्नः	18. पक्षः	=	विपक्षः
5. ज्ञानम्	=	अज्ञानम्	12. जयः	=	पराजयः	19. खाद्यम्	=	अखाद्यम्
6. पूर्णः	=	अपूर्णः	13. प्रतिदिनम्	=	यदा-कदा	20. कर्मशीलः	=	कर्महीनः
7. शुभम्	=	अशुभम्	14. खलः	=	साधुः			

ध्यातव्यम्

- पर्याय अथवा विपर्यय पदों में समान विभक्ति होनी चाहिए। यदि नृपस्य पद है तो पर्याय राज्ञः होना चाहिए।
- कभी-कभी समानार्थी पदों का लिंग भिन्न-भिन्न भी हो जाता है।
- बिना पद बनाए पर्याय या विपर्यय का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- एक जैसे लगने वाले पदों के अर्थों पर विशेष रूप से ध्यान दें।
- वृक्ष के सभी पर्याय प्रायः पुल्लिंग में होते हैं; यथा–द्रुमः, वृक्षः, तरुः आदि।
- पुष्प एवं फल के पर्याय प्रायः नपुंसकलिंग में होते हैं; यथा–पुष्पम्, सुमनम्, कमलम्, जलजम्।
- आम्रः का अर्थ होगा–आम का वृक्ष एवं आम्रम् का अर्थ होगा–आम का फल।
- कमलम्, पंकजम्, जलजम्, नीरजम् सभी नपुंसकलिंग के पद हैं।
- वारिधिः जल को धारण करने वाला समुद्र का पर्याय है, जबकि वारिदः जल को देने वाला घन का पर्यायवाची है।
- द्विजः का अर्थ है–दो बार जन्म लेने वाला। यह पक्षी का पर्याय है, क्योंकि पक्षी का जन्म अंडे से दुबारा होता है। साथ ही यह ब्राह्मण का पर्याय भी है, क्योंकि 'उपनयन' संस्कार होने पर उसका पुनः जन्म माना जाता है।
- अनलः का अर्थ है–अग्नि तथा अनिलः का अर्थ है–पवन। अतएव एक से लगने वाले शब्दों पर विशेष ध्यान दीजिए।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. मञ्जूषातः उचितं पर्याय पदं चित्वा अधोप्रदत्ते अनुच्छेदे स्थूलपदानां स्थाने लिखत।

(मंजूषा से उचित पर्याय शब्द चुनकर नीचे दिए गए अनुच्छेद में स्थूल पदों के स्थान पर लिखिए।)

1. वृक्षाः तु पर्यावरणस्य **2. रक्षकाः** एव। स्वार्थिनः जनाः **3. वनानि** छिन्दन्ति येन वर्षायाः **4. काले** भूस्खलनम् पाषाणस्खलनम् च भवति। **5. नदीषु** जलप्लावनम् अपि भवति। जलप्लावनेन ग्रामेषु **6. गृहाणाम्** क्षेत्राणाम् **7. जनानाम्** च **8. हानिः** भवति। वृक्षाः तु स्वमूलं, शाखां, पत्रं **9. पुष्पं** फलं च दत्त्वा **10. सर्वेषाम्** परोपकारः एव कुर्वन्ति। अतएव वृक्षरक्षणम् अस्माकं कर्त्तव्यम्।

लोकानाम्, अलाभः, तरवः, अरण्याणि, कुसुमम्, सकलानाम्, समये, सरितासु, प्रहरिणः, आलयानाम्।

II. अधोप्रदत्तान् चित्रान् दृष्ट्वा तेषाम् द्वौ पर्यायौ लिखत।

(नीचे दिए गए चित्रों को देखकर उनके लिए दो पर्याय लिखिए।)

1. ....

2. ....

3. ....

4. ....

5. ....

6. ....

7. ....

8. ....

9. ....

10. ....

III. निम्नलिखित पर्यायपदानां समुचितमेलनं कुरुत।

(निम्नलिखित पर्याय पदों का उचित मिलान कीजिए।)

(क) वृक्षः	(*i*) पुत्रः
(ख) सकलः	(*ii*) भाण्डिकः
(ग) दक्षः	(*iii*) रसवती
(घ) तारिका	(*iv*) ललाटम्
(ङ) शूकरः	(*v*) प्रयत्नः
(च) चेष्टा	(*vi*) वराहः
(छ) वत्सः	(*vii*) तिथिः
(ज) नापितः	(*viii*) पटुः
(झ) महानसम्	(*ix*) सर्वः
(ञ) भालम्	(*x*) महीरुहः

IV. निम्नलिखितविपर्ययानां समुचितं मेलनं कुरुत।

(निम्नलिखित विपरीतार्थकों का उचित मिलान कीजिए।)

(क) इच्छा	(*i*) अशुभम्
(ख) पक्षः	(*ii*) चेटी
(ग) प्रभूतम्	(*iii*) अमंगलम्
(घ) अभिनवः	(*iv*) अपूर्णः
(ङ) खलः	(*v*) पराजयः
(च) जयः	(*vi*) साधुः
(छ) पूर्णः	(*vii*) पुरातनः
(ज) राज्ञी	(*viii*) अनिच्छा
(झ) मंगलम्	(*ix*) विपक्षः
(ञ) शुभम्	(*x*) अल्पम्

V. मञ्जूषातः पर्यायान् विपर्ययान् च चित्वा लिखत।

(मंजूषा से पर्याय और विपर्यय शब्दों को चुनकर लिखिए)

पूर्णः, शुभम्, खलः, जयः, सुलभः, श्रेष्ठः, चन्द्रः, पत्रम्, पुत्रः, कुटिलः

(क) दुर्लभः	(*i*) .....
(ख) साधुः	(*ii*) .....
(ग) पराजयः	(*iii*) .....

(घ) अशुभम् (*iv*) ....

(ङ) पर्णम् (*v*) ....

(च) वरः (*vi*) ....

(छ) सोमः (*vii*) ....

(ज) अपूर्णः (*viii*) ....

(झ) वत्सः (*ix*) ....

(ञ) वक्रः (*x*) ....

VI. वर्गप्रहेलिकायाम् अधोलिखितानां पदानां विपर्यया: पर्याया: च सन्ति तान् निर्देशानुसारं चित्वा लिखत।

(वर्ग-पहेली में नीचे लिखे पदों के विपरीतार्थक और पर्याय हैं। निर्देशानुसार उन्हें चुनकर लिखिए।)

न्तः	र्यः	[2] वि	[4] का	लः	सः	पु
रि	धः	क्र	[8] ज	[7] आ	लः	नः
ज	लः	य	ल	ग	क	क
[3] ज्ञा	न	म्	म्	त्य	[5] स	रः
[1] आ	[6] स	घ	न्	व	न्	[9] कृ
शु	त्य	र	वः	त्य	द्य	ष
द्रः	म्	म्य	अ	[10] भि	क्षा	कः

निर्देश

1. शीघ्रम् (पर्यायः, उपरितः अधः)
2. क्रयम् (विपर्ययः, उपरितः अधः)
3. अज्ञानम् (विपर्ययः, वामतः दक्षिणं प्रति)
4. समयः (पर्यायः, वामत दक्षिणं प्रति)
5. सर्वः (पर्यायः, निम्नतः उपरि)
6. असत्यम् (विपर्ययः, उपरितः अधः)
7. गत्वा (विपर्ययः, उपरितः अधः)
8. सलिलम् (पर्यायः, उपरितः अधः)
9. कार्षः (पर्यायः, उपरितः अधः)
10. भिक्षुकः (पर्यायः, वामतः दक्षिणं प्रति)

1. .... 2. .... 3. ....

4. .... 5. .... 6. ....

7. .... 8. .... 9. ....

10. ....

VII. अधोप्रदत्तान् चित्रान् दृष्ट्वा तेभ्यः एकं विपरीतपदं चित्वा लिखत।

(नीचे दिए गए चित्रों को देखकर उनके लिए एक विलोम पद चुनकर लिखिए।)

1. .....

(i) अन्तः (*ii*) बहिः (*iii*) पञ्जरे

2. .....

(*i*) सूदः (*ii*) वत्सः (*iii*) चेटी

3. .....

(*i*) उपरि (*ii*) मञ्चे (*iii*) अधः

4. .....

(*i*) रङ्कः (*ii*) दीनः (*iii*) नृपः

7 समयलेखनम्

प्राचीन काल में समय एक बड़ी-सी धूप घड़ी से देखा जाता था। धूप घड़ियाँ सभी स्थानों पर नहीं बनाई जाती थीं तथा समय देखने के लिए घड़ी तक जाना भी कठिन था। अत: एक घड़ी से समय देखकर 1 बजे का समय होने पर एक घंटा बजा दिया जाता था ताकि सभी को उसकी आवाज़ से समय पता चल जाए। इसी तरह 2, 3 तथा 12 तक समय बताने के लिए 12 बार घंटे को बजा दिया जाता था। इसी से समय के साथ 'बजना' शब्द जुड़ा; जैसे– कितने बजे हैं? एक बजा है। आज कोई घंटा नहीं बजाया जाता फिर भी 'बजना' शब्द समय के साथ क्षीर-नीर के समान मिल गया है। बच्चो! है न मनोरंजक तथ्य। समय लेखन' के लिए हम पूर्ण गोलाकार ले लेते हैं। घड़ी को देखने के लिए गोलाकार के कुछ पदों को समझना होगा :

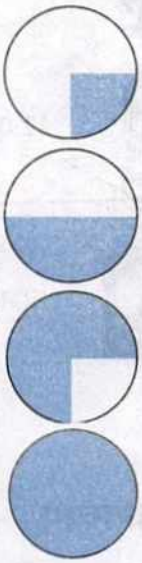

पादम् = चतुर्थांश:

अर्ध: = आधा

पादोन = तीन भाग (केवल एक अंश कम)

पूर्णम् / सामान्य: समय: = पूरा-पूरा, सामान्य समय

1. 3.00 = त्रिवादनम्

2. 1.00 = एकवादनम्

3. 2.00 = द्विवादनम्

4. 6.00 = षड्वादनम्

5. 9.00 = नववादनम्

6. 4.00 = चतुर्वादनम्

7. 5.00 = पञ्चवादनम्

8. 7.00 = सप्तवादनम्

9. 8.00 = अष्टवादनम्

10. 12.00 = द्वादशवादनम्

11. 2.45 = पादोनत्रिवादनम्

12. 10.15 = सपाददशवादनम्

13. 9.30 = सार्धनववादनम्

14. 4.45 = पादोनपञ्चवादनम्

15. 5.45 = पादोनषड्वादनम्

16. 7.30 = सार्धसप्तवादनम्

ध्यातव्यम्

- समय बताते समय ध्यान रखें कि सामान्य रूप से समय पूछा जाए तो जो समय हो रहा हो उसमें 'वादनम्' लगाकर उत्तर देना चाहिए। 'किस समय' पूछा जाए तो समय में 'वादने' लगाकर (सप्तमी विभक्ति में) उत्तर देना चाहिए।
- रिक्त स्थान भरते हुए ध्यान रखें कि वादने या वादनम् लिखा हुआ हो तो केवल समय भरकर उसे रेखांकित कर दें।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. चतुर्थांश का अर्थ है–समय का एक चौथाई हिस्सा अर्थात् 15 मिनट।
2. अर्धः का अर्थ है–तीस मिनट या आधा घंटा।
3. पादोन का अर्थ है–केवल एक चौथाई घंटा कम अर्थात् 15 मिनट कम अर्थात् 45 मिनट।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. अधोप्रदत्तान् घटिकां दृष्ट्वा उचितपदं चित्वा च समयं लिखत।

(नीचे दी गई घड़ियों को देखकर तथा उचित पद चुनकर समय लिखिए।)

1. 3.00 = ...

(*i*) द्वादशवादनम् (*ii*) त्रिवादनम् (*iii*) सपादत्रिवादनम्

2. 2.15 = ...

(*i*) द्विवादनम् (*ii*) पादोनद्विवादनम् (*iii*) सपादद्विवादनम्

3. 3.45 = ...

(*i*) सपादचतुर्वादनम् (*ii*) पादोनचतुर्वादनम् (*iii*) सपादत्रिवादनम्

4. 6.00 = ...

(*i*) द्वादशवादनम् (*ii*) षड्वादनम् (*iii*) सपादद्वादशवादनम्

5. 1.00 = ...

(*i*) द्वादशवादनम् (*ii*) द्विवादनम् (*iii*) एकवादनम्

6. 3.30 = ...

(*i*) त्रिंत्रिंशत्वादनम् (*ii*) सपादत्रिवादनम् (*iii*) सार्धत्रिवादनम्

7. 7.15 = ...

(*i*) सार्धत्रिवादनम् (*ii*) पादोनसप्तवादनम् (*iii*) सपादसप्तवादनम्

8. 2.30 = ...

(*i*) सार्धद्विवादनम् (*ii*) षड्दशवादनम् (*iii*) सार्धषड्वादनम्

9. 3.15 = ...

(*i*) त्रिवादनम् (*ii*) पादोनत्रिवादनम् (*iii*) सपादत्रिवादनम्

10. 4.30 = ...

(*i*) षड्चतुर्वादनम् (*ii*) सपादचतुर्वादनम् (*iii*) सार्धचतुर्वादनम्

11. 5.45 = ...

(*i*) सपादपञ्चवादनम् (*ii*) पादोनषड्वादनम् (*iii*) पादोनपञ्चवादनम्

12. 6.15 = ...

(*i*) सपादषड्वादनम् (*ii*) पादोनषड्वादनम् (*iii*) सपादसप्तवादनम्

13. 7.30 = ...

(*i*) सार्धषड्वादनम् (*ii*) सार्धसप्तवादनम् (*iii*) सपादसप्तवादनम्

14. 8.15 = ...

(*i*) अष्टत्रिवादनम् (*ii*) पादोनअष्टवादनम् (*iii*) सपादअष्टवादनम्

15. 8.45 = ...

(*i*) नववादनम् (*ii*) पादोननववादनम् (*iii*) सपादनववादनम्

16. 4.15 = ...

(*i*) चतुर्वादनम् (*ii*) सपादचतुर्वादनम् (*iii*) पादोनचतुर्वादनम्

17. 7.45 = ...

(*i*) पादोननववादनम् (*ii*) पादोनअष्टवादनम् (*iii*) पादोनसप्तवादनम्

18. 8.30 = ...

(*i*) सार्धषड्वादनम् (*ii*) सार्धसप्तवादनम् (*iii*) सार्धअष्टवादनम्

19. 9.45 = ...

(*i*) सपादनववादनम् (*ii*) पादोननववादनम् (*iii*) पादोनदशवादनम्

20. 10.30 = ...

(*i*) सार्धदशवादनम् (*ii*) सार्धषड्वादनम् (*iii*) सपाददशवादनम्

II. अङ्कैः लिखितं समयं शब्दैः लिखित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(अंकों में लिखे समय को शब्दों में लिखकर रिक्त स्थानों को पूरा कीजिए।)

1. शोनी एका अध्यापिका अस्ति। सा 5.00 ..... वादने उत्तिष्ठति।
2. सा 6:00 ..... वादने सज्जा भवति।
3. शोनी 7:30 ..... वादने विद्यालये प्रविशति।
4. सा 2:45 ..... वादने गृहं गच्छति।
5. सा 3:15 ..... वादने भोजनं पचति।
6. सा 3:30 ..... वादने भोजनं खादति।
7. सा चायपानं 5:45 ..... वादने करोति।
8. शोनी 8:15 ..... वादने रात्रिभोजनं करोति।
9. सा 9:00 ..... भ्रमणाय गच्छति।
10. शोनी 10:00 ..... वादने स्वपिति।

8 संख्याः

संख्यावाची शब्द प्रायः विशेषण के रूप में ही प्रयुक्त किए जाते हैं। इसलिए इनका प्रयोग विशेष्यों के अनुसार किया जाना चाहिए।

अंकतालिका

१ एक

२ द्वि

३ त्रि

४ चतुर्

५ पञ्च

६ षट्

७ सप्त

८ अष्ट

९ नव

१० दश

संख्यावाची शब्द विशेषण होते हैं तथा विशेष्य के अनुसार ही इसके रूप चलते हैं।

	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1. एक:		एका	एकम्
2. द्वौ	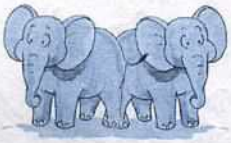	द्वे	द्वे
3. त्रय:	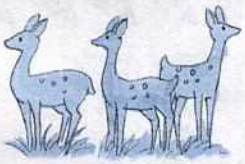	तिस्र:	त्रीणि
4. चत्वार:		चतस्र:	चत्वारि

एक से चार तक संख्या तीनों लिंगों में लिखी जाती है। उसके बाद पञ्च से आगे एक ही तरह से लिखी जाती है। पाँच से उन्नीस तक बहुवचन तथा बीस से आगे की संख्याओं के रूप केवल एकवचन में ही चलेंगे। विंशति शब्द के रूप एकवचन के लिए 'मति' शब्द के रूपों के अनुसार चलेंगे।

5. पञ्च

6. षट्

7. सप्त

8. अष्ट 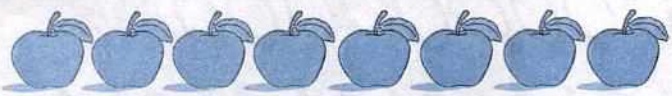

9. नव

10. दश 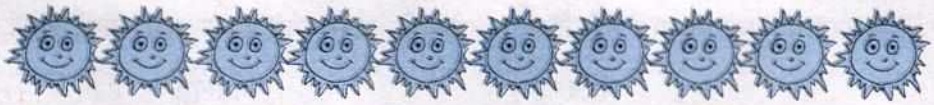

11. एकादश 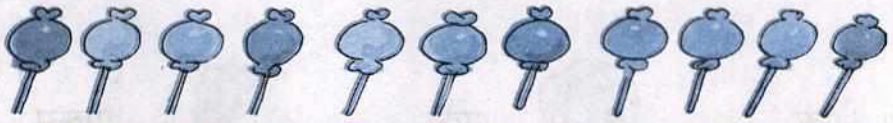

12. द्वादश

13. त्रयोदश

14. चतुर्दश

15. पञ्चदश 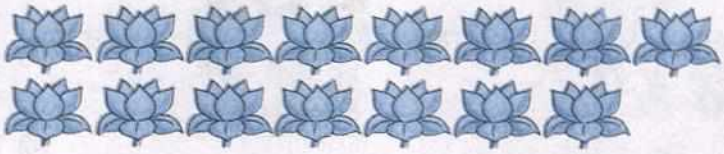

16. षोडश

17. सप्तदश

18. अष्टादश

19. नवदश/
एकोनविंशतिः

20. विंशतिः

अंक	संख्यावाचक शब्द	अंक	संख्यावाचक शब्द	अंक	संख्यावाचक शब्द
1	एक	2	द्वि	3	त्रि
4	चतुर्	5	पञ्चन्	6	षष (षड्/षट्)
7	सप्तन् (सप्त)	8	अष्टन् (अष्ट)	9	नवन् (नव)
10	दशन् (दश)	11	एकादश	12	द्वादश
13	त्रयोदश	14	चतुर्दश	15	पञ्चदश
16	षोडश	17	सप्तदश	18	अष्टादश
19	नवदश/एकोनविंशतिः	20	विंशतिः	21	एकविंशतिः
22	द्वाविंशतिः	23	त्रिविंशतिः/त्रयोविंशति	24	चतुर्विंशतिः
25	पञ्चविंशतिः	26	षड्विंशतिः	27	सप्तविंशतिः
28	अष्टाविंशतिः	29	नवविंशतिः/एकोनत्रिंशत्	30	त्रिंशत्
31	एकत्रिंशत्	32	द्वात्रिंशत्/द्वित्रिंशत्	33	त्रयस्त्रिंशत्
34	चतुस्त्रिंशत्	35	पञ्चत्रिंशत्	36	षट्त्रिंशत्
37	सप्तत्रिंशत्	38	अष्टात्रिंशत्	39	एकोनचत्वारिंशत्
40	चत्वारिंशत्	41	एकचत्वारिंशत्	42	द्वा/द्विचत्वारिंशत्
43	त्रिचत्वारिंशत्	44	चतुश्चत्वारिंशत्	45	पञ्चचत्वारिंशत्
46	षट्चत्वारिंशत्	47	सप्तचत्वारिंशत्	48	अष्टचत्वारिंशत्
49	नवचत्वारिंशत्/एकोनपञ्चाशत्	50	पञ्चाशत्	51	एकपञ्चाशत्
52	द्वि/द्वापञ्चाशत्	53	त्रि/त्रयः पञ्चाशत्	54	चतुःपञ्चाशत्
55	पञ्चपञ्चाशत्	56	षट्पञ्चाशत्	57	सप्तपञ्चाशत्
58	अष्टपञ्चाशत्	59	नवपञ्चाशत्/एकोनषष्टिः	60	षष्टिः
61	एकषष्टिः	62	द्विषष्टिः	63	त्रिषष्टिः
64	चतुष्षष्टिः	65	पञ्चषष्टिः	66	षट्षष्टिः
67	सप्तषष्टिः	68	अष्टषष्टिः	69	एकोनसप्ततिः/नवषष्टिः
70	सप्ततिः	71	एकसप्ततिः	72	द्वि/द्वासप्ततिः
73	त्रि/त्रयः सप्ततिः	74	चतुसप्ततिः	75	पञ्चसप्ततिः
76	षट्सप्ततिः	77	सप्तसप्ततिः	78	अष्टसप्ततिः
79	नवसप्ततिः/एकोनाशीतिः	80	अशीतिः	81	एकाशीतिः
82	द्वयशीतिः	83	त्र्यशीतिः	84	चतुरशीतिः
85	पञ्चाशीतिः	86	षडशीतिः	87	सप्ताशीतिः
88	अष्टाशीतिः	89	नवाशीतिः/एकोननवतिः	90	नवतिः
91	एकनवतिः	92	द्विनवतिः/द्वानवतिः	93	त्रयोनवतिः/त्रिनवतिः
94	चतुर्णवतिः	95	पञ्चनवतिः	96	षण्णवतिः
97	सप्तनवतिः	98	अष्टनवतिः	99	नवनवतिः/एकोनशतम्
100	शतम्				

ध्यातव्यम्

- विंशति, सप्तति, अशीति, नवति सभी के रूप मति के रूपों के अनुसार चलते हैं।
- शतम् के तथा बाद की संख्याओं के रूप नपुंसकलिंग में चलते हैं।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. संख्यावाची शब्द विशेषण होते हैं।
2. विशेष्य के अनुसार ही संख्यावाची शब्दों के लिंग, विभक्ति व वचन का प्रयोग होगा।
3. एक से चार तक की संख्या के शब्द रूप तीनों लिंगों में चलते हैं।
4. पञ्च से आगे की संख्या के शब्द रूप तीनों लिंगों में एक समान होते हैं।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. अधोलिखितानां अङ्कानां कृते कोष्ठकात् उचितं पदं चित्वा लिखत।

(नीचे लिखी संख्याओं के लिए कोष्ठक से उचित पद चुनकर लिखिए।)

1. 65 = ... (पञ्चषष्टिः/षड्पञ्चाशत्)
2. 23 = ... (त्रिविंशतिः/द्वात्रिंशत्)
3. 39 = ... (त्रिनवतिः/नवत्रिंशत्)
4. 45 = ... (चतुर्पञ्चाशत्/पञ्चचत्वारिंशत्)
5. 49 = ... (चतुर्नवतिः/नवचत्वारिंशत्)
6. 58 = ... (पञ्चअशीतिः/अष्टपञ्चाशत्)
7. 10 = ... (दश/एकादश)

8. 15 = ... (पञ्चदश/पञ्चादश)

9. 79 = ... (नवसप्तति:/सप्तनवति:)

10. 80 = ... (अशीति:/अष्टादश)

11. 60 = ... (षष्टि:/षोडश)

12. 35 = ... (त्रिपञ्चाशत्/पञ्चत्रिंशत्)

13. 69 = ... (षड्नवति:/नवषष्टि:)

14. 99 = ... (नवनवति:/नवनवदश)

15. 100 = ... (लक्षम्/शतम्)

II. कोष्ठकात् उचितं संख्यापदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(कोष्ठक से उचित संख्या पद चुनकर रिक्त स्थानों को पूरा कीजिए।)

1. गृहे (2) ..... छात्रे गृहकार्यम् कुरुत:। (द्वौ/द्वे)

2. वृक्षे (2) ..... फले स्त:। (द्वौ/द्वे)

3. अत्र (2) ..... गजौ भ्रमत:। (द्वे/द्वौ)

4. एकस्मिन् हस्ते (1) ..... अङ्गुष्ठ: भवति। (एके/एक:)

5. सप्ताहे (7) ..... दिवसा: भवन्ति। (सप्ता:/सप्त)

III. अधोप्रदत्तानि चित्राणि गणयित्वा संस्कृतेन संख्यापदं लिखत।

(नीचे दिए गए चित्रों को गिनकर संस्कृत में संख्या पद लिखिए।)

1. = ...

2. = ...

3. = ...

4. = ...

5. = ...

6. = ...

7. = ...

8. = ...

9. = ...

10. = ...

9 कारकाः उपपदविभक्तयः च

संज्ञा-सर्वनाम आदि के जिस रूप से क्रिया के साथ उनका संबंध जाना जाए उसे कारक कहते हैं; जैसे–रमा भोजनम् पचति। प्रस्तुत उदाहरण में रमा एवं भोजनम् दोनों पदों का क्रिया पचति के साथ संबंध है, अतः ये दोनों कारक हैं।

कारक आठ होते हैं–

1. कर्ता 2. कर्म 3. करण 4. संप्रदान 5. अपादान 6. संबंध 7. अधिकरण 8. संबोधन

कारकों के अर्थ को व्यक्त करने वाले चिह्न कारक कहलाते हैं। कारक की विभक्तियाँ इन चिह्नों के स्थानों पर लगाई जाती हैं। विभक्तियाँ सात होती हैं। संबोधन कारक में कुछ परिवर्तन के साथ प्रथमा विभक्ति का ही प्रयोग होता है।

कारक	चिह्न	विभक्ति
1. कर्ता	ने (–)	प्रथमा
2. कर्म	को (–)	द्वितीया
3. करण	से (के द्वारा)	तृतीया
4. संप्रदान	के लिए	चतुर्थी
5. अपादान	से (अलग होने पर)	पंचमी
6. संबंध	का, के, की, रा, रे, री	षष्ठी
7. अधिकरण	में, पर	सप्तमी
8. संबोधन	हे, भो, अरे	——

प्रत्यय शब्दों तथा धातुओं के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता को उत्पन्न करने तथा अर्थ परिवर्तन करने का कार्य करते हैं। विभिन्न कारकों को व्यक्त करने के लिए मूल शब्दों में जो प्रत्यय लगाए जाते हैं, उन्हें विभक्ति कहते हैं। शब्दों में जब तक प्रत्यय नहीं लगते तब तक वे शब्द कहलाते हैं तथा प्रत्यय जुड़ने पर (रूप चलने पर) वे **पद** कहलाते हैं। इस तरह **अज** एक **शब्द** हुआ तथा **अज**, **अजस्य**, **अजम्** ये सब **पद** हुए। संस्कृत भाषा में बिना पद बनाए किसी भी शब्द या धातु का मूल रूप में प्रयोग नहीं हो सकता इसीलिए उनके रूप चलाए जाते हैं।

'एक बकरे ने' का संस्कृत अनुवाद करने लिए कारक चिह्नों का ध्यान करके हम प्रथमा विभक्ति लगाएँगे तथा वचन एकवचन रखेंगे तो पद बनेगा = अजः। इसी तरह यदि **अजस्य** पद का अर्थ ज्ञात करना हो तो हम कारक की सहायता से इसका चिह्न देखेंगे तथा विभक्ति और वचन भी देखेंगे। इसका कारक **संबंध**, चिह्न **का**, विभक्ति **षष्ठी** तथा वचन **एक** है। इस तरह पद का परिचय प्राप्त कर लेने पर हमें अर्थ का ज्ञान हो जाएगा='एक बकरे का'।

कारक की पहचान क्रिया से प्रश्न पूछकर भी की जा सकती है; यथा–कर्ता (प्रथमा विभक्ति) के लिए किसने, किन दो ने, किन सबने या कौन दो, कौन सब का उत्तर कर्ता होगा। इसी तरह संबंध कारक के लिए किसका, किसकी, किन दो का इत्यादि प्रश्नों के उत्तर संबंध कारक की पहचान हैं।

कारक-विभक्तयः–जो विभक्ति क्रियापद को ध्यान में रखकर लगाई जाए उसे कारक-विभक्ति कहते हैं। नीचे कारक तथा विभक्तियों का प्रयोग दिया जा रहा है। इनका ध्यानपूर्वक अध्ययन कर लीजिए।

1. **प्रथमा विभक्तिः** (कर्ता कारक), विभक्ति चिह्न–ने, (.....)

   कर्ता कारक में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है।

   उदाहरण–सः ग्रन्थान् पठति। यहाँ तत् शब्द में प्रथमा विभक्ति एकवचन है तथा क्रिया कर्ता के अनुसार एकवचन में ही है।

   प्रथमा विभक्ति के प्रयोग के कुछ अन्य उदाहरण भी देख लीजिए–

   1. एषा छात्रा पुस्तकं पठति।
   2. सुप्रिया लेखं लिखति।
   3. सैनिकः देशं रक्षति।
   4. सुधीरः विदेशे गच्छति।
   5. मालाकारः पुष्पाणि त्रोटयति।
   6. अहम् उद्याने भ्रमामि।
   7. मम मित्राणि उद्याने क्रीडन्ति।
   8. बालिके ईशं नमतः।
   9. शिक्षकः छात्रान् पाठयति।
   10. छात्राः विद्यालये संस्कृतं पठन्ति।

2. **द्वितीया विभक्तिः** (कर्म कारक), विभक्ति चिह्न–को

   कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण–

   1. सः विद्यालयं गच्छति।
   2. संध्या लेखम् लिखति।
   3. बालः दुग्धं पिबति।
   4. रमा भोजनम् पचति।
   5. बाले चित्राणि पश्यतः।
   6. रामौ गृहम् गच्छतः।
   7. युवाम् भारं नयथः।
   8. त्वम् आचार्यात् किम् प्रश्नम् पृच्छसि?
   9. अहम् पत्रं पठामि।
   10. सुषमा चित्रम् रचयति।

3. **तृतीया विभक्तिः** (करण कारक), विभक्ति चिह्न–के द्वारा, से

   करण कारक में तृतीया विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण–

   1. श्रीकृष्णः कंसम् मुष्टिकाप्रहारेण मारयति।
   2. व्याधः चटकम् बाणेन अमारयत्।
   3. छात्रः कारयानेन महाविद्यालयम् गच्छति।
   4. जनाः मुखेन वदन्ति।
   5. त्वम् कलमेन लिखसि।
   6. शिशुः क्रीडनकेन क्रीडति।
   7. बालाः पुष्पगुच्छैः प्राध्यापकस्य स्वागतं कुर्वन्ति।
   8. आवाम् कन्दुकेन क्रीडावः।
   9. मृगाः चरणैः धावन्ति।
   10. वयम् द्विचक्रिकया गृहम् गच्छामः।

4. **चतुर्थी विभक्तिः** (संप्रदान कारक), विभक्ति चिह्न–के लिए

   कर्ता जिसके लिए कार्य करता है, उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। उदाहरण–

   1. अम्बा पुत्राय ओदनं पचति।
   2. पिता सुतायै क्रीडनकं यच्छति।
   3. त्वम् वृद्धेभ्यः फलानि नयसि।
   4. अहम् ज्ञानाय गुरोः समीपं गच्छामि।

5. सूर्याः प्रकाशाय भवति।
6. वृक्षाः परोपकाराय फलन्ति।
7. भक्ताः दर्शनाय देवालयं गच्छन्ति।
8. कुक्कुराः भोजनाय इतस्ततः गच्छन्ति।
9. सैनिकाः देशरक्षायै तत्पराः भवन्ति।
10. काकः जलपानाय घटस्योपरि उपविशति।

5. पंचमी विभक्तिः (अपादान कारक) विभक्ति चिह्न–से पृथक्/से अलग

जिससे अलग हुआ जाए उसमें पंचमी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण–

1. भल्लुकाः पर्वतात् अवतरन्ति।
2. वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
3. मेघेभ्यः वर्षा भवति।
4. वृक्षात् पत्रम् अपतत्।
5. वृक्षात् फलानि पतन्ति।
6. गगनात् पुष्पवर्षा भवति।
7. निर्झरात् निर्मलं जलं पतति।
8. बालकस्य हस्तात् लेखनी पतति।
9. शिशोः हस्तात् केशान् विमोचयति।
10. पादपात् पुष्पाणि मा त्रोटय।

6. षष्ठी विभक्तिः (संबंध कारक), विभक्ति चिह्न–का, के, की, रा, रे, री

जिस शब्द के साथ संबंध स्थापित किया जाए उसमें षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण–

1. इदम् सुपोषस्य पुस्तकम् अस्ति।
2. चन्द्रस्य प्रकाशः शीतलः भवति।
3. सूर्यस्य प्रकाशः उष्णः भवति।
4. कैलाशस्य लेखः सुन्दरः अस्ति।
5. ऋतुः मम भगिनी अस्ति।
6. पिकस्य स्वरः मधुरः भवति।
7. भो छात्रा! अद्य युष्माकम् अवकाशः अस्ति।
8. बृहस्पति तु देवानाम् गुरुः।
9. बृहस्पतिः देवानां गुरुः अस्ति।
10. संस्कृतम् भारतस्य भाषा अस्ति।

7. सप्तमी विभक्तिः (अधिकरण कारक), विभक्ति चिह्न–में, पर

क्रिया के आधार में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है। उदाहरण–

1. वृक्षे खगाः वसन्ति।
2. आकाशे विमानम् उत्पतति।
3. उद्यानेषु वृक्षाः सन्ति।
4. जनाः गृहे वसन्ति।
5. सरोवरे अनेके मीनाः सन्ति।
6. बालाः तरणताले तरन्ति।
7. चटकाः नीडेषु वसन्ति।
8. मम हस्तयोः पुष्पगुच्छः अस्ति।
9. निशायां सर्वत्र अंधकारः भवति।
10. वने सिंहः गर्जति।

8. सम्बोधन कारक, विभक्ति चिह्न–हे! भो! अरे!

बुलाने के लिए संबोधन कारक का प्रयोग होता है। इसमें कुछ परिवर्तन के साथ प्रथमा विभक्ति का ही प्रयोग होता है। उदाहरण–

1. भो सैनिकाः! यूयं देशं कथं रक्षथ?
2. हे दिव्ये! त्वं कुत्र गच्छसि?
3. हे पुत्री! आगत्य भोजनं कुरु।
4. हे देव! रक्षां कुरु।
5. हे छात्रौ! गृहकार्यं कुरुतम्।
6. हे श्रीमति! त्वं कार्यं मा कुरु।
7. हे मातः! अहं क्रीडनाय गच्छामि।
8. हे कवयः। यूयं कविताः पठत।
9. अरे धनिकौ! धनं यच्छतम्।
10. अरे! चायपानं कुरु।

उपपदविभक्तयः–कुछ प्रमुख उपपद विभक्तियों के नियम इस प्रकार हैं–

1. द्वितीया विभक्तिः

1. विना, नाना और पृथक् के साथ द्वितीया, तृतीया और पंचमी विभक्ति लगती है; जैसे–

सा पतिम्/पत्या/पत्युः विना न खादति।	वह पति के बिना नहीं खाती।
विना नारीम् गृहम् न शोभते।	नारी के बिना घर शोभा नहीं देता।

2. उभयतः, अभितः (दोनों ओर) के साथ द्वितीया विभक्ति लगती है; जैसे–

नदीम् उभयतः वृक्षाः।	नदी के दोनों ओर पेड़ हैं।
सरणिमभितः वृक्षाः।	सड़क के दोनों ओर पेड़ हैं।

3. परितः (चारों ओर) के साथ द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है; जैसे–

दुर्गम् परितः जलम्।	किले के चारों तरफ पानी है।

4. सर्वतः (सब ओर) के साथ भी द्वितीया विभक्ति लगती है; जैसे–

वृक्षं सर्वतः पुष्पाणि।	वृक्ष के सब ओर फूल हैं।

5. समया, निकषा (पास) के साथ द्वितीया विभक्ति लगती है; जैसे–

ग्रामम् समया पर्वताः सन्ति।	गाँव के पास पहाड़ हैं।
रामम् निकषा सीता तिष्ठति।	राम के पास सीता बैठी है।

6. प्रति (की ओर) के योग में भी द्वितीया विभक्ति होती है; जैसे–

छात्रः विद्यालयं प्रति गच्छति।	छात्र विद्यालय की ओर जाता है।

2. तृतीया विभक्तिः

1. सह (साथ) के साथ तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है; जैसे–

रामेण सह सीता गच्छति।	राम के साथ सीता जाती है।

2. साकम् (साथ) के साथ तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है; जैसे–

बालकेन साकम् गच्छ।	बालक के साथ जाओ।

3. सार्धम् (साथ) के साथ तृतीया विभक्ति लगती है; जैसे–

जनकः सुतायाः सार्धम् भोजनं खादति।	पिता पुत्री के साथ भोजन खाता है।

4. हीनः (रहित) के साथ तृतीया विभक्ति लगती है; जैसे–

विद्यया हीनः न शोभते।	विद्या से रहित शोभा नहीं पाता है।

5. अलम् (बस करो) के साथ भी तृतीया लगती है; जैसे–

अलम् कोलाहलेन।	कोलाहल मत करो।

3. चतुर्थी विभक्तिः–

1. √दा = देना, √स्पृह् = इच्छा करना, √असूय् = ईर्ष्या-द्वेष करना, √रुच् = अच्छा लगना, √क्रुध् = क्रोध करना तथा नमः, स्वस्ति और स्वाहा के साथ चतुर्थी विभक्ति लगती है; जैसे–

जनकः पुत्राय क्रीडनकम् यच्छति।	पिता पुत्र के लिए खिलौना देता है।
छात्राः ज्ञानाय स्पृहयन्ति।	छात्र ज्ञान चाहते हैं।

दुष्टाः साधुभ्यः असूयन्ति/ईर्ष्यन्ति। — दुर्जन सज्जनों से ईर्ष्या करते हैं।

मह्यम् रसगोलकाः रोचन्ते। तुभ्यम् किम् रोचते? — मुझे रसगुल्ले अच्छे लगते हैं। तुम्हें क्या अच्छा लगता है?

माता पुत्राय क्रुध्यति। — माता पुत्र पर क्रोध करती है।

गुरवे नमः। — गुरु को नमस्कार है।

श्रीगणेशाय नमः। — श्रीगणेश के लिए नमस्कार है।

इन्द्राय स्वाहा, जनेभ्यः स्वस्ति। — इन्द्र के लिए स्वाहा (आहुति), लोगों का कल्याण हो।

2. अलम् (पर्याप्त के अर्थ में) के साथ भी चतुर्थी विभक्ति लगती है; जैसे–

भारतीयः वीरः शत्रुभ्यः अलम्। — एक भारतीय वीर शत्रुओं के लिए काफी है।

4. पंचमी विभक्तिः–

1. भय जिससे लगे उसमें पंचमी विभक्ति लगती है; जैसे–

बालः सिंहात् बिभेति। — बालक शेर से डरता है।

2. √रक्ष् के साथ जिससे रक्षा की जाए उसमें पंचमी विभक्ति लगती है; जैसे–

रमणः बालकं दुष्टात् रक्षति। — रमण बालक को दुष्ट से बचाता है।

3. प्रमद् (आलस्य करना) के साथ पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है; जैसे–

श्रमिकः परिश्रमात् न प्रमाद्यति। — छात्र परिश्रम से आलस्य नहीं करता।

4. ऋते (बिना) के साथ पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है; जैसे–

ज्ञानात् ऋते न मुक्तिः। — ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं है।

5. पूर्वम् (पूर्व दिशा) के साथ पंचमी विभक्ति लगती है; जैसे–

विद्यालयात् पूर्वम् क्रीडाक्षेत्रः। — विद्यालय की पूर्व दिशा में खेल का मैदान है।

6. बहिः (बाहर) के साथ पंचमी विभक्ति होती है; जैसे–

कालिदासः गृहात् बहिः अगच्छत्। — कालिदास घर से बाहर गया।

7. अनन्तरम् (बाद में) के साथ भी पंचमी विभक्ति होती है; जैसे–

देवात् अनन्तरम् भक्तः खादति। — देवता के बाद भक्त खाता है।

8. परः (बाद में) के योग में भी पंचमी विभक्ति का ही प्रयोग होता है; जैसे–

पुत्रात् परः जनकः खादति। — पुत्र के बाद पिता खाता है।

5. षष्ठी विभक्तिः–

1. निर्धारण में षष्ठी विभक्ति होती है; जैसे–
   कवीनाम् कालिदासः श्रेष्ठः। — कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।
2. उपरि के साथ षष्ठी विभक्ति लगती है; जैसे–
   वृक्षस्य उपरि वानराः कूर्दन्ति। — पेड़ के ऊपर बंदर कूदते हैं।
3. अधः के साथ षष्ठी विभक्ति लगती है; जैसे–
   वृक्षस्य अधः पथिकः स्वपिति। — पेड़ के नीचे पथिक सोता है।
4. अग्रे के साथ भी षष्ठी विभक्ति लगती है; जैसे–
   गृहस्य अग्रे वाटिका अस्ति। — घर के आगे बगीचा है।
5. पुरतः (सामने) के साथ षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है; जैसे–
   विद्यालयस्य पुरतः सरणिः अस्ति। — विद्यालय के आगे रास्ता है।
6. पृष्ठतः (पीछे) के साथ षष्ठी विभक्ति लगती है; जैसे–
   राज्ञः पृष्ठतः राज्ञी आगच्छति। — राजा के पीछे रानी आती है।

6. सप्तमी विभक्तिः–

1. निर्धारण में सप्तमी विभक्ति भी लग सकती है; जैसे–
   कविषु कालिदासः श्रेष्ठः। — कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।
2. √स्निह् (स्नेह करना) या √अभिलष् के साथ सप्तमी विभक्ति लगती है; जैसे–
   माता बालके स्निह्यति/अभिलषति। — माता बालक पर स्नेह करती है।
3. कुशल, निपुण, पटु, प्रवीण (निपुण) के साथ सप्तमी विभक्ति लगती है; जैसे–
   छात्रेषु रामः कुशलः। — छात्रों में राम कुशल है।
   सा कार्येषु निपुणा। — वह कामों में निपुण है।
   सः गायने प्रवीणः। — वह गाने में प्रवीण है।
4. जिस पर विश्वास किया जाए उसमें सप्तमी विभक्ति लगती है; जैसे–
   माता बालके विश्वसति। — माता बालक पर विश्वास करती है।

ध्यातव्यम्

- सर्वनाम शब्दों के संबोधन रूप नहीं होते।
- एकवचन के कर्ता के साथ एकवचन की ही क्रिया का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- उपपद विभक्ति के नियम कारक विभक्तियों के नियमों से अलग होते हैं।
- साकम्, सह, सार्धम् का अर्थ एक होने के कारण सबके साथ एक ही नियम लगता है।
- 'अलम्' के दो अर्थ हैं तथा दोनों अर्थों के साथ अलग-अलग विभक्ति लगती है।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. विना, नाना तथा पृथक् पद के साथ द्वितीया, तृतीया या पंचमी कोई भी विभक्ति लग सकती है।
2. सर्वतः, परितः, प्रति के साथ द्वितीया विभक्ति लगती है।
3. अलम् निषेधार्थ में तृतीया विभक्ति लगती है।
4. क्रुध्/कुप् के साथ जिस पर गुस्सा किया जाए उसमें चतुर्थी विभक्ति लगती है।
5. सह, साकम्, सार्धम् में जिसके साथ क्रिया की जाए उसमें तृतीया विभक्ति लगती है।
6. 'भी' धातु के साथ जिससे डरा जाए उसमें पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है।
7. निर्धारण में षष्ठी तथा सप्तमी दोनों का प्रयोग होता है।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. कोष्ठकगतशब्देषु उचितं विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत।

(कोष्ठक में दिए गए शब्दों में उचित विभक्ति का प्रयोग कर रिक्त स्थानों को भरिए।)

1. ..... भोजनं करोमि। (अस्मद्)
2. ..... देशं रक्षन्ति। (सैनिक)
3. वानराः ..... कूर्दन्ति। (वृक्ष)
4. वयम् ..... पश्यामः। (नेत्र)
5. अयम् ..... विद्यालयः अस्ति। (अस्मद्)
6. नराः ..... अवतरन्ति। (पर्वत)
7. ..... क्षेत्रेषु कार्यम् कुर्वन्ति। (कृषक)
8. नद्यः ..... वहन्ति। (परोपकार)
9. चित्रकारः ..... रचयति। (चित्र)
10. धावकाः ..... धावति। (चरण)

II. अशुद्धं पदं शुद्धीकृत्य वाक्यानि पुनः लिखत।

(अशुद्ध पद को शुद्ध करके वाक्यों को पुनः लिखिए।)

1. कपयः कदलीफलेन खादन्ति। .....
2. आकाशेन वर्षा भवति। .....
3. गजः चरणाभ्याम् चलति। .....
4. अहम् लेखः लिखामि। .....
5. हे लता! त्वम् पठ। .....
6. सा आवयोः मातरम् अस्ति। .....
7. सैनिकाः भारतस्य रक्षन्ति। .....
8. हे मित्रम्! सहायताम् कुरु। .....
9. जनाः नौकायाः नदीपारम् गच्छन्ति। .....
10. अहम् कलमात् लिखामि। .....

III. उचितं पदं चित्वा वाक्यानि पूरयत।

(उचित पद चुनकर वाक्य पूरा कीजिए।)

1. छात्राः ..... पठन्ति। (ग्रन्थम्/ग्रन्थः)
2. जनाः ..... चलन्ति। (चरणाभ्याम्/चरणयोः)
3. खगाः ..... वसन्ति। (नीडानाम्/नीडेषु)
4. ओमप्रकाशः ..... गच्छति। (कारयानात्/कारयानेन)
5. शिशुः ..... रोदति। (क्रीडनाय/क्रीडनेन)
6. ..... रुप्यकम् अपतत्। (हस्तेन/हस्तात्)
7. वने ..... नृत्यति। (मयूरेण/मयूरः)
8. सूर्यः ..... भवति। (प्रकाशेन/प्रकाशाय)
9. ..... मम प्रणामाः। (मातृचरणयोः/मातृचरणाभ्याम्)
10. ..... प्रकाशः शीतलः भवति। (चन्द्रे/चन्द्रस्य)

IV. उचितं मेलनं कुरुत।

(उचित मिलान कीजिए।)

(क) चौरम्	(*i*) वषट्।
(ख) गृहम्	(*ii*) पूर्वम् निम्बवृक्षः।
(ग) इन्द्राय	(*iii*) उभयतः सैनिकौ।
(घ) गृहात्	(*iv*) ऋते न मुक्तिः।
(ङ) ज्ञानात्	(*v*) प्रति गच्छति।
(च) दुर्गम्	(*vi*) ..... नमः।
(छ) अध्यापिकायै	(*vii*) अभितः परिखा। (परिखा = खाई)

V. मञ्जूषातः उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(मंजूषा से उचित पद चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

केन, मूर्तिकलायाम्, बालकेभ्यः, बाले, मार्गम्, सिंहात्, निर्धनेभ्यः, लक्ष्म्यै, पुत्रे, वार्त्तालापेन, अग्नये, कलहेन, धावने, आम्रेण, बालकाय

1. भरतः ..... न बिभेति।
2. ..... नमः।
3. माता ..... स्निह्यति।
4. अलम् .....
5. ..... स्वाहा।
6. अलम् .....
7. दिव्या ..... कुशला।
8. ..... सह लवणम् अपि आनय।
9. ..... पलाण्डुः न रोचते।
10. लीलावती ..... सह गच्छति?
11. समीहा ..... निपुणा।
12. ..... मिष्ठान्नानि रोचन्ते।
13. जनकः ..... स्निह्यति।
14. ..... अभितः पुष्पाणि।
15. सिद्धार्थः ..... वस्त्राणि यच्छति।

10 प्रत्ययाः

जो शब्दांश शब्द या धातुओं के पीछे लगकर उनके अर्थ में परिवर्तन ले आएँ, वे प्रत्यय कहलाते हैं। ये तीन प्रकार के हैं–कृत् प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय तथा स्त्री प्रत्यय।

सप्तमी कक्षा में हम केवल कृत् प्रत्यय पढ़ेंगे।

कृत् प्रत्यय–जो प्रत्यय धातुओं के बाद में लगकर उन्हें संज्ञा, विशेषण और अव्यय बनाते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं। इन प्रत्ययों के योग से बने शब्द कृदन्त कहलाते हैं। कुछ प्रमुख कृत् प्रत्यय निम्नलिखित हैं:

1. **क्त्वा प्रत्यय**–जब एक ही कर्ता एक क्रिया करके दूसरी क्रिया करे तो पहली क्रिया में करके अर्थ के लिए क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग होता है। इसका त्वा शेष रहता है।

	प्रकृति	+	प्रत्यय	=	पद	=	अर्थ
1.	√खाद्	+	क्त्वा	=	खादित्वा	=	खाकर
2.	√पठ्	+	क्त्वा	=	पठित्वा	=	पढ़कर
3.	√नम्	+	क्त्वा	=	नत्वा	=	नमस्कार करके
4.	√भू	+	क्त्वा	=	भूत्वा	=	होकर
5.	√श्रु	+	क्त्वा	=	श्रुत्वा	=	सुनकर
6.	√गम्	+	क्त्वा	=	गत्वा	=	जाकर
7.	√ज्ञा	+	क्त्वा	=	ज्ञात्वा	=	जानकर
8.	√लिख्	+	क्त्वा	=	लिखित्वा	=	लिखकर
9.	√कृ	+	क्त्वा	=	कृत्वा	=	करके
10.	√पा	+	क्त्वा	=	पीत्वा	=	पीकर

2. **ल्यप् प्रत्यय**–यदि धातु से पूर्व कोई भी उपसर्ग हो तो क्त्वा न होकर करके अर्थ के लिए ल्यप् हो जाता है। इसका 'य' शेष रहता है। इनकी पद संज्ञा होती है इसलिए रूप नहीं चलते।

	उपसर्ग	+	प्रकृति	+	प्रत्यय	=	पद	=	अर्थ
1.	सम्	+	√पठ्	+	ल्यप्	=	सम्पठ्य	=	अच्छी तरह पढ़कर
2.	वि	+	√स्मृ	+	ल्यप्	=	विस्मृत्य	=	भूलकर
3.	आ	+	√वृत्	+	ल्यप्	=	आवृत्य	=	दोहराकर
4.	वि	+	√ज्ञा	+	ल्यप्	=	विज्ञाय	=	जानकर

5. सम्	+	√पूज्	+	ल्यप्	=	सम्पूज्य	=	पूजा करके
6. प्र	+	√नम्	+	ल्यप्	=	प्रणम्य	=	प्रणाम करके
7. अव	+	√तृ	+	ल्यप्	=	अवतीर्य	=	उतरकर
8. आ	+	√गम्	+	ल्यप्	=	आगत्य/आगम्य	=	आकर
9. अनु	+	√भू	+	ल्यप्	=	अनुभूय	=	अनुभव करके
10. आ	+	√दा	+	ल्यप्	=	आदाय	=	लेकर

3. तुमुन् प्रत्यय–इस प्रत्यय का प्रयोग के लिए अर्थ में होता है तथा इसका उन् शेष रहता है।

मूल धातु	+	प्रत्यय	=	पद	=	अर्थ
1. √पठ्	+	तुमुन्	=	पठितुम्	=	पढ़ने के लिए
2. √चल्	+	तुमुन्	=	चलितुम्	=	चलने के लिए
3. √कृ	+	तुमुन्	=	कर्तुम्	=	करने के लिए
4. √नम्	+	तुमुन्	=	नन्तुम्	=	नमस्कार करने के लिए
5. √गम्	+	तुमुन्	=	गन्तुम्	=	जाने के लिए
6. √पा	+	तुमुन्	=	पातुम्	=	पीने के लिए
7. √हस्	+	तुमुन्	=	हसितुम्	=	हँसने के लिए
8. √लिख्	+	तुमुन्	=	लिखितुम्	=	लिखने के लिए
9. √श्रु	+	तुमुन्	=	श्रोतुम्	=	सुनने के लिए
10. √दा	+	तुमुन्	=	दातुम्	=	देने के लिए

4. तव्यत् प्रत्यय–इस प्रत्यय का प्रयोग चाहिए अर्थ और योग्य अर्थ के लिए होता है। इसका तव्य शेष रहता है, लेकिन इसके बाद शब्द विशेषण बनता है तथा विशेष्य के अनुसार तीनों लिंगों में रूप चलते हैं।

प्रकृति	+	प्रत्यय	=	शब्द	=	अर्थ
1. पठ्	+	तव्यत्	=	पठितव्य	=	पढ़ने योग्य
2. चल्	+	तव्यत्	=	चलितव्य	=	चलना चाहिए
3. नम्	+	तव्यत्	=	नन्तव्य	=	नमस्कार के योग्य
4. गम्	+	तव्यत्	=	गन्तव्य	=	जाने योग्य
5. लिख्	+	तव्यत्	=	लिखितव्य	=	लिखने योग्य

6. खाद्	+	तव्यत्	=	खादितव्य	=	खाने योग्य
7. धाव्	+	तव्यत्	=	धावितव्य	=	दौड़ने योग्य
8. कृ	+	तव्यत्	=	कर्त्तव्य	=	करना चाहिए
9. कथ्	+	तव्यत्	=	कथयितव्य	=	कहने योग्य
10. भू	+	तव्यत्	=	भवितव्य	=	होने योग्य

5. **अनीयर् प्रत्यय**–विशेषण बनाने के लिए अनीयर् प्रत्यय का प्रयोग भी चाहिए या योग्य अर्थ में होता है। इसका अनीय शेष रहता है।

प्रकृति	+	प्रत्यय	=	शब्द	=	अर्थ
1. कृ	+	अनीयर्	=	करणीय	=	करने योग्य
2. लिख्	+	अनीयर्	=	लेखनीय	=	लिखने योग्य
3. भू	+	अनीयर्	=	भवनीय	=	होने योग्य
4. शंस्	+	अनीयर्	=	शंसनीय	=	प्रशंसा योग्य
5. पठ्	+	अनीयर्	=	पठनीय	=	पढ़ने योग्य
6. गम्	+	अनीयर्	=	गमनीय	=	जाने योग्य
7. खाद्	+	अनीयर्	=	खादनीय	=	खाने योग्य
8. अर्थ	+	अनीयर्	=	अर्थनीय	=	पूजा योग्य

ध्यातव्यम्

- प्रत्यय मूल शब्द या मूल धातुओं के पीछे लगाए जाते हैं। इसलिए धातु के लिए √ का चिह्न तथा उपसर्ग के लिए (पूर्वक) का प्रयोग भी किया जाता है।

स्मरणीया: बिन्दव:

1. प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं–1. कृत् प्रत्यय, 2. तद्धित प्रत्यय तथा 3. स्त्री प्रत्यय।
2. धातुओं के बाद लगने वाले प्रत्यय कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।
3. यदि धातु एक हो तब क्त्वा प्रत्ययांत तथा ल्यप् प्रत्ययांत पद पर्यायवाची ही होते हैं।
4. ल्यप् प्रत्यय केवल उपसर्गपूर्वक धातु के साथ ही लगता है।
5. अनीयर् तथा तव्यत् प्रत्यय के शब्द भी पर्यायवाची होते हैं।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. अधोलिखितानां पदानां उचितं प्रकृति-प्रत्यय-विभागं प्रदत्तविकल्पेभ्यः चित्वा लिखत।

(नीचे लिखे शब्दों के उचित प्रकृति-प्रत्यय-विभाग दिए गए विकल्पों से चुनकर लिखिए।)

1. आप्त्वा (पाकर) ..... + ...

   (*i*) आ + क्त्वा (*ii*) आप् + त्वा (*iii*) आप् + क्त्वा

2. त्यक्त्वा (छोड़कर) ..... + ...

   (*i*) त्यज् + क्त्वा (*ii*) त्यक् + क्त्वा (*iii*) त्यक्त + वा

3. गत्वा (जाकर) ..... + ...

   (*i*) गम् + क्त्वा (*ii*) गम् + ल्यम् (*iii*) ग + त्वा

4. जित्वा (जीतकर) ..... + ...

   (*i*) जीत् + क्त्वा (*ii*) जित् + क्त्वा (*iii*) जि + क्त्वा

5. ज्ञात्वा (जानकर) ..... + ...

   (*i*) ज्ञान् + क्त्वा (*ii*) ज्ञा + क्त्वा (*iii*) ज्ञात् + क्त्वा

6. नीत्वा (लेकर) ..... + ...

   (*i*) नी + क्त्वा (*ii*) नि + क्त्वा (*iii*) नय + क्त्वा

7. नत्वा (झुककर) ..... + ...

   (*i*) नत् + क्त्वा (*ii*) नत् + कत्वा (*iii*) नम् + क्त्वा

8. कृत्वा (करके) ..... + ...

   (*i*) कृत् + वा (*ii*) क्री + क्त्वा (*iii*) कृ + क्त्वा

9. दत्वा (देकर) ..... + ...

   (*i*) दा + क्त्वा (*ii*) द + त्वा (*iii*) दत् + क्त्वा

10. नष्ट्वा (नष्ट होकर) ..... + ...

    (*i*) नष्ट + क्त्वा (*ii*) नश् + क्त्वा (*iii*) नष् + क्त्वा

II. निम्नलिखितपदेषु प्रकृतिप्रत्ययौ संयोज्य लिखत।

(निम्नलिखित पदों में प्रकृति और प्रत्यय जोड़कर लिखिए।)

1. √पच् + क्त्वा = ...
2. √दृश् + क्त्वा = ...
3. √प्रच्छ् + क्त्वा = ...
4. √पा + क्त्वा = ...
5. √छिद् + क्त्वा = ...
6. √लिख् + क्त्वा = ...
7. √भू + क्त्वा = ...
8. √वस् + क्त्वा = ...
9. वद् + क्त्वा = ...
10. नृत् + क्त्वा = ...

III. उचितं मेलनं कुरुत।

(उचित मिलान कीजिए।)

(क) मिलित्वा	(*i*) पढ़कर
(ख) घ्रात्वा	(*ii*) देखकर
(ग) क्रुद्ध्वा	(*iii*) पास जाकर
(घ) संपठ्य	(*iv*) काम से हटकर
(ङ) आगम्य	(*v*) मिलकर
(च) लिखित्वा	(*vi*) आकर
(छ) निवृत्य	(*vii*) क्रोधित होकर
(ज) उपगम्य	(*viii*) सूँघकर
(झ) संदृश्य	(*ix*) लिखकर

IV. मञ्जूषातः उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

(मंजूषा से उचित पद चुनकर रिक्त स्थानों को पूरा करें।)

दातुम्, प्राप्तुम्, खेलितुम्, श्रोतुम्, स्थातव्यम्, लब्धुम्, खादितुम्, आनीय, आहूय, निर्गत्य

1. माता - हे पुत्र! पुस्तकम् ..... अत्र रक्ष।

   पुत्रः - कोऽपि अतिथिः द्वारे अस्ति।

2. माता-बहिः ..... पश्य, कः आगतः?

3. माता - अतिथिम् ..... शीघ्रं तस्मै जलं प्रयच्छ।

4. पुत्रः - भो आगन्तुक! त्वम् किम् ..... इच्छसि।

5. आगन्तुकः - अहम् क्षुधया पीडितः अस्मि। अत्र भोजनं ..... आगतः।

6. पुत्रः - तव स्वागतम्! त्वया अत्र ..... एव।

7. आगन्तुकः - अहम् मधुरम् संगीतम् अपि ..... इच्छामि।

8. पुत्रः - भोजनं कृत्वा किम् मया सह ..... इच्छसि?

9. अहम् तुभ्यम् स्वकन्दुकम् अपि ..... इच्छामि।

10. आगन्तुकः - आम्, अहम् कन्दुकम् ..... इच्छामि।

V. अधोलिखितपदेषु प्रकृति-प्रत्यय-विग्रहं कुरुत।

(निम्नलिखित पदों में प्रकृति-प्रत्यय का विग्रह करें।)

1. सोढुम्	.....	2. भवितुम्	.....
3. कोपितुम्	.....	4. स्नातुम्	.....
5. स्थातुम्	.....	6. द्रष्टुम्	.....
7. गन्तुम्	.....	8. गातुम्	.....
9. पातुम्	.....	10. ग्रहीतुम्	.....

VI. निम्नांकितपदेषु प्रकृतिप्रत्ययोः विभागं संयोगं वा कुरुत।

(निम्नलिखित पदों में धातु व प्रत्यय का विभाग अथवा संयोग करें।)

1. ग्रह् + तुमुन् (ग्रहण करने के लिए) = ...

2. ताडयितुम् (पीटने के लिए) = ... + ...

3. पाल् + तुमुन् (पालने के लिए) = ...

4. लेखितुम् (लिखने के लिए) = ... + ...

5. वदितुम् (बोलने के लिए) = ... + ...

6. खेल् + तव्यत् (खेलने योग्य) = ...

7. ज्ञा + तव्यत् (जानने योग्य) = ...

8. जि + तव्यत् (जीतने योग्य) = ...

9. नी + तव्यत् (ले जाने योग्य) = ...

10. श्रु + तव्यत् (सुनने योग्य) = ...

VII. प्रकृतिप्रत्ययोः विभागं शुद्धं कृत्वा पुनः लिखत।

(प्रकृति-प्रत्यय के विभाग को शुद्ध करके पुनः लिखिए।)

1. स्प्रष्टव्य (छूने योग्य) = स्प्रष्ट + तव्यत् = ...

2. वक्तव्य (बोलने योग्य) = वद् + तव्यत् = ...

3. सोढव्य (सहने योग्य) = सो + अनीयर् = ...

4. करणीय (करने के योग्य) = करण + अनीयर् = ...

5. दर्शनीय (देखने के योग्य) = दर्श + अनीयर् = ...

6. भवनीय (होने के योग्य) = भव + अनीयर् = ...

7. कथनीय (कहने के योग्य) = कथ् + नीय = ...

8. खादनीय (खाने के योग्य) = खद् + अनीयर् = ...

9. क्रन्दनीय (चिल्लाने के योग्य) = क्रन्द् + अनीय = ...

10. दण्डनीय (दण्ड देने योग्य) = दण् + डनीयर् = ...

11. चोरणीय (चुराने योग्य) = चोर् + अनीयर् = ...

12. चिन्तनीय (सोचने योग्य) = चिन् + तनीयर् = ...

13. गमनीय (जाने योग्य) = गै + अनीयर् = ...

14. गन्तुम् (जाने के लिए) = गन + तुमुन् = ...

15. लिखितुम् (लिखने के लिए) = लिख् + तुम् = ...

11 अशुद्धिसंशोधनम्

वाक्यों में अशुद्धिशोधन करते समय सर्वप्रथम अशुद्धि किस तरह की है, यह समझना चाहिए। यह अशुद्धि वचन, लिंग, पुरुष, लकार या विभक्ति किसी के भी प्रयोग में हो सकती है। एक बार अशुद्धि शब्द को समझते ही उससे संबंधित नियम का ध्यान करके उसे शुद्ध किया जा सकता है। बार-बार शुद्ध वाक्यों को बोलकर व पढ़कर अभ्यास किया जाए अर्थात् संस्कृत साहित्य पढ़ा जाए तो स्वत: ही अशुद्धि को शुद्ध किया जा सकता है। कुछ उदाहरण देखिए-

1. सरोवरे अनेके मीनौ तरत: स्म। यहाँ अनेक शब्द 'मीन' के लिए आया है। अत: दोनों में समान विभक्ति, वचन व लिंग का प्रयोग होगा। अत: अनेक शब्द में भी प्रथमा विभक्ति, द्विवचन अनेकौ ही शुद्ध होगा।
2. किम् त्वम् अपि तत्र पठति? इस उदाहरण में त्वम् मध्यम पुरुष का एकवचन का कर्ता है। अतएव इसके साथ मध्यम पुरुष एकवचन की ही क्रिया पठसि लगनी चाहिए।
3. वृक्षात् पत्रा: पतन्ति। इस वाक्य में पत्र शब्द का रूप पुंल्लिंग में दिया गया है जो अशुद्ध है, क्योंकि पत्र शब्द नपुंसकलिंग है। शुद्ध रूप होगा पत्राणि।
4. नृप: याचकं धनं यच्छति। प्रस्तुत उदाहरण में याचकं पद में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग किया जाना चाहिए, क्योंकि दा धातु के साथ हमेशा चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।
5. स: ह्य: विद्यालयम् न गमिष्यति। इस उदाहरण में लकार की अशुद्धि है। गम् धातु में लृट् लकार का प्रयोग किया गया है, जबकि ह्य: का अर्थ है-बीत चुका कल। अत: ह्य: के साथ भूतकाल हेतु लङ् लकार अगच्छत् ही शुद्ध होगा।

ध्यातव्यम्

- वाक्य में से केवल दोष को बदलकर वाक्य शुद्ध कर देना चाहिए। किसी अन्य शुद्ध पद में परिवर्तन नहीं करना चाहिए।
- अशुद्धि का संशोधन करने से पूर्व सभी रूप, कारक नियम, विशेष्य, विशेषण संबंधी नियम इत्यादि को ध्यानपूर्वक समझ लेना चाहिए।
- अशुद्धि क्या है यह समझ आने पर सभी नियमों को ध्यान में रखते हुए उसे शुद्ध करना चाहिए। शुद्ध करते समय वर्तनी का भी अवश्य ध्यान रखें।
- भवत् के शब्द रूपों के साथ क्रियापद जोड़ने के लिए प्रथम पुरुष का ही प्रयोग होता है। ऐसे सभी विशेष नियम या अपवादों को ध्यान में रखकर संशोधन करना चाहिए।
- यदि संख्या एक से चार तक है तब स्त्रीलिंग शब्दों के साथ संख्यावाची पदों के स्त्रीलिंग रूप का प्रयोग होता है इसी तरह पुंल्लिंग शब्दों के साथ पुंल्लिंग तथा नपुंसकलिंग शब्दों के साथ नपुंसकलिंग रूपों का प्रयोग होता है।
- एकवचन के कर्ता के साथ एकवचन, द्विवचन के साथ द्विवचन तथा बहुवचन के साथ बहुवचन संख्यावाची शब्दों का प्रयोग होता है।

प्रायोगिकाभ्यासः

I. निम्नलिखितवाक्येषु रञ्जितपदानां वचनं संशोध्य वाक्यानि पुनः लिखत।

(निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन पदों के वचन को शुद्ध कर वाक्यों को पुनः लिखिए।)

1. ऋचे पञ्चवादने उतिष्ठति। .....
2. तत्र द्वौ गायकः गायतः। .....
3. ते लताः पतत:। .....
4. दशरथस्य चत्वारः पुत्रः आसन्। .....
5. कपयः चणकान् खादति। .....

II. निम्नलिखितवाक्येषु रञ्जितपदानां लिङ्गं शुद्धं कृत्वा वाक्यानि पुनः लिखत।

(निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन पदों के लिंग को शुद्ध करके वाक्यों को पुन लिखिए।)

1. मार्गम् उभयतः वृक्षाणि सन्ति। .....
2. तव मित्रः आगच्छति। .....
3. आत्मा अजरा अमरा च भवति। .....
4. सुगन्धितः पवना वहति। .....
5. अग्निः प्रज्वलिता भवति। .....

III. अधोलिखितवाक्येषु रञ्जितपदान् शुद्धं कृत्वा वाक्यानि पुनः लिखत।

(निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन पदों को शुद्ध करके वाक्यों को पुनः लिखिए।)

1. भवती किम् कार्यम् करोषि? .....
2. भवान् अत्र आसन्दिकायाम् तिष्ठ। .....
3. अहम् अद्य विद्यालयम् न गमिष्यसि। .....
4. युवाम् क्रीडाक्षेत्रे कन्दुकेन क्रीडेताम्। .....
5. भरतस्य राज्याभिषेकः अभवः। .....

IV. अधोलिखितवाक्येषु रञ्जितपदानां लकारं शुद्धं कृत्वा लिखत।

(निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन पदों के लकार को शुद्ध करके लिखिए।)

1. अहम् ह्यः पितामहस्य गृहम् गमिष्यामि। .....
2. शिशुः इदानीम् क्रीडनकेन अक्रीडम्। .....
3. श्वः मम पितृव्या गृहम् आगच्छति। .....
4. अधुना अहम् चिकित्सालयम् गच्छेयम्। .....
5. पुरा एकः अशोकः नृपः भविष्यति। .....

V. अधोलिखितवाक्येषु रञ्जितपदानां विभक्तिं संशोध्य लिखत।

(निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन शब्दों को शुद्ध करके लिखिए।)

1. लता भ्रातुः सह पटेलनगरं गच्छति। .....
2. नराः तु चरणैः चलन्ति। .....
3. रामः वाणात् रावणम् अमारयत्। .....
4. कक्षायाम् कोलाहलाय अलम्। .....
5. ओऽम् भगवते वासुदेवम् नमः। .....

VI. उपपदविभक्त्यानुसारं वाक्यानि शुद्धं कुरुत।

(उपपद विभक्तियों के अनुसार वाक्यों को शुद्ध कीजिए।)

1. पिता बालकम् फलं यच्छति। .....
2. माम् संस्कृतपठनं रोचते। .....
3. श्रीगणेशं नमः। .....
4. मार्गस्य उभयतः वृक्षाणि सन्ति। .....
5. रोहितः सुमितं सह क्रीडति। .....
6. अखिलः पाककलायाः निपुणः। .....
7. कविभ्यः कालिदासः श्रेष्ठः। .....
8. वानरः वृक्षेण पतति। .....
9. एतत् दुग्धं बालेन अलम्। .....
10. विद्यालयं पुरतः सरणिः अस्ति। .....

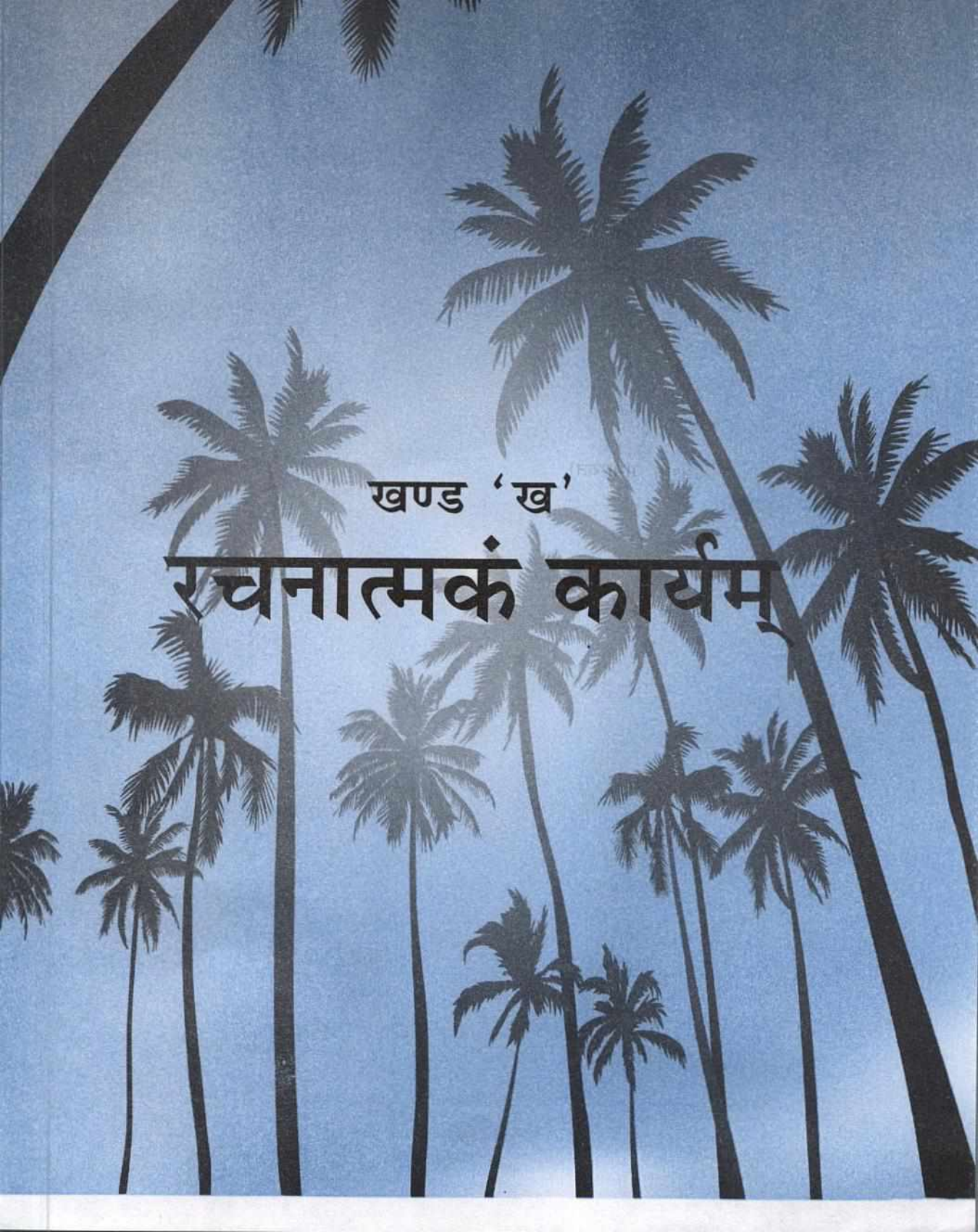

खण्ड 'ख'

रचनात्मकं कार्यम्

12 पत्रलेखनम्

पत्र लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

1. पत्र संक्षिप्त एवं सारगर्भित होना चाहिए।
2. पारिवारिक पत्रों के शुरू में स्नेही, प्रिय, पूज्या, पूज्यः एवं अन्य पत्रों के शुरू में महोदया, माननीयः, माननीया आदि आवश्यकतानुसार लिखना चाहिए।
3. अनौपचारिक पारिवारिक पत्रों के अंत में भवदीयः पुत्रः इत्यादि तथा औपचारिक पत्रों के अंत में भवदीयः, विश्वासपात्रः अथवा भवदीया, शिष्या इत्यादि लिखना चाहिए।
4. मंजूषा के पद पत्र में लिखते समय वर्तनी को जाँच लेना चाहिए।

उदाहरण देखिए–

1. शुल्कक्षमापनाय प्रधानाध्यापकं प्रति पत्रम्।

(शुल्क क्षमा करने के लिए प्रधानाध्यापक के प्रति पत्र।)

श्रीमान् मुख्याध्यापक महोदयः,

उच्चतरः माध्यमिकः विद्यालयः,

राजेन्द्रनगरम्, नवदेहली

श्रीमन्!

सेवायाम् सविनयम् (1) **निवेदनम्** अस्ति। यत् मम पिता एकः (2) **लिपिकः** अस्ति। तस्य (3) **वेतनम्** पञ्चशतमेव अस्ति। मम परिवारे चत्वारः (4) **सदस्याः** सन्ति। तेषां पालनपोषणम् (5) **अतिकठिनम्**। विद्यालयस्य शिक्षा-शुल्क-प्रदानं तु कठिनतरं (6) **भवति**। धनाभावेन कदाचित् मम अध्ययने (7) **व्यवधानम्** न स्यात्। अतः मम प्रार्थना (8) **यत्** शिक्षा-शुल्क-प्रदानात् (9) **मोचयित्वा** माम् (10) **अनुगृह्णन्तु**।

भवदीया शिष्या

समीहा

कक्षा- सप्तमी 'ब'

अनुक्रमांक- पञ्चदश

लिपिकः, सदस्याः, निवेदनम्, वेतनम्, अतिकठिनम्, व्यवधानम्, भवति, अनुगृह्णन्तु, मोचयित्वा, यत्

2. आकस्मिक अनुपस्थितिवशात् प्राचार्यमहोदयं प्रति क्षमायाचना पत्रम्।

(बिना अवकाश लिए अनुपस्थित होने पर प्राचार्य महोदय से क्षमा-याचना पत्र।)

श्री प्राचार्यमहोदयः,

उच्चतरः माध्यमिकः विद्यालयः,

मालवीयनगरम्, जयपुरम्।

श्रीमन्!

अहम् (1) **गते** सप्ताहे अष्टम्यां तिथौ (2) **गृहस्य** अनिवार्यकार्यवशात् (3) **विद्यालयात्** अनुपस्थितः (4) **आसम्**। तेन अहम् द्विरुप्यकशुल्कदण्डेन (5) **दण्डिता** अस्मि। अहम् कदापि बिना अवकाशम् अनुपस्थितः न तिष्ठामि। अयम् प्रथमः एव (6) **अवसरः**। तस्मात् तस्मिन् दिवसे (7) **मम** अनुपस्थितिः (8) **भवता** क्षन्तव्या (9) **इति** निवेदनम्।

(10) **भवदीया शिष्या**

रजनी,

कक्षा- सप्तमी 'अ'

अनुक्रमांकः-दश

भवदीया शिष्या, मम, गते, इति, भवता, दण्डिता, अवसरः, विद्यालयात्, गृहस्य, आसम्।

ध्यातव्यम्

- मंजूषा में दिए सभी शब्दों को ध्यान से पढ़कर समझ लें फिर भरना शुरू करें।
- पूरे पत्र को पुनः लिखें।
- उत्तरों पर सही संख्या डालकर पत्र में उन्हें रेखांकित करें।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. पत्र पुनः उत्तर पुस्तिका में लिखते समय वर्तनी का ध्यान रखें, विशेषकर मंजूषा के शब्दों की।
2. प्रश्न को ध्यान से पढ़कर संबोधित किसे करना है तथा भवदीया या भवदीय के बाद क्या नाम लिखना है इसका निर्णय करें।

प्रायोगिकाभ्यासः

• **मञ्जूषाप्रदत्तपदानां सहायतया पत्रं सम्पूर्णं कुरुत।**

(मंजूषा में दिए गए पदों की सहायता से पत्र पूर्ण कीजिए।)

1. पुस्तकानि प्रेषणाय पुस्तक प्रकाशकं प्रति पत्रं लिखत।

(पुस्तक भेजने के लिए पुस्तक प्रकाशक के प्रति पत्र लिखिए।)

26, साध्वीछात्रावासः,
पटेलनगरम्,
नवदेहली
तिथि : 04-04-20XX

मैसर्स : न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्रा० लिमिटेड
दरियागंज, नवदेहली।

श्रीमन्!

नमस्कारः।

सेवायाम् (1)..... निवेदनम् (2)..... अहम् (3)..... कानिचित् पुस्तकानि (4)..... इच्छामि यानि, (5)..... भवत्सकाशात् (6)..... । कृपया (7)..... तानि यथानिर्देशम् (8)..... सविधे (9)..... प्रदेय शुल्क-पार्सलमाधयमेन (वी०पी०पी०) (10)..... ।

पुस्तक का नाम	प्रति	प्रकाशक
नई दीप मणिका भाग-2	एका	न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्रा० लिमिटेड
मणिका संस्कृत व्याकरणम्	एका	न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्रा० लिमिटेड

सधन्यवादम्!

भवदीयः विश्वस्तः
चिनॉयः।

यत्, अधोलिखितानि, इदम्, मन्ये, मम, क्रेतुम्, भवता, सुलभानि, प्रेषणीयानि, अचिरात्

2. सद्वृत्तिप्रमाणपत्राय आचार्यं प्रति पत्रं लिखत।

(सद्वृत्तिप्रमाण-पत्र के लिए आचार्य को पत्र लिखिए।)

5, पटेलनगरम्,
नवदेहली
तिथि : 05-10-20XX

मान्यमहानुभाव!

सादरं नमामि।

सेवायाम् इदं (1)..... यत् मया (2)..... एव (3)..... भवतां (4)..... प्रावेशिकी परीक्षा द्वितीयश्रेण्याम् (5)..... । मम विद्यालयस्य क्रमांकः दशम्याः कक्षायाः (6)..... इति अभूत्। अहम् पादकन्दुकक्रीडायाः प्रमुखः क्रीडकः आसम्। (7)..... आचरणम् (8)..... आसीत्। इदानीम् अहम् काञ्चन सेवां लब्धुम् यत्नवान् (9)..... । कृपया (10)..... मम सद्वृत्तिप्रमाणपत्रं मम परिचयेन प्रेषणीयम्।

धन्यवादः!

भवदीयः प्रियः शिष्यः

भरतः

यथाशीघ्रम्, निवेदनम्, विद्यालयात्, मम, अस्मिन्, त्रिंशत्, विशुद्धम्, वर्षे, उत्तीर्णा, अस्मि

3. अग्रजस्य विवाहार्थम् दिनत्रयस्य अवकाश हेतु प्रधानाचार्यां प्रति पत्रं लिखत।

(अपने बड़े भाई के विवाह के लिए तीन दिन के अवकाश के लिए प्रधानाचार्या को पत्र लिखिए।)

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदयः,

रमण उच्चतर माध्यमिक विद्यालयः,

आगरा।

तिथि : 04-11-20XX

श्रीमन्!

सेवायाम् (1)..... निवेदनम् (2)..... यत् मम ज्येष्ठस्य (3)..... विवाहः (4)..... भविष्यति। (5)..... तु वाराणसीम् गमिष्यति। अतः (6)..... दिनत्रयस्य (7)..... प्रदाय (8)..... । (9)..... ।

भवदीया (10) .....

सुप्रिया

कक्षा-सप्तमी 'अ'

अनुक्रमांकः-त्रयोविंशतिः

अस्ति, इदम्, परश्वः, मह्यम्, अनुगृह्णन्तु, भ्रातुः, वरयात्रा, अवकाशं, शिष्या, धन्यवादः

4. स्वदूरभाषयन्त्रस्य निष्क्रियतां दूरीकर्तुं दूरभाषकेन्द्रस्य निदेशकं प्रति पत्रं लिखत।

(दूरभाष यंत्र की निष्क्रियता दूर करने के लिए दूरभाष केंद्र के निदेशक के प्रति पत्र लिखिए।)

गृह संख्या 50/2,

लाजपतनगरम्,

नवदेहली

तिथि : 01-10-20XX

सविधे,

निदेशक महोदय!

दूरभाषकेंद्रम्

लाजपतनगरम्, नवदेहली।

विषय:–दूरभाषस्य निष्क्रियता।

मान्य:,

मम गृहस्य दूरभाष: (1)..... कार्यम् न करोति। दूरभाषस्य संख्या 25410193 इति अस्ति। वयम् (2)..... अनुभवाम:। (3)..... शीघ्रम् (4)..... विकृतिम् (5)..... अस्माकम् (6)..... कुर्वन्तु, इति (7)..... प्रार्थना (8) .....।

(9).....।

निवेदक:

(10) .....।

बहुकष्टम्, दूरभाषस्य, दूरीकृत्य, सहायताम्, मम, गतसप्ताहात्, कृपया, अस्ति, हेमन्त:, धन्यवाद:

5. स्वविद्यालयस्य वार्षिकोत्सवं वर्णयन् पितरं प्रति पत्रमेकं लिखत।

(अपने विद्यालय के वार्षिकोत्सव का वर्णन करते हुए पिता के प्रति एक पत्र लिखिए।)

चिन्मय: छात्रावास:

नवदेहली

तिथि : 10-09-20XX

परमपूज्याय जनकाय नम:!

अत्र सर्वम् कुशलं तत्रास्तु।

गते (1).....अस्माकम् (2).....वार्षिकोत्सव: (3).....। अस्मिन् उत्सवे (4).....प्रमुखातिथि: आसीत्। अस्माकम् विद्यालये अनेके सांस्कृतिका: (5)..... अभवन् केचन् छात्रा: अगायन् केचन् च अनृत्यन्। प्राचार्य: विद्यालयस्य (6).....अपठत्। शिक्षानिदेशक: (7).....अकरोत्। अहम् अपि (8).....प्राप्तवती यत: अहम् कक्षायाम् प्रथमम् स्थानम् (9).....। मातृचरणयो: मम प्रणामा:।

(10).....पुत्री

ऋचा

भवदीया, पुरस्कारम्, विद्यालयस्य, प्रतिवेदनम्, सप्ताहे, लब्धवती, शिक्षानिदेशक:, पुरस्कारवितरणम्, अभवत्, कार्यक्रमा:

6. जन्तुशालाभ्रमणवर्णयन् स्वभगिनीम् प्रति पत्रम् लिखत।

(अपनी बहन को जंतुशाला भ्रमण के विषय में बताते हुए पत्र लिखिए।)

स्वामिनाथन् छात्रावासतः,

हैदराबादः

तिथि : 20-11-20XX

प्रिय भगिनी श्रुति,

अत्र छात्रावासे (1).....कुशलाः स्मः, मन्ये तत्र (2).....कुशलम् (3).....। ह्यः वयम् सर्वे छात्राः (4).....जन्तुशालाम् (5)..... अगच्छन्। जन्तुशाला तु (6).....आसीत्। अहम् तत्र सर्वप्रथमम् ऊदबिडालान् (7).....। तत्र श्वेतसिंहाः, केसरिणः, व्याघ्राः (8).....भ्रमन्ति स्म। जिराफाः, गजाः, मृगाः इत्यादयः तु स्वतंत्राः (9)..... स्म। वयं दूरतः एव तान् द्रष्टुं (10)..... स्म। तत्र अनेके विचित्राः पक्षिणः अपि पंजरे विलसन्ति स्म। अहम् त्वाम् अपि कदाचित् इमाम् जन्तुशालाम् नेष्यामि। मातृपितृचरणयोः शतप्रणामाः।

भवदीयाग्रजः

समयः

समर्थाः, पञ्जरे, भ्रमन्ति, अपश्यम्, विशाला, द्रष्टुम्, हैदराबादनगरस्य, सर्वम्, वयम्, अस्ति

13 वार्त्तालापः

वार्त्तालाप या संवाद भी संकेताधारित ही होता है। अतः इसे भी पुनः उत्तर पुस्तिका में पूरा लिखना चाहिए। पूरे संवाद को ध्यान से पढ़कर पहले तथा बाद वाले वाक्यों को ध्यान में रखकर संवाद पूर्ति की जानी चाहिए। वार्त्तालाप प्रश्नात्मक है या आदेशात्मक यह भी ध्यान में रखना चाहिए। उत्तर के शब्द वाक्य में रेखांकित करने चाहिए। वर्तनी का भी ध्यान रखना चाहिए। उदाहरण के लिए निम्नलिखित संवाद देखिए:

स्नेहा – त्वम् कुत्र गच्छसि?

ऋचा – अहम् विश्वविद्यालये गच्छामि।

स्नेहा – त्वम् तत्र कस्मिन् विषये प्रवेशं प्राप्त्यर्थम् गच्छसि?

ऋचा – अहम् तु संस्कृतस्य अध्ययनं कृत्वा वास्तुकलायाः क्षेत्रे प्रवेशप्राप्तुम् इच्छामि।

स्नेहा – तर्हि अत्र आगच्छ प्रथमं मया सह कार्यालयं गत्वा प्रवेशपत्रं पूरय।

ऋचा – अस्तु। शीघ्रं चल।

त्वम्, अहम्, गच्छसि, अत्र, इच्छामि

ध्यातव्यम्

- संवाद को पहले दो-तीन बार पूरा पढ़ें।
- पहले तथा बाद के वाक्यों को पढ़कर रिक्त स्थान भरें, क्योंकि उत्तर उन्हीं दो वाक्यों को देखकर मिल जाएगा।
- काल तथा लिंग का उचित प्रयोग होना चाहिए तथा वार्त्तालाप के अनुसार ही होना चाहिए।
- वाक्यों में परस्पर संबंध होना चाहिए।
- वाक्य संक्षिप्त होने चाहिए तथा उनका अनावश्यक विस्तार नहीं करना चाहिए
- यह ध्यान रखना चाहिए कि वाक्यपूर्ति के लिए उत्तर हमेशा वार्त्तालाप से ही प्राप्त हो जाते हैं।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. उत्तर के शब्दों या वाक्यों को रेखांकित कर देना चाहिए।
2. वर्तनी शुद्ध रखनी चाहिए।

प्रायोगिकाभ्यासः

• **मञ्जूषायाः सहायतया अधोलिखितसंवादानां रिक्तस्थानेषु उचितपदानि पूरयत।**

(मञ्जूषा की सहायता से नीचे लिखे संवादों के रिक्त स्थान में उचित पद भरिए।)

1. **राधा** – हे वीराः! यूयम् कुत्र गच्छथ?
   सैनिकः – राधे वयम् कश्मीरप्रदेशम् प्रति (1) ..... ।
   सन्दीपः – किं त्वं तत्र गत्वा(2) ..... रक्षसि?
   सैनिकः – आम्, अहं देशं (3) ..... ।
   हेमन्तः – भो सैनिक! तव हस्ते इदम् (4) ..... अस्ति?
   सैनिकः – मम हस्ते भुशुण्डी (5) ..... ।
   सन्दीपः – भो सैनिकाः शुभस्ते पन्थानः सन्तु।

   अस्ति, रक्षामि, किम्, देशम्, गच्छामः

2. **साहिलः** – हे समीहे! मह्यं कन्दुकं (1) ..... ।
   समीहा – अहं तु कन्दुकेन (2) ..... । त्वं अन्यं क्रीडनकं नीत्वा क्रीड।
   श्रेयः – भो समीहे! साहिलः तु तव अनुजः (3) ..... अतः त्वम् (4) ..... कन्दुकम् यच्छ।
   समीहा – आगच्छ साहिल! (5) ..... नय।

   क्रीडामि, तस्मै, अस्ति, कन्दुकम्, यच्छ

3. **अर्चना** – हे कविते! किम् त्वम् (1) ..... विद्यालयम् गमिष्यसि?
   कविता – नैव श्वः तु शनिवासरः अस्ति अतएव मम (2) ..... अस्ति।
   दिव्या – तर्हि अद्य सायंकाले कुत्रचित् (3) ..... चलिष्यामः।
   वन्दना – अस्तु, अप्पुगृहे चलिष्यामः तत्र 'ऑयेस्टर' इत्यस्मिन् स्थाने सानन्दम् (4) ..... ।
   सुमायरा – तर्हि शीघ्रं चल तत्परा च (5) ..... ।

   अवकाशः, भव, भ्रमणाय, श्वः, विहरिष्यामः

4. **राकेशः** – हे विजय! त्वम् कुत्र (1) ..... ?
   विजयः – अहम् तु फलानि क्रेतुम् विपणम् (2) ..... ।
   सुधीरः – तिष्ठ! आवाम् अपि त्वया (3) ..... चलिष्यावः।
   विजयः – युवाम् किम् (4) ..... इच्छथः?
   राकेशः – आवाम् तु स्वानुजाय एकं क्रीडनकं क्रेतुम् (5) ..... ।

   गच्छामि, क्रेतुम्, सह, गच्छसि, इच्छावः

5. **शशांकः** – तव अभिधानम् (1) ..... अस्ति?
   सचिनः – मम नाम तु सचिनः (2) ..... ।
   मनुः – त्वम् (3) ..... खादसि?
   सचिनः – अहम् तु 'पास्ता' इति भोग्यम् (4) ..... ।
   शशांकः – मह्यम् अपि (5) ..... रोचते।

   किम्, खादामि, अस्ति, पास्ता, किम्

6. **गिरिः** – हे कमले! शीघ्रम् उपरि (1) ..... ।
कमला – हे अनुज! आगच्छामि, कथय किम् (2) ..... ?
गिरिः – अहं तु त्वां एकं तारकं दर्शयितुम् (3) ..... ।
कमला – (दृष्ट्वा) न एतत् (4) ..... एतत् तु मंगलग्रहं यत् भासते आकाशे। किं त्वं समाचारान् न शृणोषि यत् वयम् अद्यत्वे मंगलग्रहं स्वनेत्राभ्याम् (5) ..... समर्थाः। एतत् तु तदेव मंगलग्रहम्।

तारकम्, कथयसि, द्रष्टुम्, इच्छामि, आगच्छ

7. **छात्राः** – गुरवे नमः।
अध्यापकः – नमस्कारः स्वस्थाने (1) ..... ।
छात्राः – अद्य वयं कं पाठं (2) ..... ?
अध्यापकः – अद्य (3) ..... संस्कृतग्रामः इति पाठं पाठयामि।
छात्राः – भो अध्यापक! किम् भवान् (4) ..... अगच्छत्?
अध्यापकः – आम्! कर्णाटके एकः (5) ..... अस्ति। किं जानासि ग्रामे सर्वे जनाः संस्कृतेन एव वार्तालापं कुर्वन्ति?

अहम्, तत्रः, तिष्ठत, संस्कृतग्रामः, पठिष्यामः।

8. **सृजनः** – मित्र! तव किं ..... अस्ति?
समीहा – मम अभिधानम् समीहा अस्ति।
सृजनः – हे समीहे ..... कुत्र वससि?
समीहा – मित्र! अहम् तु फिलिपिन्स इति देशे वसामि? तव अभिधानम् कि ..... ?
सृजनः – मम नाम सृजनः अस्ति।
अथ वद ..... देशस्य राजधानी का अस्ति?
समीहा – फिलिपिन्स ..... राजधानी मनीला इति अस्ति।

तव, देशस्य, त्वम् अभिधानम्, अस्ति

9. **अनुजा** – हे भगिनि! अद्य कः वारः (1) ..... ?
ज्येष्ठा – अद्य तु भौमवासरः अस्ति।
अनुजा – तर्हि श्वः बुधवासरः भविष्यति ह्यः च (2) ..... आसीत्।
ज्येष्ठा – सत्यम् (3) ..... । परश्वः (4) ..... तु वयं सर्वे पितृव्यस्य गृहे चलिष्यामः तत्र तु मातुलः मातुलानि अपि आगमिष्यतौ। यतः बृहस्पतिवासरे तु (5) ..... अनुजस्य जन्मदिवसः भविष्यति।

कथयसि, अस्माकम्, अस्ति, वृहस्पतिवासरे, सोमवासरः

10. **माता** – हे पुत्रि! सैन्धवम् आनय।
पुत्री – इदम् अस्ति (1) ..... ।
माता – अधुना लवङ्गद्वयं प्रयच्छ।
पुत्री – (2) ..... । हे अम्बे! त्वम् किम् (3) ..... ?
माता – हे पुत्रि! अहम् तु गृञ्जनानि (4) ..... ।
पुत्री – मह्यम् तु पक्वानि गृञ्जनानि न रोचन्ते। मह्यम् तु अपक्वम् गृञ्जनमेकम् (5) ..... ।

पचसि, प्रयच्छ, सैन्धवम्, प्रयच्छामि, पचामि

14 चित्रवर्णनम्

मंजूषा में दिए गए शब्दों की सहायता लेकर वाक्यों का निर्माण कर चित्र वर्णन करते समय निम्नलिखित बातों को समझ लें :

1. चित्रवर्णन के वाक्य संक्षिप्त तथा सारगर्भित होने चाहिए।
2. चित्रवर्णन के वाक्य में उपपद विभक्तियों का उचित प्रयोग होना चाहिए।
3. चित्रवर्णन में मंजूषा के शब्दों के बिना भी वाक्य बनाए जा सकते हैं। मंजूषा सहायता के लिए है।
4. मंजूषा के सभी शब्दों का प्रयोग करना आवश्यक नहीं होता।
5. मंजूषा के शब्दों को लिंग विभक्ति, वचन इत्यादि के अनुसार बदला जा सकता है।

उदाहरण:

मंजूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया पञ्चवाक्येषु चित्रवर्णनं कुरुत।

(मंजूषा में दिए गए शब्दों की सहायता से पाँच वाक्यों में चित्र वर्णन कीजिए।)

1.

उद्यानम्, आम्रस्य, सेवफलस्य, पुष्पाणि, जलप्रपातः, पादपाः, जलपात्रेण, सरणिः, फलन्ति, नारङ्गस्य, मालाकारः

उत्तर: 1. अस्मिन् चित्रे एकम् उद्यानम् वर्णितम् अस्ति।
2. उद्याने एका सरणिः अपि अस्ति।
3. उपवने आम्रस्य, सेवफलस्य नारङ्गस्य च फलानि सन्ति।
4. मालाकारः उद्याने कार्यम् करोति तम् रक्षति च।
5. अत्र एकः जलप्रपातः अपि अस्ति।

2.

हिमालयः, मुनयः, आश्रमाः, नद्यः, निस्सरन्ति, अद्यापि, रक्षकः

उत्तर: 1. अस्मिन् चित्रे हिमालयम् वर्णितम् अस्ति।
2. अद्यापि हिमालये अनेके मुनयः वसन्ति।
3. चित्रे एकः आश्रमः अपि अस्ति।
4. हिमालयात् नद्यः निस्सरन्ति।
5. पर्यटकाः तत्र सानन्दम् विचरन्ति।

ध्यातव्यम्

- वाक्यों का निर्माण सावधानी से करना चाहिए।
- वर्तनी का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- चित्र का वर्णन करने के लिए मंजूषा के शब्दों की विभक्तियाँ बदलकर भी वाक्य-निर्माण किया जा सकता है।
- बीच-बीच में अव्यय पदों का प्रयोग भी किया जा सकता है।
- कर्त्तापदों का चुनाव करके क्रियापदों को उन्हीं के अनुसार प्रयुक्त करना चाहिए।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. वाक्य संक्षिप्त तथा सार से युक्त होने चाहिए।
2. कारक तथा उपपद विभक्तियों का प्रयोग उचित रूप से किया जाना चाहिए।
3. केवल सरल व स्पष्ट वाक्य ही बनाने चाहिए।
4. पाण्डित्य प्रदर्शन हेतु क्लिष्ट वाक्य-निर्माण नहीं करना चाहिए। इससे अशुद्धि होने की संभावना कम होती है।

प्रायोगिकाभ्यासः

अधोप्रदत्तान् चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया पञ्चवाक्येषु चित्रवर्णनम् कुरुत।
(नीचे दिए गए चित्र को देखकर मंजूषा में दिए गए शब्दों की सहायता से पाँच वाक्यों में चित्र वर्णन कीजिए।)

1.

वनस्य, वृक्षस्य, अधः, उपरि, खगाः
भल्लुकः, स्कन्धस्योपरि, वानरः, मृगः,
गजः, वृक्षाः, अग्रे, चित्ररासभः,
पुष्पाणि, सर्वे, प्रसन्नाः

....
....
....
....
....
....

2.

वृक्षस्य, सरणिः, अधः,
वार्तापत्रम्, सज्जनपुरुषः, पुष्पाणि,
बालकः, बालिकाः, भ्रमतः,
भवनानि, युवानौ

3.

प्रातराशम् कुर्वन्ति,
आसन्दिकायाम्, तिष्ठन्ति,
फलानि, सर्वे प्रसन्नाः, कुक्कुरः
सन्ति, अपि, दुग्धम्, जनकः,
अम्बा, चषके, बालिका

4.

बसस्थानम्, पंक्तिबद्धाः, बसयानम्, रसम्, जनकेन सह, आगच्छति, बालः, पुरुषः

5.

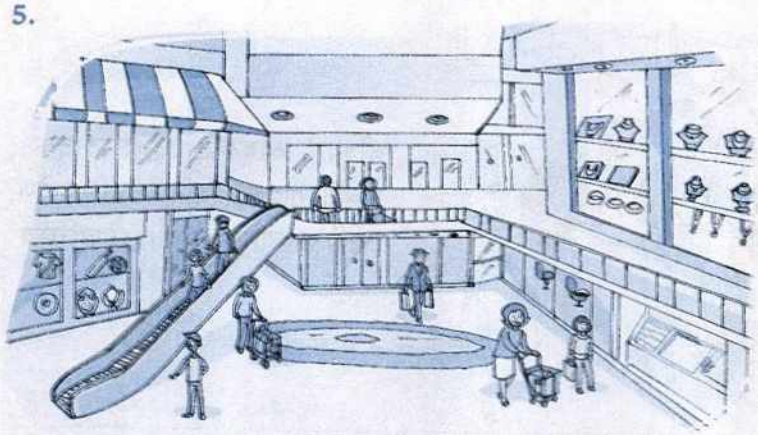

'मॉल' इति, विविधानि, आपणानि, आभूषणानि, स्वचालितसोपानं, चलचित्रगृहम् जनाः, इदम्, अस्ति, स्यूतम्

6.

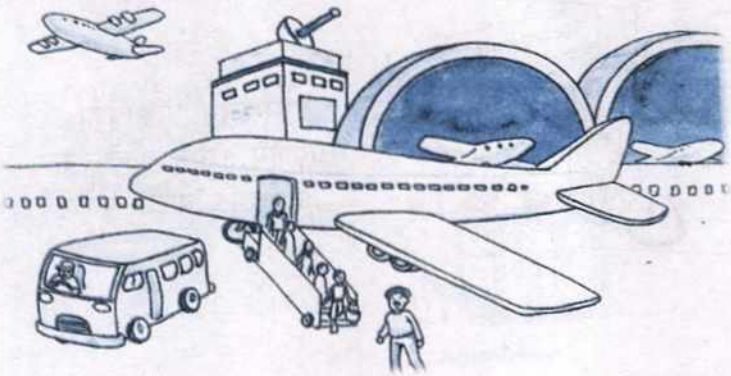

सज्जितम्, स्वच्छम्, विशालम्
वायुयानस्थलम्, जनाः, यात्रा
कर्तुम्, यान्ति, शीघ्रम् गन्तुम्,
यात्राम्, आरुह्य, इच्छन्ति,
इतः-ततः।

7.

वीणाम् वादयति, तबलावादकः,
गायति, गायकः, ध्वनिविस्तारकयन्त्रेण,
पार्श्वे वादयन्ति, नृत्यतः, रंगमंचस्य

8.

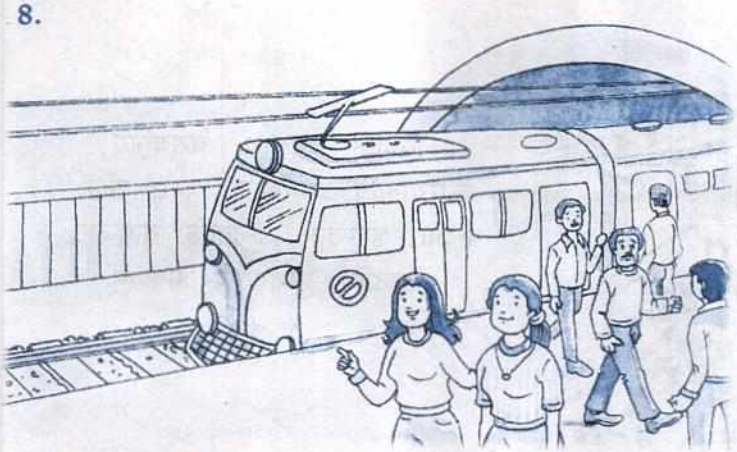

मेट्रोस्थलम्, सुन्दरम्, स्वगन्तव्ये
स्वच्छम्, आरुह्यन्ति, देहलीनगरे,
उपकरोति, जनाः, सरलतया,
गच्छन्ति, प्रसन्नाः सन्ति,
समयं च रक्षन्ति

9.

शाकस्य आपणम्, विविधानि शाकानि,
आलुकम्, पलाण्डुः, रक्तफलम्,
कूष्माण्डम्, गोजिह्विका, वृन्ताकः,
जनाः, अम्बा, बालिका, स्यूतः

10.

भवनानि, चतुष्पथः, बसयानम्,
कारयानानि, आपणानि, जनाः, वक्षः,
पादपाः, इतस्ततः, उन्नतानि, वृद्धजनाः,
तिष्ठन्ति, पुस्तकस्य आपणम्

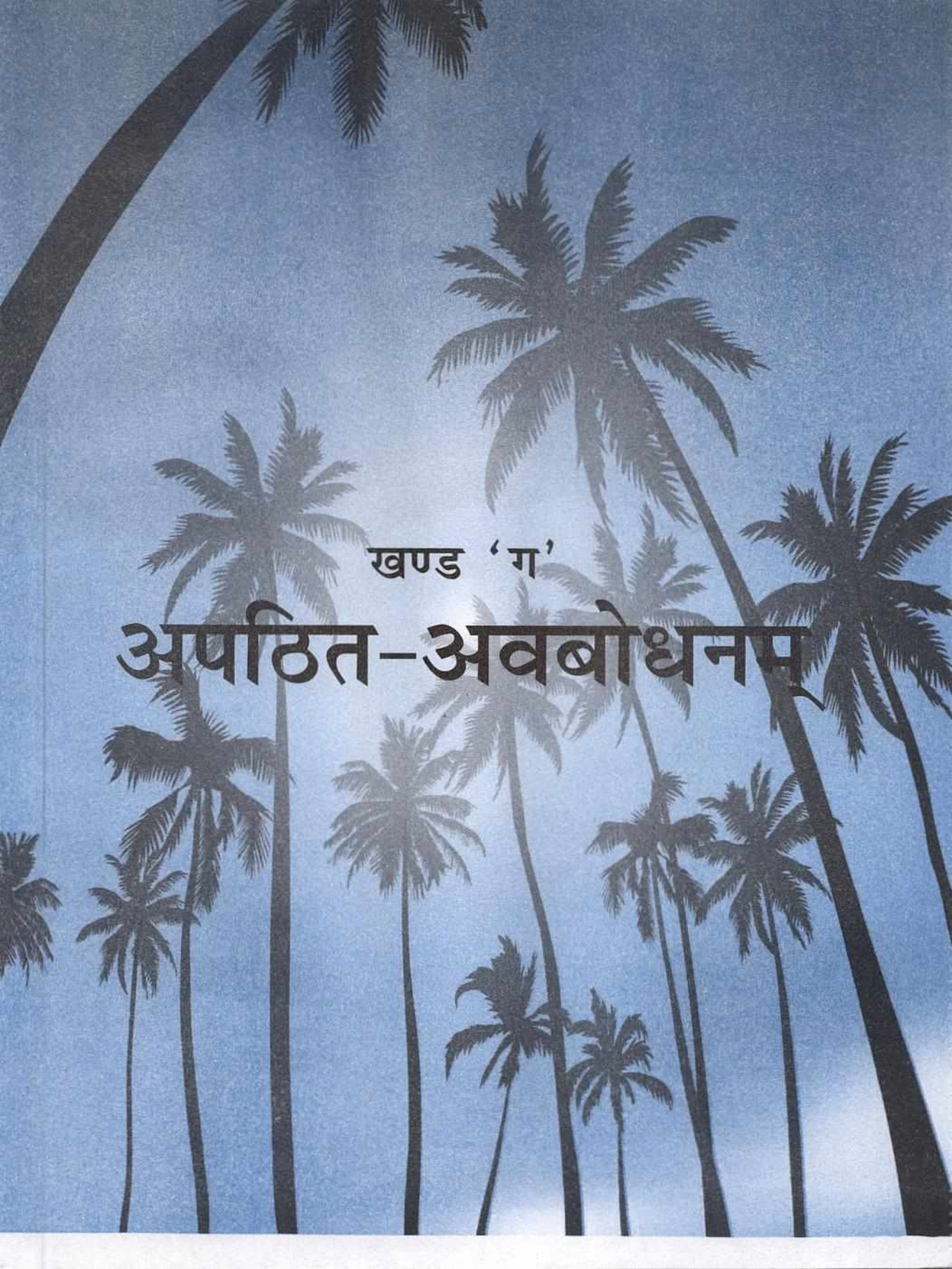

खण्ड 'ग'

अपठित-अवबोधनम्

15 गद्यांशाः

40-50 पदपरिमिताः

अपठित गद्यांश का उत्तर देने से पहले विद्यार्थियों को निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए :

1. अपठित गद्यांश को 2-3 बार ध्यानपूर्वक पढ़ें।
2. उसके भावों और शब्दों के अर्थ को समझने का प्रयत्न करें।
3. प्रत्येक पद के परिचय को समझकर ही प्रश्नों के उत्तर लिखना आरंभ करें।

गद्यांशं पठित्वा निम्नलिखितप्रश्नानाम् उत्तरं लिखित।

(गद्यांशों को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।)

1. अयोध्यायाः शासकः दशरथः आसीत्। तस्य चत्वारः पुत्राः आसन्। ज्येष्ठः पुत्रः श्रीरामः शस्त्रेषु शस्त्रविद्यायां च निपुणः आसीत्। तस्य भार्या सीता आसीत्। सा जनकस्य पुत्री आसीत्। दशरथस्य आदेशेन रामः चतुर्दश वर्षाणि वने अवसत्। यदा चतुर्दश वर्षाणां पश्चात् ते अयोध्यां प्रत्यागच्छन् तदा अयोध्यायां जनाः प्रसन्नाः अभवन्। जनाः स्वगृहान् अभूषयन्। गृहेषु दीपकाः अपि प्रज्वालिताः।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

1. अयोध्यायाः शासकः कः आसीत्?
   उत्तर- दशरथः।
2. शस्त्रेषु कः निपुणः आसीत्?
   उत्तर- श्रीरामः।
3. जनकस्य पुत्री का आसीत्?
   उत्तर- सीता।
4. कस्य आदेशेन श्रीरामः वने अगच्छत्?
   उत्तर- दशरथस्य।

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए।)

1. रामः वने किमर्थम् अगच्छत्?
   उत्तर- रामः दशरथस्य आदेशेन वनम् अगच्छत्।
2. जनाः स्वगृहान् कदा अभूषयन्?
   उत्तर- जनाः स्वगृहान् तदा अभूषयन् यदा रामः अयोध्यां प्रत्यागच्छत्।

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

1. धातुं लिखत–अभूषयन्।

   उत्तर- √भूष्।

2. अर्थं लिखत–प्रत्यागच्छन्।

   उत्तर- वापस आए।

2. अहम् सिद्धान्तः अस्मि। मम मित्रस्य नाम चिनॉयः अस्ति। सः मम गृहस्य समीपे एव वसति। आवाम् एकस्मिन् एव विद्यालये पठावः। आवाम् प्रातः सह एव भ्रमणाय गच्छावः। आवाम् सायंकाले मिलित्वा क्रीडाक्षेत्रे कन्दुकेन क्रीडावः। सः पठने कुशलः अस्ति। सः न केवलं मम अपितु सर्वेषां सहायकः अस्ति। सः अतीव सरलस्वभावः अस्ति। सः एकः आदर्शः बालकः अस्ति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

1. सिद्धान्तस्य मित्रम् कः अस्ति?

   उत्तर- चिनॉयः।

2. तौ कदा भ्रमणाय गच्छतः?

   उत्तर- प्रातः।

3. तौ सायंकाले कुत्र क्रीडतः?

   उत्तर- क्रीडाक्षेत्रे।

4. चिनॉयः कीदृशः बालः न अस्ति?

   उत्तर- आदर्शः।

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए।)

1. चिनॉयः कुत्र वसति?

   उत्तर- चिनॉयः सिद्धान्तस्य गृहस्य समीपे वसति।

2. तौ सायंकाले किम् कुरुतः?

   उत्तर- तौ सायंकाले क्रीडाक्षेत्रे कन्दुकेन क्रीडतः।

III. निम्नाङ्कितानाम् अर्थं लिखत।

(निम्नांकित के अर्थ लिखिए।)

1. विद्यालये

   उत्तर- विद्यालय में।

2. क्रीडाक्षेत्रे

   उत्तर- खेल के मैदान में।

ध्यातव्यम्

- एकपदेन प्रश्न का उत्तर एक ही पद में दें।
- पूर्णवाक्येन में एक पद में उत्तर न दें।
- बिना पद बनाए भाषा में किसी शब्द का प्रयोग न करें।
- प्रश्नों में क्या पूछा गया है उत्तर उसी के अनुसार दें।
- जितना पूछा जाए उतना ही लिखें।
- यदि प्रश्न की भाषा समझ न आए तो प्रश्न को बार-बार पढ़कर समझने का प्रयत्न करें।
- कथा का शीर्षक एक पद या एक वाक्य में भी हो सकता है। शीर्षक प्रमुख तथ्य को ध्यान में रखकर ही दिया जाना चाहिए।

स्मरणीयाः बिन्दवः

1. गद्यांश को बार-बार पढ़कर समझ लें।
2. गद्यांश के अर्थ और भाव को अच्छी तरह समझकर ही प्रश्नों के उत्तर लिखें।

प्रायोगिकाभ्यासः

1. एकस्मिन् स्थाने कश्चित् वंशजः नामकः एकः रजकः वसति स्म। तस्य एकः दुर्बलः गर्दभः आसीत्। एकदा रजकः कुतश्चित् व्याघ्रचर्मम् प्राप्तवान् अचिन्तयत् च अनेन चर्मणा आच्छादितम् रासभं रात्रौ यवक्षेत्रेषु उत्स्रक्ष्यामि। क्षेत्रपालः च तम् व्याघ्रम् मत्वा बहिः न निष्कासयिष्यति। एवं च कृते सः रासभः हृष्टः पुष्टः च अभवत्।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

1. दुर्बलः कः आसीत्? .....
2. रजकः किम् प्राप्तवान्? .....
3. व्याघ्रचर्मम् कः प्राप्तवान्? .....
4. हृष्टः पुष्टः कः अभवत्? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

1. रजकः किम् अचिन्तयत्?

.....

2. क्षेत्रपालः रासभं किमर्थं न निष्कासयिष्यति?

.....

III. कोष्ठकात् उचितम् अर्थं चित्वा लिखत।

(कोष्ठक में से उचित अर्थ चुनकर लिखिए।)

1. चर्मणा (चर्म से, चम्मच से) = ...

2. क्षेत्रपालः (खेत का मालिक, खेत का रक्षक) = ...

2. एकस्मिन् वने जीवकः नामकः एकः सिंहः वसति स्म। एकदा एकः मूषकः तत्र अगच्छत्। सः सुप्तस्य सिंहस्य पृष्ठे अनृत्यत् तस्य केशान् च अकृन्तत् सिंहः क्रोधितः अभवत्। एतत् दृष्ट्वा मूषकः अवदत्–''कृपाम् कुरु माम् च न मारय इति।''

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

1. जीवकः कः आसीत्? .....

2. सः कुत्र अवसत्? .....

3. सिंहस्य पृष्ठे कः नृत्यम् अकरोत्? .....

4. क्रोधितः कः अभवत्? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

1. मूषकः सिंहम् किम् अवदत्?

.....

2. मूषकः सिंहस्य समीपे गत्वा किम् अकरोत्?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

1. 'कृपाम्' इति पदे का विभक्तिः अस्ति? .....

2. 'पृष्ठे' इति शब्दस्य अर्थम् कोष्ठकात् चित्वा लिखत। (पीठ पर/पत्ते पर)

.....

3. पुरा एकः शिविः नाम राजा अभवत्। सः तु दानवीरः दयालुः च आसीत्। सः एकदा श्येनात् भीताय कपोताय स्वप्राणान् अपि अयच्छत्। सः तस्मै श्येनाय सादरम् खड्गेन आत्ममांसम् उत्कृत्य निर्मांसः अभूत् कपोतं च अरक्षत्।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

1. शिविः कः आसीत्? .....
2. दानवीरः कः आसीत्? .....
3. कपोतः कस्मात् भीतः आसीत्? .....
4. सः श्येनाय किम् अयच्छत्? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

1. राजा शिविः कीदृशः आसीत्?

.....

2. सः श्येनाय किम् अयच्छत्?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

1. उत्कृत्य, इति पदस्य अर्थं कोष्ठकात् चित्वा लिखत। (काटकर/उठकर)

.....

2. 'कीदृशः' इति पदे लिङ्गम् अस्ति– .....

4. भारतम् पर्वानाम् देशः मन्यते। विजयदशमी अपि एकम् प्रमुखम् पर्वम् अस्ति। अयम् महोत्सवः आश्विनमासे आगच्छति। क्षत्रियाः अस्मिन् अवसरे अस्त्राणाम् शस्त्राणाम् च पूजाम् कुर्वन्ति। अस्मिन् एव दिवसे श्रीरामः दुष्टम् रावणम् हत्वा सीतायाः रक्षाम् अकरोत्। इदम् पर्वम् असत्यस्योपरि सत्यस्य विजयस्य प्रतीकम् अस्ति।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

1. भारतस्य प्रमुखपर्वस्य नाम लिखत। .....
2. अयम् महोत्सवः कदा आगच्छति? .....
3. अस्त्राणाम् शस्त्राणाम् च पूजां के कुर्वन्ति? .....
4. दुष्टः कः आसीत्? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

1. विजयदशमी कस्य प्रतीकम् अस्ति?

.....

2. अस्मिन् दिवसे क्षत्रिया: किम् कुर्वन्ति?

.....

III. निम्नाङ्कितयो: पदयो: वचनम् लिखत।

(निम्नांकित पदों के वचन लिखिए।)

1. दुष्ट: .....

2. शस्त्राणाम् .....

5. अस्मिन् संसारे अनेकानि दु:खानि सन्ति। संसारे तु दु:खानाम् मूलकारणम् अज्ञानम् एव अस्ति। यदि समाजे शिक्षाया: अभाव: भवति तर्हि तु समाजे अनेके विकारा: उत्पन्ना: भवन्ति। भारते अन्धविश्वासानाम् कारणम् अपि अशिक्षा एव अस्ति। शिक्षिते समाजे एव योग्या: नागरिका: समृद्धा: भवन्ति। अस्माभि: अपि शिक्षाया: दानेन अशिक्षितस्य वर्गस्य सहायता कर्त्तव्या।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

1. अज्ञानम् केषाम् कारणम् भवति? .....

2. अन्धविश्वासानाम् कारणम् किम्? .....

3. के समृद्धा: भवन्ति? .....

4. दु:खानि कुत्र सन्ति? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

1. समाजे विकारा: कदा उत्पन्ना: भवन्ति?

.....

2. दु:खानाम् मूलकारणम् किम् भवति?

.....

III. यथानिर्देशं उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

1. 'अस्मिन्' इति पदे का विभक्ति:? .....

2. 'विकारा:' इति पदस्य अर्थ: क:? .....

6. सूचीमुखः नाम एकः खगः आसीत्। एकदा सः अपश्यत् यत् शीतेन कम्पमानाः वानराः गुञ्जाफलानि एव अग्निः मत्वा फूत्कुर्वन्ति। सूचीमुखः तान् अवदत् एतानि तु गुञ्जाफलानि सन्ति न तु अग्निः। एतस्मात् शीतरक्षा न भविष्यति। कश्चित् सुरक्षितगुहायां गच्छ। एतत् श्रुत्वा सर्वे वानराः कुपिताः अभवन्। क्रुद्धः एकः वानरः च तस्य प्राणान् अहरत्।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

1. खगस्य नाम किम् आसीत्? .....
2. वानराः किम् फूत्कुर्वन्ति? .....
3. किम् गुञ्जाफलैः शीतरक्षा भवति? .....
4. किम् तत्र अग्निः आसीत्? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

1. सूचीमुखः किम् अपश्यत्?

.....

2. खगस्य वचनम् श्रुत्वा वानराः किम् अकुर्वन्?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

1. 'भविष्यति' इति पदे कः लकारः अस्ति? .....
2. 'गुञ्जाफलम्' इति पदस्य अर्थं लिखत।। .....

7. लालालाजपतरायः लवपुरे सायमनकमीशनस्य विरोधे प्रदर्शनस्य नेतृत्वम् अकरोत्। तदा आरक्षिदलस्य एकः कर्ता तस्य उपरि तीव्रयष्टिप्रहारम् अकरोत्। यष्टिप्रहारेण सः कालान्तरे पंचत्वम् गतः। तदा भक्तसिंहः (भगतसिंहः) तस्य सहयोगीजनाः च तस्य प्रतीकाराय संकल्पम् अकुर्वन्।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

1. प्रदर्शनस्य नेता कः आसीत्? .....
2. लालालाजपतरायः कस्य प्रहारेण मृतः? .....
3. प्रतीकाराय भक्तसिंहः किम् अकरोत्? .....
4. लालालाजपतरायः सायमनकमीशनस्य विरोधः कुत्र अकरोत्? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

1. लालालाजपतरायः कथम् अमरत्?

.....

2. लालालाजपतरायः लवपुरे किम् अकरोत्?

.....

I. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

समुचितम् अर्थम् लिखत।

(क) 'कालान्तरे' .....

(ख) 'पंचत्वम्' .....

8. एकः विप्रः एकम् अजम् स्कन्धे नीत्वा गच्छति स्म। त्रिषु धूर्तेषु प्रथमः धूर्तः वञ्चनाय तम् अवदत्–भो विप्र! सारमेयम् स्कन्धे आरोपयित्वा किमर्थम् गच्छसि ? एतत् तु न उचितम्। तदा विप्रः कुपितः अभवत् अवदत् च–"किम् अन्धः भवान् यत् अजम् सारमेयः इति वदसि।" धूर्तः अवदत्–कोपम् मा कुरु। यथेच्छम् गच्छ!" कुपितः ब्राह्मणः अग्रे अगच्छत्। किञ्चित् मार्गे गत्वा एव द्वितीयः धूर्तः विप्रस्य सम्मुखे भूत्वा तम् अकथयत्–अयुक्तम् एतत् यत् त्वम् सारमेयम् स्कन्धाधिरूढम् नयसि।"

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

1. विप्रः कम् स्कन्धे नीत्वा गच्छति स्म? .....
2. कुपितः कः अभवत्? .....
3. विप्रः कम् अन्धः इति अवदत्? .....
4. 'अयुक्तम्' एतत् इति कः अकथयत्? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

1. प्रथमः धूर्तः अजम् किम् अमन्यत्?

.....

2. द्वितीयः धूर्तः विप्रम् किम् अकथयत्?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

प्रकृति- प्रत्ययम् च पृथक् कृत्वा लिखत।

1. नीत्वा ..... + ...
2. गत्वा ..... + ...

80-100 पदपरिमिता:

1. वीरबालकेषु अभिमन्यु: प्रमुख: बाल: अस्ति। स: सप्तमहारथिभि: एकाकी एव युद्धम् अकरोत् युद्धे स: वीरगतिम् प्राप्त:। तस्य गाथा अद्यापि स्मरणीया अस्ति। अभिमन्यु: अर्जुनस्य पुत्र: आसीत्। तस्य माता सुभद्रा आसीत्। यदा स: सुभद्राया: गर्भे आसीत्, तदा एव स: चक्रव्यूहे प्रवेशम् अशृणोत्। अयम् बाल: बाल्यकालात् एव अतिवीर: साहसी चासीत्। एकदा यदा अर्जुन: सुदूरम् युद्धाय अगच्छत् तदा कौरवा: चक्रव्यूहम् अरचयन्। अर्जुनात् अतिरिक्त: अन्ये पाण्डवा: चक्रव्यूहभेदनम् न अजानन्। चक्रव्यूहस्य वार्ताम् श्रुत्वा अभिमन्यु: अवदत्-"अहम् चक्रव्यूहस्य प्रवेशद्वाराणाम् त्रोटनविधिम् जानामि चक्रव्यूहभेदनम् तु मया मातु: गर्भे एव शिक्षितम्। मम पिता एकदा वार्तामध्ये मम मातु: सम्मुखं चक्रव्यूहभेदनम् अकथयत्। तदा एव अहम् सम्पूर्ण-वार्ताम् अशृणोत्। अधुना चिन्ताम् विहाय युद्धानुमतिम् यच्छ।"

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

1. वीरबालेषु प्रमुख: क:? .....
2. अभिमन्यु: कस्य पुत्र: आसीत्? .....
3. स: मातु: गर्भे एव किम् अशृणोत्? .....
4. चक्रव्यूहम् के अरचयन्? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

1. बाल्यकालात् एव अभिमन्यु: कीदृश: बाल: आसीत्?

.....

2. कौरवा: चक्रव्यूहम् कदा अरचयन्?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

1. 'अयम् बाल: अतिवीर: आसीत्।' इति अस्मिन् वाक्ये विशेष्यं किम्? .....
2. अनुच्छेदे 'त्यक्त्वा' इति अर्थाय किम् पदम् प्रयुक्तम्? .....
3. अनुच्छेदात् 'समीपम्' इति पदस्य एकम् विपर्ययम् मञ्जूषात: विचित्य लिखत। .....
4. 'अरचयन्' इति क्रियापदस्य कर्तृपदम् किम्? .....

IV. गद्यांशस्य समुचितम् शीर्षकम् लिखत।

(गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

.....

2. एकदा एकः काकः पिपासितः अभवत्। सः जलपानाय इतः ततः अभ्रमत् परन्तु सः कुत्रापि जलम् न अपश्यत्। अन्ते सः उद्याने एकम् घटम् अपश्यत्। सः घटस्य समीपे अगच्छत्। तदा सः घटस्य मुखे उपाविशत् अपश्यत् च यत् घटे तु स्वल्पमेव जलम् अभवत्। सः जलस्य पानाय वारम् वारम् प्रयत्नम् करोत्। सः जलस्य पाने सफलः न अभवत् तथा अपि सः निराशः न अभवत् । ततः सः एकम् उपायम् अचिन्तयत् सः पाषाणस्य खण्डानि घटे अक्षिपत् एवम् घटस्य तलस्थम् जलम् घटस्य कण्ठे आगच्छत्। सः पर्याप्तं जलम् अपिबत्। सः अति प्रसन्नः अभवत्।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

1. पिपासितः कः आसीत्? .....
2. घटे किम् आसीत्? .....
3. काकः कस्य मुखे उपाविशत्? .....
4. निराशः कः न अभवत्? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

1. स्वल्पम् जलम् दृष्ट्वा काकः किम् अकरोत्?

.....

2. पिपासितः काकः कदा प्रसन्नः अभवत्?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

1. 'एकः काकः पिपासितः अभवत्' इत्यस्मिन् वाक्ये विशेष्यपदम् किम्? .....
2. अनुच्छेदात् 'अगच्छत्' इति पदस्य विलोमक्रियापदम् लिखत। .....
3. 'अकरोत्' इत्यस्य क्रियापदस्य कर्तृपदः कः? .....
4. 'बहुवारम्' इति अर्थाय अनुच्छेदे किम् पदम् प्रयुक्तम्? .....

IV. गद्यांशस्य शीर्षकमेकम् लिखत।

(गद्यांश का एक शीर्षक लिखिए।)

.....

3. एकस्मिन् नगरे ईश्वरस्य एकः भक्तः रमादासः आसीत्। सः सायंकाले मन्दिरम् गत्वा दीपम् प्रज्वालयति। सः ईश्वरम् कथयति यत् त्वम् तु अतीव दयालुः असि। मम सहायताम् कुरु इति। तस्मिन् एव नगरे एकः अन्यः नरः रामदासः अपि अवसत्। सः अपि प्रतिदिनम् मन्दिरम् गच्छति। सः च तत्र गत्वा कथयति–"हे ईश्वर! त्वम् तु प्रतिदिनम् जनान् पीडयसि एतत् न शोभनम्। एकदा भयंकरवर्षाकाले अपि सः मन्दिरम् आगच्छति। रमादासः चिन्तयति यत् सः एव ईश्वरस्य निष्कामभक्तः अस्ति।"

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

1. रमादासः कः आसीत्? .....
2. सः दीपकं कदा प्रज्वालयति? .....
3. रामदासः प्रतिदिनम् कुत्र गच्छति? .....
4. निष्कामभक्तः कः आसीत्? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

1. रमादासः ईश्वरम् किम् कथयति स्म?

.....

2. निष्कामभक्तः कः आसीत्?

.....

III. निम्नलिखितपदेषु का विभक्तिः अस्ति लिखत।

(निम्नलिखित पदों की विभक्ति लिखें)

1. जनान् ..... 2. नगरे .....
3. सायंकाले ..... 4. तस्मिन् .....

IV. गद्यांशस्य शीर्षकमेकम् लिखत।

(गद्यांश का एक शीर्षक लिखिए।)

.....

4. एकस्मिन् कूपे विचित्रदत्तः नाम मण्डूकराजः सपरिवारेण निवसति स्म। सः एकदा कूपात् बहिः आगच्छत्। सः मयंकनामकं सर्पम् अपश्यत् अचिन्तयत् च यत् अहम् अस्य सहायतया स्वशत्रुनाशम् करिष्यामि। सः तम् सर्पम् अवदत्–"अहम् तु कूपे वसामि। कृपया मया सह चल, मम गृहे एव तिष्ठ सर्वान् मण्डूकान् च भक्षय। तत्र तु अनेके मण्डूकाः सन्ति। ततः मयंकसर्पः विचित्रदत्तेन सह कूपे अगच्छत्। सर्पः शनैः-शनैः मण्डूकस्य सर्वान् शत्रून् अखादत्। तदा सर्पः अकथयत् यत् अहम् तु क्षुधापीडितः अहम अस्मि। तव परिवारस्य सदस्यान्

भक्षयिष्यामि। सर्पस्य वचनं श्रुत्वा मण्डूकः महत् पश्चातापम् अकरोत्। सः मयंकसर्पः च तस्य मण्डूककुलम् तम् विचित्रदत्तम् च अखादत्।''

II. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

1. सपरिवारेण कूपे कः अवसत्? .....
2. सर्पस्य नाम कः आसीत्? .....
3. मयंकसर्पः केन सह अगच्छत्? .....
4. क्षुधापीडितः कः आसीत्? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

1. सर्पम् दृष्ट्वा विचित्रदत्तः किम् अचिन्तयत्?

.....

2. क्षुधापीडितः मयंकसर्पः किम् अकरोत्?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

1. अनुच्छेदात् चित्वा 'अवदत्' इति पदस्य पर्यायं लिखत .....
2. 'अस्य सहायतया अहम् स्वशत्रुनाशम् करिष्यामि' अत्र 'अस्य' सर्वनाम कस्मै आगच्छत्?

.....

3. 'महत् पश्चातापम्' अत्र विशेषणम् किम्? .....
4. 'कृपया' इति पदस्य लिङ्गं लिखत। .....

IV. गद्यांशस्य कृते समुचितं शीर्षकं लिखत।

(गद्यांश के लिए उचित शीर्षक लिखिए।)

.....

5. एकस्मिन् तडागे एक कच्छपः वसति स्म। तस्य द्वे मित्रे हंसजातीये अपि तत्र एव अवसताम्। ते तु प्रतिदिनम् तत्र एव अक्रीडन्। एकदा तस्मिन् प्रदेशे वृष्टिः न अभवत् सरः च शनैः-शनैः शुष्कः अभवत्। जलस्य अभावात् दुःखितः कूर्मः हंसौ अकथयत् यत् प्रभूतजलसनाथं सरः अन्विष्यताम्। यदा अग्रिमे दिवसे हंसौ सरम् अन्विष्य आगच्छताम् तदा कूर्मः अवदत् कश्चिद् लघुकाष्ठम् आनयताम् अहं काष्ठस्य मध्यप्रदेशम् दन्तैः ग्रहीष्यामि युवाम् च तत् काष्ठम् मया सहितम् संगृह्य तत्सरः नेष्यथः। तथानुष्ठिते हंसौ एकम् पुरम् अपश्यताम्। तत्र विस्मिताः जनाः नीयमानम् कच्छपं दृष्ट्वा कोलाहलम् अकुर्वन्। तेषाम् कोलाहलम् श्रुत्वा कूर्मः अवदत्-''कथम् एषः कोलाहलः'' एतत् वक्तुमिच्छन् सः अर्धोक्ते एव अधः पतित्वा मृतः।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

1. कच्छपः कुत्र वसति स्म? .....
2. हंसौ कस्य मित्रे स्तः? .....
3. कोलाहलम् के कुर्वन्ति स्म? .....
4. अधः पतित्वा कः मृतः? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

1. कच्छपः किमर्थम् दुःखितः अभवत्?

.....

2. पुरस्य जनाः किमर्थम् विस्मिताः अभवन्?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

1. 'श्रुत्वा' इत्यस्मिन् पदे कः प्रत्ययः? .....
2. सन्धिच्छेदं कुरुत–'वक्तुमिच्छन्'। .....
3. 'नीयमानम् कच्छपम्' अनयोः विशेष्यपदम् किम्? .....
4. 'कच्छपः' इत्यस्य पर्यायमेकम् लिखत। .....

II. गद्यांशस्य शीर्षकमेकम् लिखत।

(गद्यांश का एक शीर्षक लिखिए।)

.....

6. एकस्मिन् आश्रमे महातपः नाम एकः मुनिः अवसत्। एकदा सः बिडालात् भीतम् एकम् मूषकम् अपश्यत् सः तपः प्रभावेण तम् मूषकम् अपि बिडालः अकरोत्। अधुना सः बिडालः कुक्कुरात् बिभेति। तदा सः मुनिः बिडालस्योपरि जलम् परिसिञ्चन् अवदत्–त्वम् कुक्कुरः भव। बिडालः तु तदा कुक्कुरः अभवत् अधुना एकस्मिन् दिवसे सिंहात् भीतः कुक्कुरः मुनेः समीपम् आगच्छत्। मुनिः कुक्कुरम् **सिंहः** इति अकरोत्। सिंहः भूत्वा सः निर्भयम् इतः ततः भ्रमति स्म। सर्वे कथयन्ति स्म "धन्यः एषः महातपः, यस्य कृपया मूषकः सिंहः अभवत्।" एतत् श्रुत्वा सिंहः अचिन्तयत्–यावद् अयम् मुनिः जीवति तावत् मम अपकीर्तिः एव भविष्यति। सिंहः च एतत् विचार्य मुनिम् मारयितुम् गतः। तस्य कृतघ्नस्य दुर्भावम् ज्ञात्वा मुनिः अशपत्–"पुनः मूषकः भव।"

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

1. महातपः कुत्र अवसत्? .....

2. मूषकः कस्मात् भीतः आसीत्? .....

3. कुक्कुरः कस्मात् भीतः आसीत्? .....

4. कृतघ्नः कः आसीत्? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

1. मूषकः सिंहः भूत्वा किम् करोति स्म?

.....

2. जनाः किम् कथयन्ति स्म?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

1. 'अशपत्' इत्यस्य क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्? .....

2. 'तस्य' इति सर्वनामस्य विशेषणपदं किम्? .....

3. अनुच्छेदात् 'हन्तुम्' इतिपदस्य पर्यायमेकम् विचित्य लिखत। .....

4. 'भूत्वा' इत्यस्य पदस्य प्रत्ययम् लिखत .....

IV. गद्यांशस्य समुचितम् शीर्षकम् लिखत।

(गद्यांश का समुचित शीर्षक लिखिए।)

.....

7. वीर शिवाजिमहाराजस्य जनकः श्रीशाहजिः आसीत्। अस्य चरित्र-निर्माणे जननी-जनकयोः, गुरुदेव दादा कोण्डदेवस्य च महान् हस्तः आसीत्। जिजामाता बालशिवाजिराजाय रामायण-महाभारतयोः कथाः कथयति स्म। एवं बालहृदये एव स्वाधीनतायाः ज्योतिः निरन्तरं जाज्वल्यमाना आसीत्। बीजापुरनरेशस्य आदिलशाहस्य सेनापतिः अफजलखानः शिवराजस्य प्रदेशे आक्रमणम् आरब्धवान्। अफजलखानः स्वदूतम् आज्ञापयत्–"अहम् तु शिवराजेन सह वार्तां कर्तुम् इच्छामि। तम् एकाकी एव आनय।" एवम् निर्दिष्टः अपि शिवराजः अजानत् यत् सः शिवराजम् हन्तुम् इच्छति। सः कवचम्, अङ्गवस्त्रम् व्याघ्रनखान् च धृत्वा तेन सह वार्तायै तस्य शिविरे अगच्छत्। यदा अफजलखानः शिवराजाय आलिंगनम् अयच्छत् छलेन तदा एव सः शिवराजस्य पृष्ठे छुरिकया प्रहारम् कर्तुम् तत्परः अभवत्। परम् तस्य भावम् ज्ञात्वा एव शिवराजेन व्याघ्रनखैः तस्य उदरं विदीर्णम् अकरोत्।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

1. शिवाजी महाराजस्य जनकः कः आसीत्? .....
2. महाभारत-रामायणयोः कथाः का कथयति स्म? .....
3. बीजापुरनरेशः कः आसीत्? .....
4. आदिलशाहस्य सेनापतिः कः आसीत्? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

1. अफजलखानः स्वदूतम् किम् आज्ञापयत्?

.....

2. यदा अफजलखानः शिवराजाय आलिंगनम् अददात् तदा तेन किम् कपटम् कृतम्?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

1. 'आसीत्' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्? .....
2. 'छुरिकया' इत्यस्य पदस्य मूलशब्दः कः? .....
3. 'धृत्वा' इति पदे प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत? ..... + ...
4. 'ज्योतिः निरन्तरम् जाज्वल्यमाना' अत्र विशेष्यपदं किम्? .....

IV. गद्यांशस्य समुचितमेकम् शीर्षकम् लिखत।

(गद्यांश का एक समुचित शीर्षक लिखिए।)

.....

8. कस्मिंश्चित् नगरे एकः नसीमः नाम धनिकः वसति। नसीमः अतीव उदारपुरुषः आसीत्। सः सदैव निर्धनेभ्यः धनम्, वस्त्रहीनेभ्यः च वस्त्रम् यच्छति। एकदा तस्य प्रदेशे वर्षा न अभवत्। अन्नस्य तु तस्मिन् प्रदेशे अभावः एव अभवत्। तदा सः नसीमः सर्वेभ्यः जनेभ्यः अन्नदानम् अकरोत्। सः प्रतिदिनम् निर्धनेभ्यः अन्नम् भोजनम् च यच्छति। तस्य नगरे कोऽपि जनः क्षुधया पीडितः न अभवत्। एकदा नसीमः मार्गे काष्ठभारं वहन् एकम् नईमनाम वृद्धम् अपश्यत्। सः तम् अपृच्छत्-"त्वम् भोजनाय नसीमस्य गृहे किमर्थम् न गच्छसि? वृथा एव वृद्धावस्थायाम् अपि श्रमम् करोषि इति।" वृद्धः अवदत्-"श्रम एव मम जीवनम् न तु हस्तप्रसारणम्।"

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

1. धनिकः कीदृशः पुरुषः आसीत्? .....
2. सः केभ्यः वस्त्राणि यच्छति? .....
3. नसीमः भारवहन् कम् अपश्यत्? .....
4. यदा वर्षा न अभवत् तदा कस्य अभावः अभवत्? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

1. यदा वर्षा न अभवत् तदा नसीमः किम् अकरोत्?

.....

2. नसीमः वृद्धम् किम् अपृच्छत्?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

1. 'क्षुधया' इत्यस्य पदस्य मूलशब्दः कः? .....
2. 'मार्गे' इत्यस्मिन् पदे का विभक्तिः अस्ति। .....
3. 'करोषि' क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्? .....
4. अनुच्छेदस्य अन्तिम वाक्ये कति अव्ययाः सन्ति? .....

IV. गद्यांशस्य समुचितम् एकम् शीर्षकम् यच्छत्।

(उपरोक्त गद्यांश का समुचित एक शीर्षक दीजिए।)

.....

9. सुनीलः नामकः एकः कृषकः तस्य भार्या संगीता च प्रतिदिनम् स्वक्षेत्रे कार्यम् अकुरुताम्। तयोः समरः साहिलः च द्वौ पुत्रौ स्तः। एकदा यदा कृषकः खनित्रेण भूमिम् खनति स्म तदा सः एकम् स्वर्णस्य महाकुम्भम् प्राप्नोति। कुम्भे च स्वर्णमुद्राः आसन्। तौ प्रसन्नौ भूत्वा गृहे अगच्छताम्। अग्रिमे दिवसे कृषकस्य भार्या स्वसख्यै सर्वम् न्यवेदयत्। जनाः कृषकम् कथयन्ति धनम् राजकोषे यच्छ। यदा रात्रौ तस्य पत्नी स्वपिति स्म तदा कृषकः अनेकानि मिष्टान्नानि क्रीत्वा सूत्रखण्डैः बद्ध्वा उद्यानस्य वृक्षेषु लम्बयति। यदा तस्य पत्नी वृक्षेषु मिष्टान्नानि पश्यति सा एकैकशः बहूनि मिष्टान्नानि खादति। प्रातः कृषकस्य पत्नी यदा सर्वेभ्यः जनेभ्यः कथयति यत् तस्याः क्षेत्रे मिष्टान्नानि फलितानि सन्ति। सर्वे जनाः हसित्वा गच्छन्ति। कृषकः तु कथयति– "मम भार्या तु अद्यत्वे कल्पनालोके एव विचरति। स्वर्णकुम्भः अपि तस्याः कल्पना एव।"

I. एकपदेन उत्तरत।

(कोष्ठक से पद चुनकर एक पद में उत्तर दीजिए।)

1. क्षेत्रे कृषकः किम् प्राप्नोति? .....
2. के कथयन्ति धनम् राजकोषे प्रयच्छ इति? .....
3. रात्रौ कृषकः पत्नीम् किम् प्रदर्शयति? .....
4. किम् तयोः क्षेत्रे मिष्टान्नानि फलितानि? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

1. कृषकः उद्याने किम् प्राप्तवान्?

.....

2. किम् उद्याने मिष्टान्नानि उत्पन्नाः अभवन्?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

1. 'कुम्भे' इत्यस्य पदस्यः वर्ण-विश्लेषणम् कुरुत। .....
2. 'खादति' क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्? .....
3. 'एकैकशः बहूनि मिष्टान्नानि' इति अत्र विशेष्यपदम् किम्? .....
4. हसित्वा इत्यत्र कः मूलधातुः? .....

IV. कथायाः समुचितम् शीर्षकमेकम् लिखत।

(कथा का एक यथोचित शीर्षक लिखिए।)

.....

10. श्रीनगरं वसुन्धरायाः नन्दनवनम् अस्ति। अत्र शालीमार-चश्माशाही-निशात बाग-नामधेयानि उद्यानानि सन्ति। अत्र कृत्रिमाः निर्झराः, विविधानि च कुसुमानि सन्ति। एतानि उद्यानानि एव कश्मीरम् अपरं देवलोकम् कुर्वन्ति। कश्मीरस्य मध्ये डललेकः विद्यते। अत्र अनेकाः गृहनौकाः पर्यटकेभ्यः गृहनिवासस्य आनन्दम् यच्छन्ति। लघुनौकाः अत्र 'शिकारा' इति कथयन्ते जनाः। लघुनौकाः तु तत्र नववधू इव सुसज्जिताः भवन्ति। अत्र 'चारचिनार' इति एकम् कृत्रिमम् पिकनिक-स्थलम् अपि डललेकस्य मध्ये एव अस्ति। तस्य समीपे एव नेहरू-उद्यानम् अपि पर्यटकानाम् आकर्षणस्य केन्द्रम् अस्ति। श्रीनगरस्य यात्रा अधुना तथा संकटग्रस्ता न अस्ति यथा गतवर्षेषु आसीत्। अद्यत्वे यात्राव्यवस्था ईदृशी सुदृढा अस्ति यत् वयम् यात्रायाः आनन्दम् प्राप्तुम् समर्थाः एव।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

1. वसुन्धरायाः नन्दनवनम् किम्? .....

2. कानि कश्मीरम् स्वर्गतुल्यम् कुर्वन्ति? .....

3. डललेकस्य मध्ये किम् अस्ति? .....

4. किम् अधुना यात्राव्यवस्था उचिता अस्ति? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

1. अत्र कानि उद्यानानि सन्ति?

.....

2. 'चारचिनार' इति किम् अस्ति?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

1. 'प्राप्तुम्' इति पदे प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुतः। ..... + ... + ...

2. गद्यांशात् द्वौ अव्ययौ चित्वा लिखत। ..... , ...

3. अनुच्छेदात् 'उपवनानि' इति पदस्य पर्यायमेकम् लिखत। .....

4. अनुच्छेदात् 'समर्थाः' इत्यस्य एकम् विपर्ययम् चित्वा लिखत। .....

IV. गद्यांशस्य समुचितम् शीर्षकम् लिखत।

(गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।)

.....

11. एकः कर्त्तव्यपरायणः नगररक्षकः आसीत्। यदा सः इतः ततः अभ्रमत् तदा एकम् वृद्धम् महापुरुषम् अपश्यत्। सः वृद्धः आम्रवृक्षस्य आरोपणे लीनः आसीत्। इदम् दृष्ट्वा सः नगररक्षकः तम् वृद्धम् महापुरुषम् अवदत्–"भवान् किमर्थम् वृथा परिश्रमम् करोति? यतः यदा एषः वृक्षः फलिष्यति तदा भवान् जीवितः न भविष्यति, अतः अलम् एतेन श्रमेण।" महापुरुषः हसित्वा अवदत्–'पश्यतु भवान् एतान् फलयुक्तान् वृक्षान्। एतेषाम् आरोपणम् मया न कृतम् परम् अहम् फलानि खादित्वा सन्तुष्टः भवामि। अतः यदा मम आरोपितस्य वृक्षस्य फलानि अन्ये खादिष्यन्ति, अहम् पुनः प्रसन्नः भविष्यामि।" महापुरुषस्य वचनम् श्रुत्वा नगररक्षकः अचिन्तयत्–"अहम् अपि वृक्षान् आरोपयिष्यामि।"

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।)

1. नगररक्षकः कीदृशम् महापुरुषम् अपश्यत्। .....
2. कः अवदत्–"अलम् एतेन श्रमेण।" .....
3. वृद्धः कम् कथयति–"अहम् पुनः प्रसन्नः भविष्यामि।" .....
4. महापुरुषः कस्य वृक्षस्य आरोपणे लीनः आसीत्? .....

II. एकवाक्येन उत्तरत।

(एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

1. यदा नगररक्षकः इतः ततः अभ्रमत् तदा कम् अपश्यत्?

.....

2. अन्ते नगररक्षकः किम् अचिन्तयत्?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत।

(निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।)

1. 'नगररक्षकः' इत्यस्य विशेषणपदम् किम्? .....
2. गद्यांशे 'व्यर्थम्' इति पदाय कः शब्दः? .....
3. 'अप्रसन्नः' इत्यस्य विलोमपदम् लिखत। .....
4. 'भविष्यामि' क्रियापदस्य कर्तृपदम् किम्? .....

IV. अस्य गद्यांशस्य शीर्षकमेकम् लिखत।

(इस गद्यांश का एक शीर्षक लिखिए।)

.....

अभ्यास-प्रश्नपत्रम्-1

अवधिः–सार्धैकहोरा (1½ घंटे) पूर्णाङ्काः–50

1. निम्नलिखितम् गद्यांशम् पठित्वा प्रदत्तप्रश्नान् उत्तरत। 5

(निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।)

एकः टोपिकाविक्रेता टोपिकापुटकम् वृक्षस्य अधः निधाय अस्वपत्। तस्य वृक्षस्योपरि स्थिताः वानराः टोपिकाविक्रेताम् एव अनुकर्तुम् सर्वाः टोपिकाः पुटकात् निष्कास्य शिरसि धारयित्वा पुनः वृक्षम् आरोहन्। यदा सः टोपिकाविक्रेता प्रबुद्धः तदा तान् वानरान् दृष्ट्वा क्रोधेन स्वटोपिकाम् भूमौ क्षिपति। वानराः सर्वे तमेव अनुकुर्वन्ति टोपिकाः च क्षिपन्ति। प्रसन्नः टोपिकाविक्रेता सर्वाः टोपिकाः स्वपुटके स्थापयित्वा अग्रे अगच्छत्।

I. एकपदेन उत्तरत।

(एक पद में उत्तर दीजिए।) ½ × 2 = 1

(क) पुटके काः सन्ति? .....

(ख) टोपिकाविक्रेता कस्य अधः अस्वपत्? .....

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत। 1 × 2 = 2

(पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए।)

(क) वानराः प्रथमं किम् कृत्वा वृक्षम् आरोहन्?

.....

(ख) पुनः क्रोधेन टोपिकाविक्रेता किम् अकरोत्?

.....

III. यथानिर्देशम् उत्तरत। ½ × 4 = 2

(निर्देश के अनुसार उत्तर दीजिए।)

(क) 'अनुकर्तुम् सर्वाः टोपिकाः' अत्र संज्ञापदम् किम्? .....

(ख) 'उपरि' अस्य विपर्ययमेकम् अनुच्छेदात् विचित्य लिखत। .....

(ग) 'अस्वपत्' इति पदे कः लकारः अस्ति? (लङ्लकारः/लोट्लकारः) .....

(घ) अनुच्छेदात् एकम् अव्ययम् चित्वा लिखत। .....

2. मञ्जूषायाः उचितं पदं चित्वा निम्नलिखितवार्त्तालापं पूरयत। 1 × 5 = 5

(मंजूषा से उचित पद चुनकर निम्नलिखित वार्त्तालाप को पूरा कीजिए।)

पठामि, संस्कृत, अस्ति, किम्, संस्कृतव्याकरणम्

(क) ईशिका–हे ध्रुव! त्वम् 1. ..... करोषि?

(ख) ध्रुवः–अहम् तु संस्कृतस्य व्याकरणम् 2. ..... ।

(ग) ईशिका–त्वम् 3. ..... किमर्थम् पठसि?

(घ) ध्रुवः–संस्कृतव्याकरणम् पठित्वा न केवलम् अहम् 4. ..... भाषायाः ज्ञाने समर्थः भविष्यामि अपितु विश्वस्य अन्य भाषाज्ञाने अपि समर्थः भविष्यामि।

(ङ) ईशिका–सत्यम्। संस्कृतभाषा तु अद्य कम्प्यूटरस्य प्रयोगाय सर्वोत्तमा भाषा 5. ..... ।

3. निम्नलिखितवाक्येषु रिक्तस्थानानि मञ्जूषायाः सहायतया पूरयत। 1 × 5 = 5

(निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति मंजूषा की सहायता से कीजिए।)

दन्ताः, व्, औष्ठौ, ञ्, मूर्धा

(क) च्, ट्, क्, ञ वर्णेषु ..... वर्णः नासिक्यः अस्ति।

(ख) 'वर्षा' पदे 'ष' इत्यस्य उच्चारणस्थानम् ..... अस्ति।

(ग) ..... वर्णस्य उच्चारणस्थानं दन्तोष्ठौ अस्ति।

(घ) 'फ' वर्णस्य उच्चारणस्थानम् ..... अस्ति।

(ङ) 'न' वर्णस्य उच्चारणस्थानम् नासिका ..... च सन्ति।

4. अधोलिखितपदेषु सन्धिपदम् सन्धिच्छेदम् वा कोष्ठकात् प्रदत्तम् उचितविकल्पेभ्यः चिनुत। 1 × 5 = 5

(नीचे लिखे शब्दों की संधि अथवा संधिच्छेद कोष्ठक में दिए गए उचित विकल्प में से चुनिए।)

(क) कदापि ..... (कदा + अपि/कद + आपि)

(ख) मातृ + आज्ञा ..... (मात्राज्ञा/मातृज्ञा)

(ग) पावकः ..... (पौ + अकः/पाव् + अकः)

(घ) लते एते ..... (लतेऽते/लते एते)

(ङ) गृह + उद्यानम् ..... (गृहोद्यानम्/गृहुद्यानम्)

5. निम्नलिखितवाक्येषु निर्देशानुसारम् उचितरूपम् लिखित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत। 1 × 5 = 5

(निम्नलिखित वाक्यों में निर्देशानुसार रूप लिखकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

(क) इदम् कङ्कणम् ..... प्रयच्छ। (अस्मद् शब्द, चतुर्थी विभक्ति, एकवचनम्)

(ख) ..... आगतौ। (कवि शब्द, प्रथमा विभक्ति, द्विवचनम्)

(ग) वन्दे ..... । (मातृ शब्द, द्वितीया विभक्ति, एकवचनम्)

(घ) पुनः मूषकः ..... । (√भू लोट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन)

(ङ) भवन्तौ ..... । (√गम्, लङ् लकार, द्विवचन)

6. निम्नलिखितेषु वर्णविन्यासम् संयोजनम् वा कुरुत। $1 \times 5 = 5$

(निम्नलिखित का वर्ण-विन्यास अथवा संयोजन कीजिए।)

(क) कृपया = ... + ... + ... + ... + ... + ...

(ख) अ + त् + र् + अ = ...

(ग) एवम् = ... + ... + ... + ...

(घ) प् + उ + स् + त् + अ + क् + अ + स् + य् + अ = ...

(ङ) रक्ष = ... + ... + ... + ... + ...

7. अधोप्रदत्तान् घटिकानुसारम् कोष्ठकात् उचितविकल्पं चित्वा समयम् लिखत। $1 \times 5 = 5$

(नीचे दी गई घड़ियों को देखकर कोष्ठक से उचित विकल्प चुनकर समय लिखिए।)

(क) 8.00 रविवासरे मम माता ..... मह्यम् दुग्धं फलं च यच्छति।

(अष्ट वादने/चतुर्वादने)

(ख) 8.30 सा ..... प्रातराशम् यच्छति।

(सपादअष्ट वादने/सार्धअष्ट वादने)

(ग) 1.45 ..... सा रोटिकां पचति।

(सपादएकवादने/पादोनद्विवादने)

(घ) 5.30 ..... मया सह क्रीडति।

(षड्वादने/सार्धपञ्चवादने)

(ङ) 7.15 ..... माम् पाठयति।

(सपादसप्तवादने/पादोनसप्तवादने)

8. निम्नलिखितेभ्यः अङ्केभ्यः उचितसंस्कृतपदानि कोष्ठकात् चित्वा लिखत। $1 \times 5 = 5$

(निम्नलिखित अंकों के लिए उचित संस्कृत शब्द कोष्ठक से चुनकर लिखिए।)

(क) 96 ..... (नवषष्टिः/षड्नवतिः)

(ख) 84 ..... (अष्टचत्वारिंशत/चतुरशीतिः)

(ग) 73 ..... (सप्तत्रिंशत्/त्रिसप्ततिः)

(घ) 99 ..... (नवनवतिः/एकोननवतिः)

(ङ) 28 ..... (अष्टविंशतिः/द्वयशीतिः)

9. कोष्ठकात् उचितपदम् चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत। $1 \times 5 = 5$

(कोष्ठक से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

(क) ..... सह राधा नृत्यति। (श्रीकृष्णेन्/श्रीकृष्णस्य)

(ख) ..... हीनः न शोभते। (विद्यया/विद्यायाः)

(ग) अलम् ..... कक्षायाम्। (हसनेन/हसनाय)

(घ) जॉलीदेवी, शान्तनुः क्षितिजः च ..... दानम् यच्छन्ति। (साधुम्/साध्वे)

(ङ) ..... नमः। (लक्ष्म्यै/लक्ष्म्याय)

10. निम्नलिखितशब्देषु प्रकृतिप्रत्ययविभागं कोष्ठकात् उचितम् पदं चित्वा कुरुत। $1 \times 5 = 5$

(निम्नलिखित शब्दों का प्रकृति-प्रत्यय विभाग कोष्ठक से उचित पद चुनकर कीजिए।)

(क) श्रोतुम् (श्रो + तुमुन् / श्रु + तुमुन्) .....

(ख) ज्ञात्वा (ज्ञात् + क्त्वा / ज्ञा + क्त्वा) .....

(ग) आरुह्य (आ + रुह् + ल्यप् / आह् + ल्यप्) .....

(घ) नत्वा (नम् + क्त्वा / √न + क्त्वा) .....

(ङ) कर्त्तव्यम् (कर्ता + तव्यत्/कृ + तव्यत्) .....

अभ्यास-प्रश्नपत्रम्-2

अवधिः–सार्धैकहोरा (1½ घंटे) **पूर्णाङ्काः–50**

1. उचितम् मेलनम् कुरुत। $1 \times 5 = 5$

(उचित मिलान कीजिए।)

वर्णाः	उच्चारणस्थानानि
(क) ठ्	(*i*) कण्ठतालुः
(ख) ष्	(*ii*) ओष्ठ्यः
(ग) फ्	(*iii*) मूर्धा
(घ) ए	(*iv*) दन्त्यः
(ङ) ऌ	(*v*) मूर्धा

2. अधोलिखितपदेषु सन्धिम् सन्धिच्छेदम् वा कोष्ठकात् चित्वा लिखत। $1 \times 5 = 5$

(नीचे लिखे पदों में सन्धि अथवा सन्धिच्छेद कोष्ठक से चुनकर लिखिए।)

(क) परीक्षा = ... (परि + ईक्षा/परि + इक्षा)

(ख) महोदयः = ... (महो + दयः/महा + उदयः)

(ग) यदि + अपि = ... (यद्यपि/यीदपि)

(घ) कोऽपि = ... (को + पि/कः + अपि)

(ङ) नयनम् = ... (नय् + अनम्/ने + अनम्)

3. उचितरूपेण रिक्तस्थानानि पूरयत। $1 \times 5 = 5$

(उचित रूप से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।)

(क) धातृ धातृणी ..... (ख) वध्वाम् ..... वधूषु

(ग) गुरौ ..... गुरुषु (घ) ..... श्रोष्यावः श्रोष्यामः

(ङ) ..... जिघ्रेताम् जिघ्रेयुः

4. निम्नलिखितेषु वर्णविन्यासम् संयोजनम् वा कुरुत। $1 \times 5 = 5$

(निम्नलिखित में वर्ण-विन्यास अथवा संयोग कीजिए।)

(क) त् + ए = ...

(ख) मृत्युलोके = ... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ...

(ग) भ् + उ + व् + इ = ...

(घ) भारभूताः = ... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ...

(ङ) म् + ऋ + ग् + आ + श् + च् + अ + र् + अ + न् + त् + इ = ...

5. अधोप्रदत्तान् घटिकाम् दृष्ट्वा कोष्ठकात् उचितं विकल्पं विचित्य रिक्तस्थानेषु समयम् लिखत। $1 \times 5 = 5$

(नीचे दी गई घड़ी को देखकर कोष्ठक से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों में समय लिखिए।)

(क) 9.00 = ... वादनम्। (नव/द्वादश)

(ख) 5.15 = ... वादनम्। (सार्धपञ्च/सपादपञ्च)

(ग) 6.30 = ... वादनम्। (षड्/सार्धषड्)

(घ) 12.45 = ... वादनम्। (पादोनद्वादश/पादोनएक)

(ङ) 5.15 = ... वादनम्। (सपादपञ्च/पादोनपञ्च)

6. अधोलिखितम् संख्यान् कोष्ठकात् प्रदत्त उचितविकल्पं चित्वा संस्कृतेन लिखत। $1 \times 5 = 5$

(नीचे लिखी संख्याओं को कोष्ठक से उचित विकल्प चुनकर संस्कृत में लिखिए।)

(क) 98 = ... (अष्टनवतिः/नवशीतिः)

(ख) 60 = ... (एकषष्टिः/षष्टिः)

(ग) 55 = ... (पञ्चपञ्चादश/पञ्चपञ्चाशत्)

(घ) 48 = ... (अष्ट चत्वारिंशत्/अष्टचत्वारिंशत्)

(ङ) 32 = ... (द्वित्रिंशत्/त्रिविंशतिः)

7. निम्नलिखितवाक्येषु रिक्तस्थानपूर्तिम् कोष्ठकप्रदत्तेन उचितरूपेण कुरुत। $1 \times 5 = 5$

(निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक में दिए गए उचित विभक्ति रूप से कीजिए।)

(क) मृग : ..... बिभेति। (सिंहात्/सिंहेन)

(ख) ..... स्वस्ति। (नरेभ्यः/नरान्)

(ग) इदम् भोजनम् ..... अलम्। (मह्यम्/मया)

(घ) ..... बहिः निरीक्षकः तिष्ठति। (कक्षायाः/कक्षाम्)

(ङ) धनिकः ..... कुप्यति। (सेवके/सेवाकाय)

8. निम्नलिखितेषु पदेषु प्रकृतिप्रत्ययोः विभागं संयोजनं वा कुरुत। सहायतया पदद्वयम् कोष्ठके दत्तम्। $1 \times 5 = 5$

(निम्नलिखित शब्दों में प्रकृति-प्रत्ययों को अलग अथवा संयुक्त कीजिए। सहायतार्थ कोष्ठक में दो पद दिए गए हैं।)

(क) अव + √तृ + ल्यप् = ... (अवतीर्य/अवतृय)

(ख) वक्तव्य = √..... + ... (वच + तव्यत्/वक्ता + तव्यत्)

(ग) √नम् + तुमुन् प्रत्यय = ... (नञ्तुम्/नन्तुम्)

(घ) लेखनीया = √..... + ... (लेख् + अनीयर्/लिख् + अनीयर्)

(ङ) √गम् + क्त्वा = ... (गम्क्त्वा/गत्वा)

9. स्थूलपदानि शुद्धं कृत्वा वाक्यनि पुनः लिखत। 1 × 5 = 5

(स्थूल पदों को शुद्ध कर वाक्यों को पुनः लिखिए।)

(क) सः **पत्रान्** पठति। .....

(ख) अश्ववारः **अश्वेन** पतति। .....

(ग) किम् **त्वाम्** भ्रमणम् रोचते? .....

(घ) एतत् **कः** अस्ति? .....

(ङ) अहम् **गुरुणा** नमामि। .....

10. अधोप्रदत्तान् चित्रम् दृष्ट्वा पञ्चसंस्कृतवाक्येषु तम् वर्णयत। सहायतार्थं मञ्जूषा प्रदत्ता अस्ति। 1 × 5 = 5

(नीचे दिए गए चित्र को देखकर संस्कृत के पाँच वाक्यों में वर्णन करें। सहायता के लिए मंजूषा दी गई है।)

मेट्रोरेलयानम्, नराः, नार्यः, मेट्रोरेलस्थानकम्, भूमेः, अधः, अपि आवागमनम्, कुर्वन्ति

.....

.....

.....

.....

.....